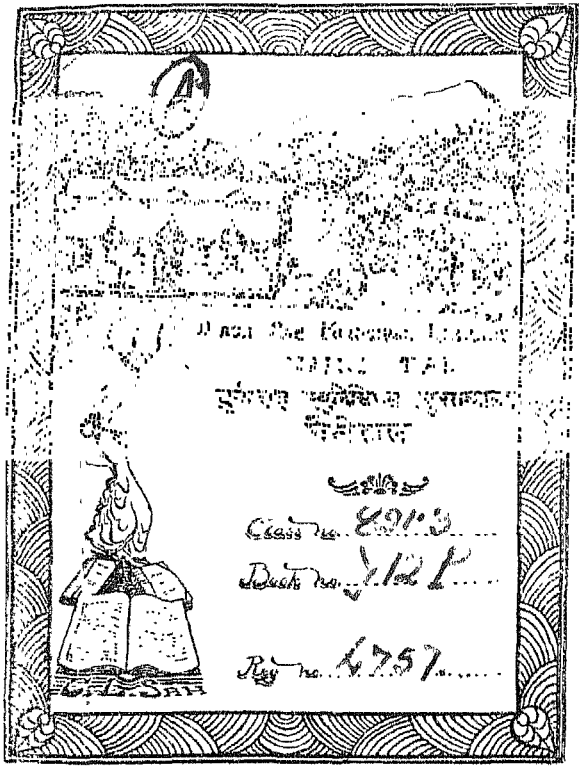

Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल

Class no. 891.3
Book no. [illegible]
Reg no. 4757

पथ की वंशी

प्रस्तुत उपन्यास 'पथ की वंशी' में एक युवक कलाकार के संघर्ष की कहानी प्रस्तुत की गई है।

आज के अधूरे कलाकार अपने को महान् मानकर लोगों से बहुत इज्जत और सम्मान की आशा करते हैं और उनकी पूर्ति के अभाव में बौखला कर वे युग, समाज और वर्ग को बुरा-भला कहकर कोसना शुरू कर देते हैं। परन्तु दरअसल उनका वह मानस, जो कला का वासस्थल है, कितना ओछा और कलुषित होता है ! मिट्टी के उत्तरदायित्व से दूर अपने कल्पना के संसार में रहकर दूर से ही दुनिया को निहारकर वे अपनी कामना पूरी कर लेना चाहते हैं।

'पथ की वंशी' का मुख्य पात्र अनाम उन्हीं तथाकथित कलाकारों का जीता-जागता प्रतिनिधि है। अपने प्रेम और झूठी प्रतिष्ठा के पीछे वह अपने पर आश्रित परिवार को भुलाकर वैयक्तिक सुख-भोग की तृप्ति के लिए लज्जास्पद अभिनय करता है। परन्तु वास्तविकता एक दिन उसकी आंखें खोल देती है और वह फिर अपने आप को अपने परिवार के लिए समर्पित कर देता है।

नायिका इन्दु भी एक कलाकार है, और कुछ कला-प्रेमियों के चक्कर में आकर बुरे परिणाम को प्राप्त होती है।

उपन्यास के अन्य पात्र तथाकथित कला-प्रेमी भौंड़े तथा घिनौने होते हुए भी सजीव हैं।

कटु यथार्थता का पुट लिए उपन्यास की कथा में यह सब कुछ एक वास्तविक सौन्दर्य बनकर उभरता है।

पथ की वंशी

एक कलाकार के संघर्षमय जीवन पर
आधारित उपन्यास

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

मूल्य : दो रुपये पचीस नये पैसे
प्रथम संस्करण : अक्तूबर, १९५९
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

मैं इतना ही कहूंगा

यह लघु उपन्यास है।

इसमें मैंने आधुनिक सभ्य समाज के नवीन सम्बन्धों और बदलते हुए मानदण्डों का एक सीमित मर्यादा में चित्रण किया है। इसमें एक ऐसे कलाकार युवक की कहानी है जो लंगड़ा है, हीनभावना से पीड़ित है, प्यार से उपेक्षित है। वह अपने लिए सुन्दर उपवन का निर्माण करता है पर यह पूंजीवादी युग उसे चैन की सांस भी नहीं लेने देता। तब उसके जीवन की प्रत्येक सांस विषैली हो जाती है। फिर भी वह महान् बनना चाहता है। अपनी हीनता को वह महानता के विराट् में सदा-सदा के लिए फेंक देना चाहता है। इसके लिए वह अपने परिवार, कर्तव्य और अपने आपके प्रति भी उदासीन हो जाता है लेकिन उसके मन की कामना का चरमबिन्दु आज के संक्राति-काल में धुंधला-धुंधला-सा दीखता है और अंत में उसे 'लोक-सत्य' का सहारा लेना पड़ता है; अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्व को संभालना पड़ता है।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

१

उसके सामने एक कापी पड़ी थी और कापी के पास एक दवात, जिसकी स्याही सूख गई थी, जैसे कई दिनों से इसका उपयोग नहीं हुआ है और यह केवल मेज की शोभा के लिए ही रखी हुई है। दो-चार हिन्दी की पुस्तकें और दो-चार अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास, बेतरतीब पड़े हुए थे। भूरे रंग के टेबल-क्लॉथ पर कहीं-कहीं हल्के स्याही के छोटे-छोटे धब्बे थे, जो नये नहीं जान पड़ते थे।

कुछ देर वह बहुत जिम्मेदार राजनीतिक नेता की तरह गम्भीर मुद्रा बनाकर सामने पड़े कागज पर आधुनिक प्रयोगवादी चित्रकारी का नमूना बनाने लगा।··· उसका शीर्षक दिया उसने—आलिंगन! फिर उसके होंठों पर सूखी मुस्कान थिरक उठी, मानो वह अपने आपसे कह रहा हो, 'वह भी कैसा आदमी है।'

फिर उसने अपने सिर को हथेली के सहारे टिका दिया और लिखने लगा, जीवन = शून्य। आगे उसने लिखा नहीं।

वह कुछ देर तक विचारमग्न बैठा रहा। फिर उसकी कलम स्वतः ही चली।

जीवन + पैसा = आनंद!

जीवन ÷ पैसा = समझदारी से जीवन यापन!

जीवन × पैसा = विलासमय जीवन!

जीवन − पैसा = दुःख, चरम दुःख औरनी रसता।

और फिर उसने उन सबको काटकर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा, 'इन्दु!'

इन्दु के साथ उसके मानस-पटल पर एक युवती का चित्र उभर आया जो किसी प्राइवेट स्कूल में अध्यापिका थी और जो आजकल उसके आकर्षण की बिन्दु थी। उसने खिड़की की राह अनंत नीलिमा को देखा और फिर मन ही मन कुछ बड़बड़ाता हुआ अपनी बैसाखी लेकर उठ खड़ा हुआ। लाल सीमेंट के फर्श पर उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' उसके मन की व्यथा को साकार करती हुई उस सूने कमरे में गूंज उठी। 'खट्-खट्' उस भाग्यहीन मनुष्य के जीवन की दुखभरी वह ध्वनि थी जो उसके अन्तराल की गह्वर परतों में प्रतिध्वनियों की भांति टकरा-टकराकर उसे पीड़ा पहुंचा रही थी। वह उदास-सा खिड़की का सम्बल लेकर खड़ा हो गया। क्षणभर के लिए वह इतना गम्भीर हो गया कि उसकी भृकुटियां स्पष्ट तनी हुई जान पड़ीं, फिर उसके चेहरे पर व्यथा के गहरे काले बादल छा गए। उसका मुख क्षण भर में एकदम पीला-पीला-सा जान पड़ा। उसने खिड़की के झूमते हैंडलूम के बने आकर्षक पीले पर्दों को अपने दोनों हाथों से पकड़ा और बड़बड़ाया, 'तैमूरलंग!'

आज नीरोज रेस्त्रां में नवोदित लेखक ने अनाम को तैमूरलंग कह दिया। अनाम ने उस लेखक की जिसका नाम 'निर्वाण' था, एक कहानी की कटु आलोचना किसी पत्र में छद्म नाम से लिख दी थी। वह आलोचना इतनी द्वेषभरी और पक्षपातपूर्ण थी कि 'निर्वाण' बात ही बात में बहुत नीचे स्तर पर उतर आया और उसने अनाम को एक वाहियात चित्रकार बताते हुए 'तैमूरलंग' कह दिया। उस समय अनाम हंसता रहा ताकि रेस्त्रां के बुद्धिजीवियों की उपस्थिति यह अनुभव न करे कि उसने इसे बुरा माना है लेकिन बाद में इस शब्द ने उसको मर्मांतिक पीड़ा पहुंचाई और वह अब तक उसी तरह परेशान है।

'अनाम बाबू!' किसी लड़की का मृदुस्वर सुनाई पड़ा।

अनाम ने देखा—वरदा हाथ में चाय की प्याली लिए खड़ी है। अनाम

कृत्रिम मुस्कान होंठों पर लाता हुआ बोला, 'चली आओ, वहां क्यों खड़ी हो ?'

'आज आपका मूड अच्छा नहीं है न, इसलिए मैंने सोचा कि आपसे आज्ञा ले लूं। देखो न, खिड़की का पर्दा कितना खराब हो गया है।' और सचमुच अनाम ने देखा कि मुट्ठी में पर्दे के छोर के आ जाने से उसमें काफी सलवटें पड़ गई हैं। वह पर्दा भीगे कपड़े को फूहड़ता से निचोड़ा हुआ-सा जान पड़ता है। उसने वरदा के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह बैसाखी के सहारे मेज़ के पास बिछे पलंग पर आकर बैठ गया और चाय की चुस्कियां लेने लगा।

वरदा उसकी ओर बिना देखे हुए उसकी पुस्तकों को उठाकर अलमारी में रखने लगी। एकाएक वरदा ने पूछा, 'अनाम बाबू, मनुष्य उदास क्यों हो जाता है ?'

'जब तुम उदास हो, तब उत्तर ढूंढ़ लेना।'

वरदा ने मौन धारण कर लिया और अनाम पलंग पर लेटकर सुप्रसिद्ध चित्रकार विन्सेण्ट वानगाग के जीवन पर आधारित उपन्यास 'लस्ट फॉर लाइफ' पढ़ने लगा। कुछ देर तक दोनों एक दूसरे से नहीं बोले। फिर वरदा प्याला लेकर चली गई। उसके जाते ही अनाम ने करवट लेते हुए कहा, 'बेचारी !'

वरदा—एक निम्न मध्य वर्ग की कुंवारी बंगालिन कन्या ! काली जैसे भैंस का चर्म और कुछ मोटी भी। इतने छोटे-छोटे पांव, चीनियों की तरह, जैसे वरदा के मां-बाप ने भी उसे जन्मते ही लोहे के जूते पहना दिए हों। आंखें बड़ी-बड़ी, गहरी और काली। बाल श्यामल घटाओं की तरह घने और काले और उसकी कमर के नीचे तक फैले हुए। आठवीं में पढ़ती थी। उम्र चौदह-पन्द्रह, पर शरीर का फैलाव पूर्ण युवती का-सा विवाह के योग्य।

अनाम के नीचे के दो कमरों के फ्लैट में वह रहती थी। बाप सरकारी आफिस में हेड क्लर्क ! तीन छोटी बहिनें और एक छोटा भाई। घर-गृहस्थी का संचालन मां के हाथ में।

अनाम इस परिवार का एक अभिन्न सदस्य-सा हो गया। वरदा का बाप चित्रकारों का सम्मान करता है और उनसे मित्रता बनाए रखने में गौरव का अनुभव करता है। कालेज में वह भी चित्रकारी का शौक रखता था।

अनाम को वरदा चाहती थी, इसे अनाम भी जानता था। कभी-कभी वह वरदा के बारे में सोचा भी करता था। सोचता-सोचता वह इतना क्रूर हो जाता था कि वरदा के हृदय को निर्दयी आवारा प्रेमी की तरह छलकर तोड़ देना चाहता था। ऐसा विचार उसके मन में यदाकदा आया करता था। या तो वह अधिक उद्विग्न होता था या अधिक प्रसन्न---रोमांटिक मूड में।

अनाम अभी तक पलंग पर वैसे ही सोया हुआ था। उसकी आंखें पुस्तक पर जमी हुई थीं कि वरदा ने उसके कमरे में पुनः प्रवेश किया। इस बार वरदा ने शांति निकेतन की साड़ी पहन रखी थी और चेहरे पर पाउडर मल-कर उसने अपने हाथों और चेहरे के रंग में काफी फर्क डाल लिया था।

'अनाम बाबू !'

'क्या है ?' अनाम ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा।

'सिनेमा नहीं चलेंगे ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'मुझे किसी काम से कहीं और और जाना है।'

'क्या आप उस काम को आज के लिए टाल नहीं सकते ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'बहुत आवश्यक है।'

अभी तक अनाम ने वरदा की ओर नहीं देखा था। यह उपेक्षा वरदा को बुरी लग रही थी। यह व्यवहार अशिष्टता का भी सूचक है, ऐसा वरदा ने मन ही मन सोचा और वह कुछ अवश-सी बोली, 'फिर आपने चलने की प्रतिज्ञा क्यों की थी ?'

'प्रतिज्ञा को तोड़ा भी जा सकता है।'

अभिजात वर्ग की सजी-सजाई महिला की प्रदर्शन-भावना लिए वरदा चाहती थी कि अनाम उसे देखे, पल भर के लिए देखे ताकि वह गर्व करे, अपने मन को तुष्ट करे, पर अनाम द्वारा निरन्तर उपेक्षा पाकर उसका अहंकार तड़प उठा। वह तनिक रोष में बोली, 'तुम्हारे वचनों का क्या मोल ? तुम दूसरों की इच्छा को इच्छा नहीं समझते, इतना दम्भ अच्छा नहीं···।'

अनाम तुरन्त पलंग पर बैठ गया। उसने वरदा की ओर देखा। नजरें चार हुईं। दोनों ने अनिमेष दृष्टि से कुछ क्षण के लिए एक दूसरे को देखा। वरदा अपनी धोती का पल्लू अपनी अंगुली के चारों ओर लिपटाने लगी और अनाम के चेहरे पर समझौतासूचक हंसी नाच उठी। वह शांत स्वर में बोला, 'मुझे मेरे एक मित्र के घर जाना है, उसकी पत्नी अस्वस्थ है। वरदा ! वहां नहीं जाऊंगा तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।'

वरदा के नेत्र भर आए। वह आंखों को पोंछती हुई कोमल स्वर में बोली, 'अनाम बाबू, आप अपने मित्र के पास अवश्य जाइए लेकिन इन्दु दीदी के यहां नहीं। यह इन्दु दीदी मुझे अच्छी नहीं लगती···।'

और वह हवा की तरह से बाहर चली गई।

उसके जाने के बाद अनाम नारी की स्वाभाविक ईर्ष्या को देखकर गंभीर हो गया। फिर वह वरदा के अधिकारपूर्ण वाक्य को लेकर कई बार सोचता-विचारता रहा और बाद में उसने निर्णय निकाला कि वरदा उसे प्रेम करती

है, वह उसपर अपना कुछ अधिकार समझती है तभी वह उसे ऐसी आज्ञा दे सकती है। तभी वह उससे ऐसा हठ कर सकती है।

पांच बज चुके थे।

मई की उष्णता और जयपुर की घटिया किस्म की गर्मी। न चाहते हुए भी उसने नई पोशाक पहनी। कुर्ता और पायजामा। पावों में जोधपुर की हल्की जूती। जेब में कैलिको मिल का रंगीला रूमाल।

मेज़ की दराज़ में से उसने एक बटुआ निकाला। बटुए का रंग काला था और वह किसी फर्म की भेंट थी और तभी सेठ भंवर की हवेली का नक्शा उसके मस्तिष्क में घूम गया। उसने तुरन्त अपने कमरे की खिड़कियां बन्द कीं और पंखे का स्वीच ऑफ किया और चल पड़ा।

सीढ़ियों के बीच वरदा मिल गई। उसकी आंखों में करुणा और शिकायत दोनों थीं। अनाम ने अर्थभरी दृष्टि से उसे देखा। उसके भावों को समझती हुई वरदा बोली, 'आपकी विवशता मैं जानती हूं अनाम बाबू, लेकिन यदि आप साथ होते तो हमें बड़ा आनंद आता। मां भी यही चाहती थी। सम्भव हो सके तो आने का कष्ट करिएगा, हम प्रेम प्रकाश में जा रहे हैं हिन्दी फिल्म देखने।'

अनाम कुछ कहे, इसके पहले वह पुनः बोली, 'आप बस में जाएंगे या तांगे में।'

'जो मिल जाएगा, उसीमें चला जाऊंगा।'

'बस जब रुक जाए, तब उसमें बैठिएगा।' वरदा की करुणा भरी दृष्टि अनाम के झूलते हुए पांव पर जम गई।

अनाम उस दृष्टि को नहीं सह सका। उसके मन में हजारों बिच्छुओं के डंक की पीड़ा का संचरण हो उठा। उसने आवेश में तुरन्त सोचा कि क्या वह यह कहना चाहती थी कि आप लंगड़े हैं, उतावली में गिर जाएंगे। ···ओह! दया कर रही है। उसके प्रशस्त ललाट पर श्वेत कण उभर आए।

उसका निचला होंठ ऊपर के दो अग्र दांत से दब गया। भंगिमा में कुछ कठोरता और भयानकता प्रतीत हुई। वरदा स्थिरता से सहम गई और कुछ उसकी आन्तरिक भावना को समझती हुई वह शीघ्रता से चली गई।

उसके जाते ही अनाम ने अपने आपको संभाला। अपने आवेश और रोष पर काबू किया। रूमाल से चेहरा पोंछा और चल पड़ा। बैसाखी की 'खट्-खट्' उसे अपने हृदय पर पड़ रही हथौड़े की चोटें-सी प्रतीत हुई।

घर से बाहर निकलकर उसने साधारण व्यक्ति की चाल से अधिक तेजी से चलना शुरू किया जैसे वह सोच रहा हो कि खिड़की में खड़ी वह काली-कलूटी वरदा उसके बारे में सोच ले कि वह कितना तेज चल सकता है ? हालांकि 'बस स्टापेज' तक उसने पीछे मुड़कर देखा भी नहीं, फिर भी वह कल्पना में साहसी पुरुषों की भांति ऐसा विचार रहा था कि वरदा उसे खिड़की की राह देख रही है। इसलिए वह बस में सबसे पहले लपककर चढ़ा। इससे अनाम की आत्मा को बड़ा संतोष हुआ।

बस में भीड़ थी। सीटें खचाखच भरी थीं। अपनी बैसाखी को बगल में दबाता हुआ वह एक सीट को पकड़कर खड़ा हो गया। अचानक सीट पर बैठे हुए महाशय की दृष्टि अनाम पर पड़ी। वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। उसने अनाम को कहा, 'बैठिए।'

'नहीं-नहीं, आप बैठिए न ?' अनाम ने उन्हें रोका।

'नहीं साहब, मैं खड़ा हो जाऊंगा। आपको तकलीफ होगी।' उसके मुख पर करुणा के भाव थे।

अनाम विवश होकर बैठ गया। उस समय उसका चेहरा विशेष परिस्थितिजनित किए गए अपराध द्वारा दंडित शरीफ व्यक्ति की भांति पीला और संकोच से झुक गया था।

२

प्रसिद्ध 'नीरोज' रेस्त्रां में अभी पूर्ण शांति थी। संध्या-वेला में जो हल्का कोलाहल और सिगरेट के धुएं की घुटन उत्पन्न हो जाती है वह अभी तक नहीं हुई थी। वहां की उपस्थिति सहजता से गिनी जा सकती थी। एक, दो, तीन, चार···अनाम ने मन ही मन उसे गिना भी और फिर उसने मैनेजर से समय पूछा। उत्तर सुनकर उसने मन ही मन सोचा, अभी अभिजात वर्ग की युगल जोड़ियों की भीड़ लग जाएगी और मैं इन्दु से जमकर बातचीत नहीं कर सकूंगा।···अब इन्दु को आ जाना चाहिए। हर पल उसके लिए युग-सा बन गया। उसके हृदय की प्रतीक्षाजनित आकुलता नेत्रों में चमक उठी। वह बैठा-बैठा चाय पीने लगा।

इन्दु आई। उसके मुख पर उल्लास नाच उठा। अधरों पर मुस्कान लाता हुआ वह बोला, 'तुमने बड़ी देर कर दी, मैंने तुम्हारे आने की आशा ही छोड़ दी थी।'

'मैं वायदे की पक्की हूं और तुम्हें एक खुशखबरी सुनाना चाहती हूं। सुनोगे तो बहुत खुश होओगे।'

'क्या ?'

'वह कहानी छप गई है।'

'कौन-सी ?'

'द्रौपदी का करुण विलाप !'

अनाम ने प्यार भरी दृष्टि से इन्दु के मुख पर खेलती उत्साह की रेखाओं को देखा। इन्दु को हार्दिक प्रसन्नता है। 'धर्मयुग' में कहानी का छपना उसके जीवन की बहुत बड़ी सफलता है।

'ऐसे क्यों देख रहे हो ?'

'देख रहा हूं कि तुम्हें कहानी के छपने की कितनी खुशी है ?···क्या

तुम्हारी सहेलियों ने उसे पसन्द किया है ?'

'दो-तीन सहेलियां इस बीच आ गई थीं, उन्होंने इसे खूब पसन्द किया। लेकिन मुझे तुमसे थोड़ी-सी शिकायत है।' उसके स्वर में अन्दाज भर आया। अनाम ने जान-बूझकर अपनी मुद्रा को गम्भीर बनाने की चेष्टा की। उसने चाय बनाकर इन्दु के आगे रख दी।

चाय का घूंट लेकर इन्दु प्याले पर अपनी दृष्टि जमाकर बोली, 'मैंने अपनी लिखी कहानी पढ़ी, पढ़कर आश्चर्य हुआ, तुमने उसे इतना क्यों बदल दिया ? उस कहानी पर तुम्हारी चित्रकारी का प्रभाव स्पष्टत: बोलता है। तुम्हारे मित्र तुरन्त जान जाएंगे कि यह कहानी इन्दु की नहीं, अनाम की लिखी हुई है और फिर वे मुझे और तुम्हें लेकर न जाने क्या-क्या सोचेंगे।'

'क्या-क्या सोचेंगे ?' अनाम के सूखे हृदय में प्यार का झरना-सा फूट पड़ा। दृष्टि में चुहलबाजी उतर आई।

'बस !' उसने कृत्रिम रोष से बात खत्म करने की आज्ञा दी। दोनों कुछ देर तक शांत रहे जैसे दोनों पत्थर या मिट्टी के बने खिलौने हों जो सजावट के तौर पर लगा दिए गए हों। दोनों ने चाय तक पीनी बन्द कर रखी थी।

अचानक इन्दु बोली, 'तुम्हारे मित्र वकील साहब नहीं आए ?'

'बस आते ही होंगे।'

'उनका स्वभाव कैसा है ?'

'वैसे वे बहुत अच्छे आदमी हैं किन्तु कंजूस हैं। हृदय के पत्थर और एकदम नीरस।'

'फिर ऐसे आदमी से मिलने से क्या लाभ ?'

'उनकी यहां के बड़े-बड़े सेठों में पहुंच है। यदि उन्हें हम राजी करने में सफल हो गए, तो तुम्हारा पहला कहानी-संग्रह छपा ही समझो।'

इन्दु ने भावावेश में अनाम का हाथ दबा लिया। कोमल स्वर में अपने

चेहरे को चमकते ऐशट्रे में देखती हुई बोली, 'तुमने मेरे जीवन को बदल दिया। क्या थी, क्या बना दिया ? मैं प्रायः सोचा करती थी कि मैं एक ऐसी स्त्री बनूं जिसकी इस समाज और इस समाज के बाहर प्रतिष्ठित नागरिकों और बुद्धिजीवियों में सम्मान हो। लोग मुझे आदर की दृष्टि से देखें और अब मुझे विश्वास हो रहा है कि मेरी इच्छा अवश्य पूरी होगी।'

अनाम ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया, 'मैं अपनी ओर से तुम्हें सब तरह की मदद दूंगा।'

'तुम्हारा ही यह प्रताप है कि मैं आज कुछ बन गई हूं।'

वकील दयाल आ गए। अनाम ने उसे देखते ही उठने का प्रयास किया। दयाल ने तुरन्त उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, 'बैठिए-बैठिए, तकल्लुफ की ज़रूरत नहीं, आपको उठने में कष्ट होगा।'

अनाम का मुंह उतर गया। वस्तुतः अपने पर प्रदर्शित किए गए दया के भाव उसे अच्छे नहीं लगते थे। दूसरों की दया उसके लिए असह्य हो उठती थी। उसने गहरा मौन धारण कर लिया।

दयाल निर्विकार भाव से मुस्करा रहा था। अनाम की गहरी मूकता का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसके कन्धे पर ज़ोर की थापी देकर बोला, 'अनाम, आपसे परिचय नहीं कराओगे ?'

'आप हैं इन्दु जी, यहां प्राइवेट स्कूल में टीचर हैं और हिन्दी की नवोदित तरुण लेखिका भी हैं। आपने इनकी कहानियां पढ़ी होंगी।'

दयाल ने कुटिलता से मुस्कराकर कहा, 'वैसे मैं कहानियां नहीं पढ़ता, पढ़ने का प्रश्न ही नहीं उठता, फुर्सत ही नहीं मिलती लेकिन आज मैंने इनकी एक कहानी 'धर्मयुग' में पढ़ी। द्रौपदी का करुण विलाप! प्राचीन कथानक को आज की समस्याओं में घटित करना बहुत कठिन है। मैं उसे कला का एक सुन्दर नमूना मानता हूं।'

'क्या आपको मेरी कहानी पसंद आई ?' इन्दु ने अपनी झुकी हुई दृष्टि

तनिक उठाकर पूछा।

'पसंद, अजी बहुत ! आधुनिक द्रौपदी की दशा और उसका चित्रण पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली कि मुझे अब हिन्दी की कहानियां और उपन्यास पढ़ने चाहिएं। लेकिन मैं जानता हूं कि यह सोचकर भी मैं कुछ नहीं पढ़ पाऊंगा। अपने धंधे से मुझे फुर्सत नहीं। मैं एक पल के लिए भी मुक्त नहीं हूं।'

इधर इन्दु की आंखों में गर्व चमक उठा। अनाम ने अब चुप रहना उचित नहीं समझा। दयाल की मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा इन्दु पर प्रभाव करती जा रही थी।

'वकील साहब, इनका कमाल तो कहानी को मोड़ देने में है। महाभारत की द्रौपदी हर पति को सम्पूर्ण नारीत्व के साथ महासमर्पण किया करती थी और इनकी द्रौपदी विवशता और भय से अपने आपको उन पांच लोलुप भेड़ियों को सौंप दिया करती थी। ये भेड़िए अपने भोग-विलास की तृप्ति के साधन के रूप से उस अर्थ-पीड़ित नारी का उपयोग करते थे। यह जीवन की कितनी भयानक ट्रेजडी है।' उसने बैरे पर दृष्टि जमाकर कहा, 'आप तो काफी पीते हैं न वकील साहब ?'

'केवल काफी नहीं अनाम, काफी के साथ कुछ खाने को भी चाहिए।'

'वह भी मिलेगा।'

तभी रेस्त्रां में दो एंग्लो-इण्डियन युवतियों ने प्रवेश किया। वे गोरी दुबली-पतली युवतियां अंग्रेज़ी में बोलती हुई सभी कुर्सियों पर नज़र फेंकती हुई एक कोने की मेज़ पर जाकर बैठ गईं।

इन्दु ने तपाक से कहा, 'इस बार मैं एंग्लो इंडियन समाज पर लिखना चाहती हूं। इनके जीवन और मन में बड़ी ग्रंथियां हैं। नियमित रूप से ईसा प्रभु के चरणों में गिरकर अपने अपराधों के लिए क्षमायाचना करना और उसी गति से अपने निजी अपराधों में वृद्धि करना, ये दो विरोधी बातें हैं। वकील साहब, उस कहानी का आधार होगी मेरी सहेली—रिजन!'

'मैंने आपको कहा न, मैं साहित्य के मामले में उतना ही जानकार हूं जितना एक साधारण पाठक । केवल अच्छा या बुरा बता सकता हूं। हां, माडर्न आर्ट में अनाम की धूम है। उसकी शैली की विशिष्टता और बौद्धिक चमत्कार द्वारा इन्होंने कम से कम कइयों का हृदय जीत लिया है। विशेषतः प्रयोगवादी-प्रभावशाली चित्रकारों का।'

अनाम को इन्दु के समक्ष की गई अपनी यह प्रशंसा रुचिकर लगी।

वकील साहब ने काफी का लम्बा घूंट लेकर कहा, 'अब मैं मुद्दे की बात पर आना चाहता हूं। अनाम, तुम्हारी क्या योजना है?'

'योजना है, एक प्रकाशन-संस्था खोलने की।'

'यह बेकार का धंधा है।' दयाल ने स्पष्टता से कहा, 'यह व्यापार बिलकुल घाटे का है। भाई अनाम, कोई ऐसी योजना बनाओ, जिससे लोहा भी सोना हो जाए।'

'जीवन में केवल सोना बनाने का दृष्टिकोण कहां तक ठीक है वकील साहब, आपकी ज़रा-सी कृपा से हमें बड़ा सहारा मिलेगा विशेषतः मैं इन्दु जी का एक कहानी-संग्रह छपवाना चाहता हूं।···मुझे विश्वास भी है, इनकी कहानियां लोग बहुत पसंद करेंगे।'

दयाल प्रश्नवाचक दृष्टि से कभी इन्दु को और कभी अनाम को देखता रहा। उसकी पैनी दृष्टि जो दूसरों के अन्तस् के सत्य को सहजता से पहचान लेती थी, तुरन्त ताड़ गई कि अनाम इन्दु से प्यार करने लगा है और वह इन्दु के लिए बड़ी से बड़ी रिस्क उठा सकता है।

'मैं वकील हूं, वकील भी कैसा जिसके स्वभाव को तुम रत्ती-रत्ती भर पहचानते हो, महाकंजूस, अविश्वासी और सदा चौकन्ना रहने वाला। मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे चाहिए अपना लाभ! मुझे लाभ का तारा आकाश में भी दीख जाए तो मैं वहां पहुंचने को नहीं चूकूंगा।'

'दयाल जी!' अनाम तनिक आवेश में आ गया। उसे दयाल का यह

व्यवहार ज़रा भी रुचिकर नहीं लगा। इन्दु के सामने उसे अपमानित करने का उसका क्या उद्देश्य हो सकता है ? वह समझ नहीं सका।

अनाम ने कहा, 'फिर मैं कोई अन्य उपाय ढूंढ़ूंगा। मुझे इन्दु जी का कहानी-संग्रह छपवाना ही है। आप नहीं जानते, बुद्धि को समुचित विकास और प्रोत्साहन न मिलने से वह कुंठित हो जाती है।'

दयाल लापरवाही से उठ गया, 'थैंक्यू अनाम! ···और देखिए इन्दु जी, आप बुरा न मानें, मैं रुपया अपनी तिजोरी से निकाल नहीं सकता हूं। रुपया मेरी आत्मा है, परमात्मा है। सच कहूं, परमात्मा से भी बढ़-कर है।'

दयाल इस तरह चला गया जैसे उसने यहां आकर अपना समय ही खराब किया।

इन्दु ने घृणा से मुंह बिचकाकर कहा, 'आपके बहुत अच्छे मित्र हैं! मैं कहती हूं कि ऐसे मित्रों से मित्रता रखना क्या ज़रूरी है ?'

अनाम ने करुण स्वर में कहा, 'प्राणी का मूल्यांकन परीक्षा से ही होता है। लेकिन तुम चिंता न करो, मैं सब ठीक कर लूंगा।'''सब ठीक कर लूंगा। चलो। यदि यह चाहता तो अपना काम बनवा सकता था।'

इसके बाद वे दोनों बाहर निकले।

अनाम की बैसाखी का 'खट् खट्' उस कोलाहल में अपना पृथक् अस्तित्व रखती हुई सबको स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

३

दयाल के चरित्र के बारे में एक ही वाक्य कहना अधिक उचित होगा कि वह कटी हुई अंगुली पर पेशाब तक नहीं करता था। केवल धन-संग्रह और उसकी वृद्धि के अतिरिक्त उसके मन में दूसरी बात नहीं आती थी। तभी उसकी वकालत नाममात्र, और लेन-देन का व्यापार अधिक चलता था।

एक गरीब बनिया परिवार में उसका जन्म हुआ था। तीव्र बुद्धि होने के कारण उसका विवाह अठारह वर्ष की उम्र में ही हो गया। पत्नी दहेज में तीस हजार रुपये लेकर आई। दयाल ने उन रुपयों को बड़ी सुरक्षा के साथ रख दिया और पढ़ाई में तन्मय हो गया। ला की परीक्षा पास करते-करते उसके मां-बाप का देहान्त हो गया। प्रैक्टिस प्रारंभ करते ही उसकी बीवी को क्षय का रोग हो गया। डाक्टरों ने उसे कहा, इसे किसी पहाड़ पर ले जाइए। किंतु दयाल अधिक खर्चे से डर गया और उसने अपनी पत्नी का वहीं पर इलाज कराना शुरू किया। इन्कम टैक्स की प्रैक्टिस उसकी खूब चली। वह रात-दिन अपने कार्य में व्यस्त रहता था। दो-दो, तीन-तीन दिन तक वह घर नहीं आता था और उसकी पत्नी नेत्रों में आकुलता लिए दयाल की बाट जोहती रहती थी। दयाल आता और बड़ी रुखाई से उसके बालों पर हाथ फेरकर उसकी तबियत के बारे में पूछता। उपचार के बारे में सच्चे-झूठे कई प्रश्न करता और फिर कहता, 'मैं लखपति हो गया हूं।'

उसकी रुग्ण बीवी दबी आवाज में कहती, 'आप यह मकान बदल लीजिए, यहां जगह की बड़ी तंगी है।'

'नहीं विद्या, राजधानी होने के बाद जयपुर में मकान की बड़ी दिक्कत हो गई है। अच्छा मकान ढूंढ़े नहीं मिलता, फिर भी मैं खोज रहा हूं।'

'लेकिन यहां मेरा दम घुटता है।' विद्या की आंखों में मौत की छायाएं नाच उठती थीं।

'कैसी बातें करती हो तुम, मुझे ऐसा जरा भी नहीं लगता। मैं भी यहीं रहता हूं। यहां सूरज की धूप और चंदा की चांदनी दोनों आती हैं।··· और डाक्टर कहता था कि अब तुम अच्छी हो रही हो।'

एक दिन विद्या ने दयाल से प्रार्थना की, 'यह नौकरानी बड़ी फूहड़ है, कोई दूसरी रख लो।'

'दूसरी कहां मिलती है?' वस्तुतः बात कुछ और ही थी। यह नौकरानी

जितनी सस्ती थी, उतनी सस्ती नौकरानी ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकती। फिर भला दयाल उसे कैसे निकालता ? वह अपनी पत्नी के लिए रद्दी से रद्दी फल लाया करता था। जब एक दिन विद्या ने रोष में कहा, तब उस निर्दयी ने अपनी आंखें मिचमिचाकर कहा, 'यह रोग आदमी का क्षय करके ही रहता है। व्यर्थ में रुपया बरबाद करने की क्या जरूरत है ?'

विद्या पर पहाड़ टूट पड़ा। उसने अपनी भयाक्रांत दीप्तिहीन आंखों से अपने पति की ओर देखा,'फिर मुझे यहां से चला ही जाना चाहिए। मेरा क्षय निश्चित है, फिर जीवन के प्रति सम्मोह कैसा ?' तब विद्या के चेहरे पर भयानक छायाएं डोल उठीं, 'तुम मुझे जहर देकर क्यों नहीं मार देते ? तुम मुझे व्यर्थ ही क्यों तड़पा रहे हो ? जाओ, तुम मुझे जहर लाकर दे दो।'

दयाल पत्थर की मूर्ति की तरह अचल खड़ा रहा।

'ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दें। यह रुपया कुछ काम नहीं आएगा।···आपको इतना धनलोलुप और हृदयहीन नहीं होना चाहिए।'

दयाल ने दुष्टता से विद्या की ओर देखकर कहा, 'अभी तुम्हें जीवन की गहराई का ज्ञान नहीं, पैसा कितने महत्व की चीज है, इसे मैं ही जान सकता हूं। फिर यह सरासर मूर्खता है कि हम उस वस्तु को बचाने के लिए अपने धन का अपव्यय करें जिसका विनाश निश्चित है।'

विद्या अपने पति का उत्तर सुनकर उन्मादित हो उठी, 'ओह ! यदि कोई मेरा कलेजा निकाल लेता तो भी मुझे इतनी पीड़ा नहीं होती, जितनी तुम्हारे इस वाक्य से हुई है। पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है ? तुम इतने बदल क्यों गए हो ?'

वह बिलकुल साधारण स्थिति में बोला, 'मुझे कुछ नहीं हुआ, मैं बिलकुल ठीक हूं। तुम्हें धैर्य रखना चाहिए और मेरी बात को समझने का प्रयास करना चाहिए। मैं झूठ नहीं बोलता। मैं पैसा न जाने क्यों खर्च

नहीं कर सकता।'

'क्या मैं मरूंगी।' उसने पूछा।

'नहीं-नहीं।'

'फिर तुम रुपया खर्च करके मुझे अच्छे हस्पताल में भर्ती करवा देते। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मैं अच्छी हो जाऊंगी। डाक्टर भी ऐसा ही कहता था।' उसने अपने समीप पड़ी चादर को अपनी दोनों मुठ्ठियों में भींच लिया जैसे वह जीवन को छोड़ना नहीं चाहती है।

शैतान की तरह उसकी पलंग के आगे चहलकदमी करता हुआ दयाल बोला, 'रुपया जीवन का सत्य है, ईश्वर है, सुख है, शांति है। उसका दुरुपयोग का फल बुरा है। मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता किंतु अब तुमपर पैसा खर्च करना भी व्यर्थ-सा है। हजारों रुपयों के इलाज के बाद भी तुम्हारे स्वास्थ्य में जरा भी अन्तर नहीं आया। मैं चाहता हूं कि अब तुम किसी देवता की मनौती मानो।' वह एक पल रुककर पुनः बोला, 'क्या तुम कुछ दिन के लिए पीहर नहीं जा सकती हो?'

विवश हो, विद्या अपने पीहर चली गई। उस दिन दयाल ने खीर बनाकर खाई। खीर खाता हुआ सोच रहा था, 'फीकी खीर का जायका भी बढ़िया होता है। आगे से मैं चीनी का प्रयोग ही बन्द कर दूंगा।' और उसकी आंखों में दुष्टता नाच उठी। वह अपनी पत्नी के पलंग पर हाथ फेर कर बड़बड़ा उठा, 'पत्नी ने मुझे यमराज माना, माना तो मानती रहे, पर मेरे तो तीन सौ रुपयों की बचत हो गई, यदि मैं इतनी कड़वी और कठोर बातें नहीं करता तो क्या वह मेरा घर छोड़कर जाती? कभी-कभी क्रूरता भी लाभदायक सिद्ध हो जाती है।'

और उसने नौकरानी को पुकारा। नौकरानी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। वह अपनी कमर पर दोनों हाथ लटकाकर तनिक उछल-उछल कर बोला, 'तुम्हारी कितने दिन की तनखा बाकी है?'

'दो माह की।'

'इस बीच तुमने क्या-क्या नुकसान किया ?'

'वकील साहब, इस बीच मेरे हाथ से सिर्फ एक कांच का गिलास टूटा।'

'सिर्फ एक ही ?'

'हां साहब !'

'आठ आने कम हो गए।'

'लेकिन सरकार कांच का गिलास छह आने में खुला बिकता है।'

'नया बिकता है, जानती हो, नया गिलास बेकार होता है। उसके चलने की कोई गारंटी नहीं। मेरा छह माह का पुराना गिलास था और यदि तू नहीं तोड़ती तो वह कभी नहीं टूटता।'

बेचारी नौकरानी चुप हो गई। दयाल ने अपनी सफाचट मूंछों पर अंगुलियों को नचाकर कहा, 'आज से मैं तुम्हें छुट्टी देता हूं। पन्द्रह रुपया माहवार मुझे बहुत लगता है। मैंने अपने पड़ोसी की नौकरानी से बात-चीत कर ली है, वह पांच रुपयों में घर की सफाई और बर्तन मलने को तैयार है।'

'पांच रुपयों में ही !' नौकरानी ने विस्मय से कहा।

'मेरे ख्याल में वह भी अधिक है। एक आदमी के बर्तन अधिक नहीं होते। दो पलक झपकाई कि उसका काम समाप्त।'

नौकरानी जलती हुई अपने रुपये लेकर चली गई।

कुछ दिनों में विद्या का भी देहान्त हो गया। दयाल ने उसके लिए आंसू बहाए, सच्चे या झूठे यह कोई नहीं जान सका। उसने उसके पीछे ग्यारह ब्राह्मण भी जिमाए। कुछ दान-धर्म भी किया लेकिन उसके जीवन की गति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया।

बाद में दयाल ने इन्कम टैक्स आफीसर से मिलकर और रुपये

कमाए। कुल मिलाकर उसके पास तीन लाख के करीब रुपये हो गए। उसने अपने व्यक्तिगत लाभ के पीछे राष्ट्र का भारी नुकसान किया। वह सेठ और आफीसर से मिलकर लाखों का मामला हजारों में तय करवा देता था।

अधिक रुपया आने के बाद उसका मन इस पेशे के प्रति ऊब-सा गया। नया इन्कम टैक्स आफीसर दयाल के हर मामले को बिगाड़ने का प्रयास करता था। निदान, दयाल एक वकील से एक अच्छा पठान हो गया। वह औरों को रुपया उधार देने लगा। पांच सौ का सात सौ लिखवाना, पांच-पांच रुपया सैकड़ा ब्याज लेना, हजार की चीज़ पर पांच सौ रुपया देना, यही था उसका धंधा! यही उसका व्यापार। फिर भी वह नियमित रूप से कुछ देर के लिए काला कोट पहनकर कचहरी जाता था।

इसीमें उसको महान संतोष और सुख था।

दयाल की मित्रता अनाम से भी विचित्र ढंग से हुई। अनाम को कुछ रुपयों की आवश्यकता थी, किसीने उसे बताया तो वह उसके पास गया। दयाल ने एक अपरिचित को निर्भयता से उधार मांगते देखकर उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसके व्यवसाय को पूछा। उत्तर पाकर वह बोला, 'आप चित्रकार हैं, वह भी कमर्शियल नहीं! क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपकी सालाना इन्कम कितनी है?'

'यही होगी, पन्द्रह सौ रुपया।'

'सिर्फ पन्द्रह सौ रुपया! और आप मुझसे इतनी बड़ी रकम अर्थात दो हजार रुपये मांगने आ गए!' उसका स्वर आश्चर्य में डूबा हुआ था।

'देखिए, मेरी बड़ी बहिन निर्मला का विवाह है, मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। मैं आपके पास बड़ी आशा लेकर आया हूं।' अनाम ने दीनता से कहा।

'भक्त की शब्दावली भगवान के सामने अच्छी लगेगी। मैं एक सूदखोर हूं, मेरा काम एक चिकित्सक से भी अधिक चतुराई का है। चिकित्सक

अपने प्रयोजन की चीज़ की ही जांच-पड़ताल करता है पर मुझे अपने 'मुव्वक्किल' के हर पहलू को देखना होता है।···मेरी यह पैनी दृष्टि मनुष्य के अन्तर्मन की प्रत्येक गतिविधि को तुरन्त भांप लेती है।'

'मुझे भंवर बाबू ने आपके बारे में बताया था। वे आपकी प्रशंसा करते थे। वे आपको हैल्पिक नेचर का बताते थे।'

'मेरी प्रशंसा मेरे हृदय में दया जगाने में सर्वथा असमर्थ रही है। मैं एक सूदखोर हूं, जिसका धर्म, सत्य और ईश्वर है—पैसा। हालांकि मैं ईश्वर की पूजा करता हूं। मेरी रसोई में, जिसे मैंने आजकल मंदिर बना दिया है, भगवान शिव का एक छोटा-सा लिंग है। हर रोज सवेरे मैं उसकी पूजा करता हूं ताकि मेरी आत्मा दुर्बल न हो।' वह कुछ देर रुका। उसकी दृष्टि अपने काले पुराने कोट पर जम गई जिसकी गर्दन पर तेल की चिकनाहट चमक रही थी।

'लेकिन मेरा काम आपको करना ही होगा।' अनाम ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा। फिर वह मैली चटाई को अपनी अंगुली से कुरेदने लगा।

'तीन हजार की जमानत दिला दो।'

'किसकी?'

'भंवर बाबू की। वे जमानत दे देंगे, मैं रुपया दे दूंगा।'

'वे अभी कष्ट में हैं। उन्हें आपसे भय है कि कहीं वक्त पर रुपया न पहुंचा तो आप उनपर तुरन्त नालिश कर देंगे। आप उनकी इज्जत धूल में मिला देंगे।'

दयाल अट्टहास कर उठा। उसकी जंगलियों जैसी भयानक हंसी ने अनाम को भयभीत कर दिया। वह नादान बालक की भांति दयाल को देखने लगा।

जब भंवर बाबू, जिनके पास लाखों रुपये हैं, तुम्हें नहीं दे सकते तब मैं

तुम्हें रुपया कैसे तोल सकता हूं।'

'लेकिन वे लेन-देन का व्यापार नहीं करते।'

'तुम भोले हो, पैसे वालों की अटकलबाजियों को नहीं जानते। वे तुम्हें रुपया नहीं देंगे। वे तुम्हारी जमानत नहीं देंगे। क्योंकि तुम एक गरीब चित्रकार हो जिसकी आय का कोई भरोसा नहीं। तुम नहीं जानते कि हर रुपया देने वाला आदमी अपनी आसामी की औकात देखता है। ''अनाम बाबू, कुछ गिरवी रखने को है?' और उसकी दृष्टि अनाम के चेहरे पर जम गई।

'कुछ नहीं। अधिक से अधिक मैं अपने आपको गिरवी रख सकता हूं। हां यदि आप मेरे कुछ चित्रों को रखना चाहें तो खुशी-खुशी रख सकते हैं।' उसकी वाणी में व्यथा लहरा उठी। आंखों में करुणा चमक उठी।

'इस तरह बात नहीं बनेगी। मैं पैसा, जिसे मैं अपनी आत्मा मानता हूं, ऐसे निकाल कर नहीं दे सकता। उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध होना ही चाहिए।'

'मैं आपके पांव पड़ता हूं।'

'यह अभिनय व्यर्थ ही जाएगा। मैं अपने रुपयों की जमानत चाहता हूं। वैसे तो साधारण पार्टी का मकान भी गिरवी नहीं रखता क्योंकि एक मकान की कीमत आज एक लाख हो सकती है। लेकिन कल उसका पचास हजार रुपया भी कोई देने को तैयार नहीं होता। इसके साथ यदि मैं उसे आज बेचना चाहूं तो वह तुरन्त नहीं बिकेगा। इसलिए मैं सोना चाहता हूं, जेवर चाहता हूं। सोना एक ऐसी धातु है, जो कहीं भी तुरन्त बिक सकती है।' वह एक क्षण चुप रहा, 'लेकिन कलाकार इन व्यापारियों से कुछ ईमानदार होते हैं। अतः मैं तुम्हें मकान पर भी रुपया दे सकता हूं बशर्ते मकान की कीमत पांच हजार हो।'

'मैंने आपसे कहा न, मेरे पास कुछ नहीं है।'

'फिर मुझे क्षमा करना, मैं आपकी कोई भी सेवा नहीं कर सकूंगा।'

अनाम का हृदय दयाल के प्रति घृणा से भर उठा। उसे यहां तक गुस्सा आया कि वह उसके मुंह पर थूक दे, पर वह इतना साहस नहीं कर सका। टूटा-टूटा-सा उठा और चल पड़ा। अभी वह दरवाजे तक पहुंचा ही नहीं था कि दयाल ने उसे फिर पुकारा, 'सुनो।'

अनाम के तन-मन से खुशी की लहर दौड़ गई।

'मैं तुम्हें पांच सौ रुपया दे सकता हूं किन्तु एक शर्त पर।'

अनाम बैसाखी को मजबूती से बगल में दबाकर जल्दी-जल्दी दयाल के पास आया। उतावली से बोला, 'मुझे आपकी हर संभव शर्त मंजूर है।'

'तुम्हारे जो भी चित्र बिकेंगे उन सबपर कापी राइट मेरा होगा, उन्हें मैं ही बेच सकूंगा। उसका सारा रुपया मैं लूंगा।'

'मुझे मंजूर है।'

'फिर कल आ जाना, मैं कागज बनवा कर रखूंगा, दस्तखत करके अपनी रकम ले जाना।' वह इस तरह बोल रहा था जैसे कोई उपेक्षा से बात कर रहा हो।

दूसरे दिन अनाम ने जब दयाल के घर में प्रवेश किया तब दयाल एक साधारण युवती को कर्ज दे रहा था। बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर दयाल भीतर से बोला, 'अनाम बाबू, वहीं पर रुक जाइए।'

अनाम एक टूटी-सी कुर्सी पर बैठ गया। कुर्सी की पीठ से लगी दीवार इतनी गन्दी थी कि अनाम को घृणा हो उठी। एक छीके में कुछ सड़े हुए फल पड़े थे। वह इस कजूंस पर गंभीरता से विचारता रहा जिसमें स्वार्थ का सागर लहरा रहा था। जो रात-दिन औरों की दौलत को अपने घर में देखना चाहता था। जिसका इस जीवन में न कोई दोस्त था और न कोई अपना। सरसता से उसे चिढ़ थी। वह कभी भी जीवन की कोमल भावनाओं या नारी के प्रणय पक्ष को लेकर चर्चा नहीं करता था। दयाल का यदि सर्वाधिक प्रिय विषय कोई था तो वह था ऋण देना! वह ऋण को लेकर घंटों विचारा

करता था। किस प्रकार किसीको सौ रुपया देकर एक हजार वसूल करने चाहिएं—इसमें वह अपनी बुद्धि का कौशल बताया करता था। वैसे वह कसाई की छुरी से अधिक निर्दय और पत्थर से भी अधिक कठोर था। किंतु वचनों का बहुत पक्का था। जो कह दिया उसे वह पूरा करता ही था। चेहरे पर किसी प्रकार के भाव लाए बिना वह अपने मुव्वकिलों (कर्जदारों को वह इसी तरह से सम्बोधन करता था) के मकान कुड़क करवा लेता था, उनका सामान कब्जे में कर लेता था या उन्हें जेल भिजवा देता था। इस मामले में वह थोड़ा भी उदार नहीं था।

'अनाम!' भीतर से दयाल ने पुकारा। अनाम की बैसाखी की 'खट्-खट्' गूंज उठी। वह भावोद्वेलित-सा उस कमरे में घुसा जिसमें चटाई बिछी हुई थी। जिसमें एक पतली-लम्बी युवती बैठी हुई थी। अनाम का ध्यान उस युवती की ओर गया। दयाल हंसकर बोला, 'यह अनामिका है, दासी, कुछ कर्ज लेने आई है। तुम्हारी और इसकी स्थिति एक-सी है। यह अपने मालिक को एक हजार रुपया देकर उसकी गुलामी से मुक्त होना चाहती है। बेचारी छोटी जात की है।'

अनाम ने मन ही मन सोचा, उसकी गुलामी से तुम जैसे आदमी की गुलामी बहुत भयनाक है। भगवान इसकी रक्षा करें।

'तुम चुप क्यों हो!' दयाल ने पूछा।

'मैं सोच रहा था कि आप कितने दयालु हैं।'

वह जोर से हंसा, 'आदमी झूठी प्रशंसा करने में माहिर होता है।··· अनामिका, तुम बाहर बैठो।'

इसके बाद दयाल ने गहरा मौन धारण कर लिया। वह गहरा मौन अनाम के लिए असह्य हो उठा। दयाल ने अपने काले कोट की जेब से कागज निकाले और अनाम को हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

अनाम ने हस्ताक्षर करने के पूर्व दयाल के कागजों को देखना चाहा।

देखकर वह तनिक स्तंभित-सा हुआ। बोला, 'तीन रुपया प्रति सैकड़ा ब्याज!'

'किसी वस्तु के अभाव में यह कुछ भी नहीं है। मैं यह रुपया केवल ब्याज के मोह में दे रहा हूं। कभी-कभी हम सूदखोर ब्याज के मोह में मूल को मिट्टी बना लेते हैं अर्थात् एक भी रुपया वापस नहीं मिलता।'

'लेकिन यह ब्याज साहूकारी नहीं है।' अनाम के स्वर में शिकायत-सी थी।

'साहूकार को एक तो अपनी इज़्ज़त का भय सदा बना रहता है। दूसरा, उसका मेरे पास कुछ न कुछ गिरवी होता ही है। तुम्हारे पास क्या है? कुछ भी नहीं! एक गरीब चित्रकार हो, न मकान है और न सोना! निरे फकीर। बाप भी है, वह भी बीमार। पांच-पांच और छह्-छह बहिनें, तुम स्वयं लंगड़े। कभी सोचा है तुमने, आज नई चित्रकारी के दुश्मनों का राज्य भारतवर्ष पर हो जाए तो तुम्हारा क्या होगा? फिर तुम्हारी कला भी अज्ञेय होती है। वह साधारण व्यक्ति की समझ में नहीं आती। एकदम विचित्र··· एकदम नई। कौन खरीदेगा उसे? मुझे तुमपर दया आती है।'

अनाम को अपनी निन्दा असह्य लगी। कहीं वह उत्तेजित हो गया तो बना-बनाया काम बिगड़ जाएगा। इसलिए उसने तुरन्त हस्ताक्षर किए और बैसाखी को बगल में दबाकर जल्दी से वहां से निकलना चाहा लेकिन दयाल ने उसे रोक दिया, 'रुपया नहीं लोगे?' वह बाहर बैठ गया। अनामिका भीतर आई। दयाल ने उससे पूछा, 'तुम काम करना चाहती हो?'

'हां।'

'कितनी तनखा लोगी?'

'रोटी-कपड़ा और तीस टका (रुपया)!'

दयाल ने अनाम से कहा, 'तुम्हें एक नौकरानी की जरूरत है, है क्या होगी ही। यदि मेरी बात मानना चाहते हो तो अनामिका को रख लो, तुम्हारा सब काम कर देगी, रोटी-कपड़ा और बीस रुपया नकद। बोलो

गया कि उसे आज रुपया मिलेगा ? कैसे वह उसके पीछे-पीछे चला आया ?···भूत है, भूत ! उसने घृणा से दयाल के नाम पर थूकना चाहा पर इन्दु के आगमन ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। वह हंसता हुआ-सा बोला, 'आज यहां अचानक आना कैसे हुआ ? खैरियत तो है ?'

'बड़े अनजान बन रहे हो ?'

'क्यों ?'

'पांच सौ रुपये क्या अकेले ही हजम करना चाहते हो ?'

'ओह !' वह गंभीर हो गया, 'यह कैसे हो सकता है इन्दु, तुम्हारे बिना अनाम इन रुपयों का उपयोग नहीं कर सकता। बोलो, कहां चलोगी ?'

'चौधरी रेस्त्रां में !'

'मैं अभी तैयार होता हूं।'

अनाम ने झट से कपड़े पहने और चल पड़ा। चौधरी रेस्त्रां एक उच्च स्तर का रेस्त्रां है ! वहां अनाम के पचीस रुपये खर्च हो गए। मन से न चाहते हुए भी उसने इन्दु के समक्ष अत्यन्त दरियादिली का परिचय दिया।

रात को वह लौटा। अनामिका भोजन बनाकर बैठी हुई थी। समीप वरदा अपने अन्तस् की जलन का परिचय दे रही थी। वह कह रही थी, 'यह इन्दु अनाम बाबू को अपने प्रेम-जाल में फंसा रही है। एक साधारण अध्यापिका का चरित्र कैसा हो सकता है, वह तुमसे नहीं छिपा है, अनामिका दीदी ?'

अनामिका ने वरदा को समझाया, 'किसी पर लांछन लगाना ठीक नहीं है। सभी आदमी अच्छे होते हैं और सभी बुरे।'

'लांछन, नहीं अनो दीदी, ये नर्सें और ये अध्यापिकाएं कभी भी चरित्र की अच्छी नहीं होती। अपने अनाम बाबू बड़े भोले हैं, वह इन्दु की मीठी-मीठी बातों में आ गए।···तुम याद रखना, एक न एक दिन यह अनाम बाबू से अवश्य छल करेगी।'

बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनते ही वरदा चुप हो गई। अनामिका ने इस तरह का भाव बनाया जैसे वह बहुत देर से अपने आपमें खोई हुई है। किवाड़ों के पास 'खट्-खट्' आने के साथ ही वरदा उठकर चली गई। अनाम ने सहजता से पूछा, 'मेरे आते ही चल पड़ी।'

'हां, मां पुकार रही है।'

अनाम ने कुछ नहीं कहा। वह भीतर चला आया। बैसाखी को दीवार के सहारे खड़ा करके वह कुर्सी पर बैठ गया। मुंह पर हाथ फेरकर उसने एक गहरा निश्वास लिया।

अनामिका ने आकर पूछा, 'खाना लाऊं?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'मैंने बाहर खाना खा लिया।'

'फिर आपने मुझे कहा क्यों नहीं?'

'तुम घर में नहीं थीं, इसी बीच इन्दु आ गई और मैं उसके साथ चला गया।'

'बाबा रे बाबा, इन्दु ने आपपर क्या जादू कर दिया है कि आप उसके इशारों पर नाचने लगे!' उसे तुरन्त वरदा की बात याद हो आई।

अनाम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह अर्थ भरी दृष्टि से अनामिका को देखता रहा। अनामिका पर उस दृष्टि की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह निर्विकार भाव से बोली, 'बुरा न मानें तो मैं आपको एक बात कहती हूं।'

'कहो?' अनाम की दृष्टि में सुलभता थी।

'आप इन्दु से शादी कर लीजिए।'

जैसे हृदय वीणा के सभी तारों को झनझना दिया हो, ऐसा प्रतीत हुआ अनाम को। वह एकटक अनामिका के मुस्कराते हुए चेहरे को देखता रहा।

तब वह शांति से बोला, 'मैं किसीसे विवाह कैसे कर सकता हूं, मेरे पास पैसा नहीं है, मेरी कोई स्थायी और अच्छी आय नहीं है।···अन्नो, शादी सहज नहीं है।' अनामिका कुछ बोले, इसके पहले ही अनाम फिर बोल उठा, 'आज मुझे पांच सौ रुपए मिले, सोचा, बहिन के विवाह का कुछ कर्ज़ चुकाऊंगा। कुछ मित्रों को थोड़ा-थोड़ा देकर उनको धीरज दूंगा। पर राक्षस दयाल बीच में ही आ टपका और सब कुछ छीन कर ले गया। अनामिका, ऐसा दयाहीन आदमी मैंने कहीं भी नहीं देखा।···मैंने उसे कहा कि तुम आधा ले लो पर नहीं, पूरे अपने पांच सौ रुपये लिए। अब बताओ कि मुझे उन लोगों के सामने कितना शर्मिंदा होना पड़ेगा।'

अनामिका ने अनाम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और वह चली गई। जाते-जाते उसका चेहरा गंभीर हो गया।

दूसरे ही दिन सवेरे अनामिका ने दयाल के पास से अनाम को ढ़ाई सौ रुपये लाकर दे दिए। अनाम का हृदय उस दासी के प्रति श्रद्धा से भर आया। उसने कुछ कहना चाहा पर अनामिका ने मनाकर दिया। बस, इतना ही कहा, 'आप जाकर दयाल बाबू के कागज पर हस्ताक्षर कर आइएगा।'

उस घटना से आज तक दयाल अनाम के प्रति उतना कठोर नहीं बना जितना औरों के प्रति बनता था। अनाम का जीवन पूर्ववत् ही था। अनामिका उसकी दासी, वरदा उसकी पड़ोसिन और इन्दु उसकी प्रेमिका!

बस, ये ही जीवन के इर्दगिर्द दौड़ने वाले चरित्र!

प्रभात की स्वर्णिम किरणें ऊंचे-ऊंचे मकानों की दीवारों का चुम्बन लेती हुई नाच रही थीं। अनाम ने सूरज की ओर पड़ने वाली खिड़की को खोला ताकि धूप कमरे में आ जाए।

अनामिका अभी तक नहीं आई थी। इधर कुछ दिनों से उसकी तबीयत

ठीक नहीं थी।

वरदा ने किवाड़ खटखटाए। अनाम ने बगल में बैसाखी दबाकर द्वार खोला। वरदा चाय लाई थी।

'अन्नो दीदी की आज्ञा है कि जब तक वह न आए तब तक मैं आपको चाय का प्रबन्ध कर दिया करूं।'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठकर चाय पीने लगा।

वरदा बोली, 'आप हमारे साथ सिनेमा नहीं गए पर इन्दु के साथ···!'

बीच में ही अनाम बोला, 'वरदा, मैं और इन्दु जिस काम के लिए गए थे, वह काम नहीं बना तो हम सिनेमा देखने चले गए।'

वह रूठती हुई बोली, 'सच क्यों नहीं कहते कि मुझ जैसी काली लड़की के साथ आपको सिनेमा देखना अच्छा नहीं लगता।'

'यह बात नहीं है वरदा, मैं तुम्हारे साथ कई बार सिनेमा देख चुका हूं।'

'झूठ क्यों बोलते हैं ? आप मेरे साथ सिनेमा देखने चले थे कि मैं आपको जबरदस्ती ले गई ?'

'तुम जैसा भी चाहो, सोच सकती हो, इसकी तुम्हें स्वतंत्रता है। वरदा, मैं किसीके हृदय को नहीं दुखाता। सच कहूं, इन्दु से मैं प्यार करता हूं। मैं चाहता हूं कि वह मुझसे खुश रहे। कदाचित उसको खुश करने में तुम्हारा अपमान भी हो सकता है पर मुझे विश्वास है कि तुम उसका बुरा नहीं मनोगी ? उसे मेरी मजबूरी समझोगी।'

वरदा को अनाम से ऐसे शब्दों की आशा नहीं थी। वह स्वयं अनाम पर अपना अधिकार समझती थी। सोचती थी कि यदि वह जोर लगाएगी तो अनाम उसके प्यार को स्वीकार कर सकता है। किंतु आज अचानक अनाम ने उसके भ्रम के आवरण को विदीर्ण कर दिया। वह बिस्मित-सी, ठगी-सी अनाम को देखती रही। अनाम अपनी दृष्टि को खेलती किरणों पर जमाकर

बोला, 'वरदा, मेरे स्नेह को गलत मत समझना, इस मकान में एक शरीफ व्यक्ति होकर रहना चाहता हूं। तुम्हारे बाबा (पिता) और तुम्हारी मां मुझे अपना बेटा समझते हैं। मैं उनके विश्वास को खोना नहीं चाहता! मैं उनके हृदयों पर आघात नहीं पहुंचाना चाहता।'

वरदा प्याला लेकर चली गई।

अनाम लापरवाही से अपने आपसे बोला, 'यह काली लड़की अपने आपको क्या समझती है! मुझे पहले ही कुछ अन्देशा था कि यह मुझे अपने जाल में फंसाएगी। छिः न रंग और न रूप!'

उसने उठकर अंगड़ाई ली और फिर गुसलखाने में चला गया।

अनामिका आ गई थी। वह स्टोव जलाकर चाय बनाने लगी। आज उसने हरे रंग की साड़ी और नीला ब्लाउज पहन रखा था। इधर उसका चेहरा सफेद हुआ जा रहा था। बार-बार पूछने पर भी अनाम उससे संतोषप्रद उत्तर नहीं पा रहा था। वह अनाम को यह कहकर टाल देती थी कि वह बीमार है, उसे पेट की शिकायत है।

अनामिका अनाम के लिए सोचने का विषय थी। यह नारी रहस्य-मयी-सी उसके सम्मुख खड़ी थी। एक जलता प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में अनामिका को लेकर घूमा करता था। अनामिका बीस वर्ष को पार कर रही थी। उसने उसे कभी प्रेम और परिवार के बारे में बातचीत करते नहीं देखा। वह शांत और मौन रहती थी। जब कभी अनाम को उदास देखती तब वह उसकी उदासी को दूर करने का प्रयत्न करती थी। अनाम ने अनामिका को तभी हंसते-मुस्कराते देखा था।

एक बार अनाम ने अनामिका से पूछा था, 'तुम्हारा गहरा मौन मेरी चिंता का कारण बन जाता है।'

'आप मेरी चिंता न कीजिए अनाम बाबू, कुछ ऐसी स्त्रियां होती हैं

जिनके जीवन में घोर एकान्त के अतिरिक्त कुछ होता ही नहीं। चरम दुःख उनके जीवन का प्रतिरूप होता है।'

'इन बातों से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। अन्नो! क्या तुम्हारा विवाह हो गया?'

'नहीं।'

'फिर तुम विवाह क्यों नहीं करतीं?'

अनामिका के चेहरे पर तरस भरी हंसी बिखर गई, 'एक दासी के साथ कौन विवाह करेगा? फिर मां के आंचल पर लगा कलंक? अनाम बाबू, मां का कलंक उसकी सन्तान को भी कलंकित कर देता है। और फिर मैं मां को छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहती। वह पीड़ाओं के मामले में धरती माता है।'

अनाम ने देखा कि अनामिका के चेहरे पर अवसाद की घटाएं उमड़ आई हैं।

'आप बार-बार पूछा करते हैं, मेरे बारे में जानने की इच्छा रखते हैं, चाहकर भी मैं अपने बारे में आपको नहीं बताना चाहती।'

'क्यों?'

'आप चित्रकार हैं, आपके बारे में लोग कहते हैं कि आपमें मनुष्यता कूट-कूटकर भरी हुई है लेकिन मैं ऐसा नहीं समझती। मैं इतना ही जानती हूं कि कलाकार भी एक साधारण मनुष्य होता है।'

'लेकिन तुम्हारी मां ने कौन-सा पाप किया?'

'वह अपने पति को छोड़कर भाग गई। मैं वर्णसंकर हूं, मेरे बाप का कोई पता नहीं और न ही मेरी मां मुझे यह बताना चाहती है।' भावावेश में उसे जो न कहना था, न वह भी कह गई। उसके हृदय पर झटका-सा लगा।

अनाम ने तुरन्त प्रश्न किया, 'फिर भी तुम अपनी मां की इतनी सेवा करती हो?'

'वह मां है, बस इसीलिए।'

इस उत्तर ने अनाम के मस्तिष्क में अनामिका के लिए आदर की सर्जना कर दी। वह अनामिका के सुख और दुःख का यथेष्ट ध्यान रखने लगा।

गुसलखाने के किवाड़ बोले, साथ ही बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनाई पड़ी। अनामिका ने तुरन्त चाय की ट्रे अनाम की मेज पर रख दी। अनाम ने बैठते ही कहा, 'जब तुम्हारी तबीयत खराब थी तब तुम यहां क्यों आईं ?'

'बेकार बैठे-बैठे मन नहीं लगा।'

'लेकिन तबीयत अधिक खराब हो गई तब ?'

'तब अपने आपको ईश्वर के सहारे छोड़ दूंगी।' वह तुरन्त बात बदलकर बोली, 'आपको दयाल बाबू ने कहलवाया है कि आप भंवर बाबू के यहां चले जाएं।'

'मैं !···क्यों ?'

'वे इन्दु की पुस्तक भंवर बाबू द्वारा छपवा देंगे !' आज सवेरे के बाद वे मुझे अपने एक 'मुवक्किल' के यहां जाते हुए मिल गए थे। अचानक भृकुटियां तानते हुए बोले, जैसे वे मुझे सवेरे इस बात को कहना भूल गए थे।'

'अच्छा, कल तो उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। कह रहे थे कि सोना बनाने की योजना बताओ।'

'आप इन्दु को लेकर भंवर बाबू के यहां चले जाइएगा। मैं समझती हूं कि आपका काम बन जाएगा। इससे अधिक मैं कुछ नहीं जानती।'

'बड़ा विचित्र आदमी है।' अनाम ने धीरे से कहा और फिर चाय पीने लगा। क्या उस राक्षस के मन में भी इस दासी के प्रति···? एक प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में छाकर नाचने लगा।

वह चाय पीकर तुरन्त इन्दु के यहां जाने को तत्पर हो गया। अनामिका को उसने खाना न बनाने के लिए कह दिया। जब वह इन्दु के घर

पहुंचा तब इन्दु की विधवा मां खाना बना रही थी। उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर उसने भीतर से ही इन्दु को आवाज़ दी। इन्दु ने उसे ऊपर आने को कहा। वह धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ता हुआ कमरे में गया। उसका सांस फूल गया था। वह धम से एक कुर्सी पर बैठ गया। इन्दु ने उसके कन्धों पर हाथ रखते हुए कहा, 'तुम्हें ऊपर चढ़ने में बड़ा कष्ट होता है?'

अनाम ने इन्दु की ओर देखा। उसकी आंखों में दया अंगारे-सी दहक रही थी। वह मन ही मन गुस्से में भर उठा पर ऊपर से स्वाभाविक स्वर में बोला, 'नहीं, नहीं, मुझे ज़रा भी कष्ट नहीं होता, तुम एक गिलास पानी का पिलाओ न?'

उसने पानी इस तरह पिया जैसे वह अत्यन्त प्यासा है। पानी पीकर उसने एक गहरा सांस लिया। सांस लेकर वह बोला, 'तुम्हें स्कूल कितने बजे जाना है? क्या तुम आज छुट्टी नहीं ले सकतीं?'

'आज मैंने छुट्टी पहले से ही ले रखी है।'

'फिर तुम तैयार हो जाओ, हमें भंवर बाबू के यहां जाना है। तुम्हारी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी, ऐसा मेरा ख्याल है।'

इन्दु की आंखों में चमक आ गई। वह भीतर के कमरे से कपड़े बदलती हुई बोली, 'कभी-कभी घटनाएं बड़ी तेज़ी से घटती हैं जिनपर हम आसानी से विश्वास भी नहीं कर सकते। कल हम निराश हो चुके थे पर आज आशा हमारे सम्मुख फिर नाच उठी है। तभी हमें न चाहते हुए भी दैवयोग को मानना पड़ता है।...अनाम! क्या हमारे मिलन को तुम दैवयोग नहीं मानते?'

'मानता हूं।'

'तुम्हारा वह चित्र देखकर मुझे ऐसा लगा कि तुम्हारे चित्र मनुष्य को पौरुषहीन बनाते हैं। जीवन को मृत्यु परास्त कर दे, यह भाव अच्छे नहीं तो भी तुम्हारी शैली के चमत्कार के कारण वह चित्र प्रभावशाली हो गया था।

और मुझे वह चित्र इतना प्रिय लगा कि मैंने उसकी चर्चा अपने कई परिचितों में की। उसमें एक विचित्र आकर्षण था जो आदमी को एक नये ढंग से प्रभावित करता था। फिर हमारे स्कूल में उत्सव ! हमारी भेंट। प्रगाढ़ मित्रता और···!' इन्दु हठात् चुप हो गई । अनाम अगला वाक्य सुनने के लिए उत्तेजित हो उठा। वह शीघ्रता से अपनी बैसाखी पर हाथ फेरता हुआ बोला, 'और क्या इन्दु ?'

'और तुमने मुझे लेखन के क्षेत्र में सहयोग दिया, फलस्वरूप मैं हिन्दी की एक अच्छी लेखिका बन गई। हालांकि यह 'पेशा' बहुत कम आय वाला है किंतु इसमें मनुष्य को बड़ा सम्मान मिलता है और मैं सम्मान को सबसे अधिक महत्व देती हूं।'

अपनी आशा पर तुषारापात होते देख अनाम ने बात को पुनः उसी तारतम्य पर लाकर कहा, 'तुम कहना कुछ और चाहती थीं और कह गईं कुछ और।'

इन्दु बाहर आ गई थी। उसने हैन्डलूम की एक सुन्दर चौड़ी किनारी की साड़ी पहन रखी थी। ललाट पर छोटी गोल बिन्दु और हल्का कजरा। अनाम क्षण भर के लिए स्तब्ध हो गया।

इन्दु भौंहें टेढ़ी करके बोली, 'मैं क्या कहना चाहती थी ?'

अनाम बैसाखी को बगल में दबाकर उठता हुआ बोला, 'यह तुम्हीं बता सकती हो। तुम्हारे अन्तर्मन के भावों को मेरी जिह्वा वाणी का रूप नहीं दे सकती।'

बैसाखी की 'खट्-खट्' की फिर गूंज हुई। अनाम अब बिलकुल रोमांटिक मुद्रा में इन्दु के समीप खड़ा था। इन्दु ने उसका हाथ पकड़ा और मृदु स्वर में बोली, 'तुम्हारे कलाकारों का समाज आजकल हमारी बड़ी चर्चा करने लगा है। वे जलन करने वाले प्रतिद्वन्द्वियों की तरह हमारे बारे में अनर्गल आलाप और निराधार छिछली प्रेम-चर्चाएं कर रहे हैं। अनाम !

क्या ऐसी बकवास सुनकर तुम चिन्तित नहीं होते ?'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस चर्चा को यहीं पर खत्म कर देना चाहता था। वह इन्दु की मां के समक्ष किंचित् भी छिछला बनने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि आर्थिक रूप से अवलम्बित इन्दु की मां इन्दु के विवाह में कम इच्छुक है और थोड़ी बहुत है भी, तो वह ऐसा घर चाहती है जो उसे नौकरी करना न छुड़ाए। अनाम यह भी भली भांति जानता था कि उसके पास कोई सरकारी नौकरी नहीं है, वह करना भी नहीं चाहता, ओवर-एज भी हो गया है और फिर जो स्वतंत्रता और सम्मान इस काम में है, वह किसी भी काम में नहीं।

अनाम और इन्दु घर से बाहर आ गए थे। अनाम बात करने के मूड में था अतः उसने टैक्सी ली। टैक्सी में बैठने के साथ ही अनाम ने कहा, 'अब बताओ, तुम उस समय क्या कह रही थीं ?'

'मैं कह रही थी कि क्या इन निराधार चर्चाओं से तुम परेशान नहीं होते ?' उसने नितान्त सहज भाव से कहा।

'नहीं !'

'क्यों ?'

'क्योंकि इन चर्चाओं में सत्य का आधार बोलता है। क्या तुम मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों के बीच इस कोण से नहीं सोचती कि हमारे अत्यन्त गहरे सम्बन्ध हैं ?'

'सम्बन्ध प्रेम का रूप नहीं ले सकते। वे गहरी मित्रता की संज्ञा अवश्य ले सकते हैं।'

'सम्बन्ध ही आगे चलकर गहरे प्रेम का रूप ले लेते हैं।···दो अपरिचित व्यक्ति मिलते हैं, मित्र बनते हैं, मित्रता बढ़ती है, मित्रता प्रेम का रूप धारण करके विवाह के पवित्र बन्धन में बंध जाती है।'

'फिर मुझे सावधान हो जाना चाहिए।' इन्दु के मुख पर चंचलता थी

जो अनाम को बहुत भाई ।

अनाम के मन में आया कि आज वह इन्दु को अपने प्यार के बारे में स्पष्ट कह दें पर उसका साहस नहीं हुआ । प्रेम का स्पष्ट बखान उसे फूहड़-पन और मूर्खता का परिचायक लगा । यह तो एक अहसास की चीज़ है । जिसे वह भी जानता था और इन्दु भी जानती थी ।

'बाएं !'

टैक्सी मुड़ चली । इन्दु ने अपनी गर्दन दूसरी ओर कर ली । अनाम भी विचारों में खो गया । आज से पांच वर्ष पहले वह जोधपुर में था । इसी प्रकार उसका प्रतिमा से प्यार हुआ था । प्रतिमा उसपर जान देती थी और वह भी प्रतिमा के बिना एक पल भी नहीं रह सकता था किंतु प्रतिमा के माता-पिता एक लंगड़े के साथ अपनी बेटी को बांधने को तैयार नहीं हुए । इस बात का पता जब अनाम के मित्रों को लगा तो उनके मन की घृणा भड़क उठी और उन्होंने विचित्र कथाएं गढ़ लीं । एक मित्र ने तो एक कहानी ही बना डाली । अनाम का हाथ अपनी टांग पर चला गया । वह टांग पर हाथ फेरने लगा । भंवर बाबू की कोठी आ गई थी । टैक्सी रुकी और अनाम और इन्दु दोनों ने दरबान को भीतर सूचना पहुंचाने के लिए कहा ।

एक भव्य कोठी । संगमरमर और सीमेंट की बनी । राजसी सामन्तों जैसे ठाट और रौनक ।

वे दोनों विस्मित दृष्टि से देखते रहे ।

भंवर बाबू ने बाहर आकर सस्मित मुख से उनका स्वागत किया । वे उन्हें एक आलीशान कमरे में ले गए जिनको इन्दु एकटक देखती रही । जैसे उसे ऐसे व्यवस्थित और आधुनिक सामान से सज्जित कमरे अत्यन्त प्रिय हों । भंवर बाबू उसकी बात को समझ गए । तनिक मुस्कराकर बोले, 'इन्दु जी, कमरा पसन्द आया ?'

'बहुत !' उसने इस तरह कहा जैसे कोई बच्चा अजीब वस्तु देखकर खुशी में झूमता है।

'थैंक्यू ! आप बैठिए अनाम जी। आपको खड़े होने में कष्ट होगा।' भंवर बाबू ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा, 'आइए इन्दु जी, मैं आपको मकान दिखाऊं।'

इन्दु ने प्रश्न भरी दृष्टि से अनाम की ओर देखा। भंवर बाबू चौंकते हुए बोले, 'ओह ! अनाम जी मेरे मकान को पहले ही देख चुके हैं। व्यर्थ में चढ़ने-उतरने की तकलीफ इन्हें नहीं देनी चाहिए।'

अनाम के मन में आया कि वह इस सेठ के बच्चे के सिर पर बैसाखी दे मारे। क्या देवता बन रहा है ? लंगड़ा हूं तो क्या, अभी तुमसे अधिक चल सकता हूं।

घृणा से उसका मुख विकृत हो गया किंतु वह नहीं बोला और न ही किसीने उसके चेहरे को देखा।

इन्दु और भंवर बाबू बाहर चले गए।

इन्दु भंवर बाबू के ऐश्वर्य से बहुत प्रभावित हुई। प्रत्येक कमरे की प्रशंसा के साथ-साथ भंवर बाबू इन्दु की कहानियों की प्रशंसा कर दिया करते थे। अनाम के चित्रों के बारे में भंवर बाबू की और इन्दु की राय परस्पर मिल गई जिससे इन्दु को गौरवानुभूति हुई। उसे लगा कि उसका सोचना सही है।

अनाम घोर एकान्त में बैठा हुआ भंवर बाबू और इन्दु के प्रति द्वेष भरे मौन उद्‌गार छोड़ रहा था। उसका मन ईर्ष्या के कारण जल रहा था। यदि वह इन्दु को प्यार नहीं करता तो इसी समय यहां से उठकर चला जाता। ऐसी अशिष्टता उसके लिए असह्य थी। तभी उसके कानों में गर्म तेल-सी इन्दु और भंवर बाबू की मुक्त सम्मिलित हंसी पड़ी। वह विवश नायक की भांति उत्तेजित हो गया। उसने चाहा कि वह इन्दु को जाकर कहे

कि एक अपरिचित सेठ के समक्ष प्रथम भेंट में अपने को इतना छिछला नहीं बनाना चाहिए। इससे व्यक्ति की गंभीरता खत्म हो जाती है। लेकिन ये सब उसके मन के पुलाव थे जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार पका रहा था।

अप्रत्याशित हल्की हंसी के साथ इन्दु और भंवर बाबू ने कमरे में प्रवेश किया। अनाम की आकृति को देखकर चतुर व्यापारी भंवर बाबू तुरन्त समझ गए कि इसके दिल पर क्या गुज़र रही है। क्षमा-याचना करते हुए बोले, 'कुछ समय अधिक लग गया अनाम जी, आपकी यह इन्दु हर कला में दिलचस्पी लेती है।'

उसने कृत्रिम सहजता से कहा, 'कोई बात नहीं। इनको संतोष तो हो गया। इनको आपका मकान पसंद आया कि नहीं ?'

इन्दु अपने शब्दों पर ज़ोर देती हुई बोली, 'मुझे हर अच्छी चीज़ पसंद आती है चाहे वह अपनी हो या पराई। सच, भंवर बाबू के मकान में रहने की इच्छा होती है।'

इसपर भंवर बाबू चुप रहे। नौकर चाय और कुछ पापड़ तलकर ले आया था। इन्दु ने सबको चाय बनाकर दी। कुछ देर व्यर्थ का मौन छाया रहा।

भंवर बाबू ने ही मौन भंग किया, 'दयाल ने कल अप्रत्याशित आपके कहानी-संग्रह की बात चला दी।'

अनाम ने बीच में ही कहा, 'भंवर बाबू ! इनकी कहानियां बड़ी अपील करती हैं। सर्जन के मामले में इनका हृदय अनोखा है। शैली, कथावस्तु और मार्मिक चरित्र-चित्रण में ये नवीन पीढ़ी के कथाकारों के साथ सहजता से बैठ सकती हैं।'

'मैं आधुनिक साहित्य पढ़ता रहता हूं। साहित्य की ओर मेरी गहरी दिलचस्पी है। मैं अमूमन राजस्थानियों से भिन्न हूं। मेरे जीवन का मूल ध्येय पैसा नहीं, आनंद है। आनंद भी सोद्देश्य। उद्देश्यहीन आनंद में मेरा

विश्वास नहीं। मैं चाहता हूं कि एक प्रकाशन-संस्था खोलूं।'

'यह तो बहुत अच्छी बात है।'

'मैं कुछ रुपया लगा सकता हूं। पहले मेरा एक पत्र निकालने का विचार था, अब मैंने वह विचार बदल दिया है। दयाल ने मुझे इन्दु जी के बारे में बताया। वैसे स्त्रियों के मामले में वह निरा कोरा है। प्यार और रोमान्स पर वह सर्वथा बेरुखी से बातचीत करता है। लेकिन इन्दु जी के बारे में उसने गहरी तो नहीं, फिर भी तनिक दिलचस्पी दिखाई। इनकी एक कहानी की प्रशंसा भी की।'

इन्दु ने गर्व से कहा, 'उस कहानी को मैंने बड़ी मेहनत से लिखा है।' ऐसा कहते समय उसकी दृष्टि अनाम पर जम गई। अनाम पूर्ववत गंभीर था जैसे उसके चेहरे पर कोई नये भाव नहीं आए हैं।

भंवर बाबू ने बात के सिलसिले को जोड़ते हुए कहा, 'इस राजधानी में वैसे सैकड़ों लेखक हैं। बड़े-बड़े सेठों की जी हुजूरी करने वाले, उनके लेख लिखकर आजीविका कमाने वाले, उनकी झूठी प्रशंसा करके अपने मासिक और दैनिक पत्र चलाने वाले तथा उन्हें व्यर्थ में साहित्यकार कहकर पैसा ऐंठने वाले। वस्तुतः यहां साहित्यिक व्यापारी बहुत अधिक हैं। और तो और यह राजधानी साधना की कम, पर दिखावट की बड़ी दुकान है। ऐसी स्थिति में मेरे द्वारा प्रकाशन-संस्था का संचालन कुछ व्यक्तियों की दृष्टि में निहित स्वार्थों का प्रतीक माना जा सकता है किंतु इसमें ऐसा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं विशुद्ध रूप से साहित्य-सेवा करना चाहता हूं।'

'इसका मतलब है, आप बड़े पैमाने पर यह कार्य करना चाहते हैं।'

'नहीं।' उसने गर्दन को झटका देकर कहा, 'मैं फिलहाल बड़े रूप में इसे नहीं खोलना चाहता। मैं केवल आपकी और इन्दु जी की सभी पुस्तकें छापने का विचार रखता हूं। मैं आपके चित्रों का एक एलबम तथा आपकी चित्र-शैली पर विभिन्न आलोचकों के लेखों का संग्रह छापना

चाहता हूं।'

अनाम ने तुरन्त कहा, 'यह तो और अच्छा रहेगा। स्थानीय लेखकों को तो लेखक की संज्ञा देना ही साहित्य का अपमान है। भंवर बाबू, यहां के लेखक चिन्तन-मनन के नाम पर शून्य हैं। न इन्होंने फ्रायड को पढ़ा और न मार्क्स को। जुंग, हैवलाक एलिस और सार्त्र के कदाचित् नाम भी नहीं जानते होंगे। आज मनोविज्ञान का ज़माना है। भला इनके पढ़े बिना कोई साहित्यकार जीवित रह सकता है!···और पिकासो, वानगाग, पॉल, गोगां यामिनीराय, शुभा टैगोर आदि चित्रकारों के बारे में यह बिल्कुल नहीं जानते।'

भंवर बाबू ने अपनी सहमति प्रकट की।

इन्दु ने तुरन्त बात के प्रसंग को बदल दिया, 'फिर मैं समझती हूं कि बात पक्की हो गई। अब मैं अपनी सहेलियों में कहानी-संग्रह के प्रकाशन की ज़ोर-शोर से घोषणा कर सकती हूं?'

'बेशक!'

इसके बाद अनाम प्रकाशन की एक रूपरेखा बनाने का वायदा करके उठ खड़ा हुआ। जाते-जाते भंवर बाबू ने इन्दु से कहा, 'आप मुझे फोन नम्बर ३०३३ पर कभी भी याद कर सकती हैं।'

बैसाखी की 'खट्-खट्' फिर सुनाई पड़ी। बाहर आते ही इन्दु के चेहरे पर उल्लास बिखर गया। वह चहकती हुई चिड़िया-सी मधुर स्वर में बोली, 'अनाम, भंवर बाबू की उम्र मेरे ख्याल में तीस-पैंतीस की होगी। कला के अच्छे पारखी हैं?'

'शायद!' छोटा-सा उत्तर दिया अनाम ने।

६

इधर अनामिका अधिक अस्वस्थ हो गई थी इसलिए सवेरे की चाय

वरदा लाया करती थी। अनाम का उसके साथ का व्यवहार ज़रा-सा भी सुन्दर नहीं था। वह हर समय ऐसे भावों का प्रदर्शन किया करता था जैसे वह वरदा से दूर, बहुत दूर भागना चाहता है। यही कारण था कि जब वरदा शरत् चन्द्र की 'कमल' अथवा 'सावित्री' की चर्चा करती तो अनाम उसके बारे में इस तरह उत्तर दिया करता था जैसे ये बातें जीवन में कोई महत्व नहीं रखती हैं। व्यर्थ ही समय को खराब करती है परन्तु कल सवेरे एक विचित्र अकल्पनीय घटना घट गई।

अभी तक अनाम बिस्तरे पर सोया हुआ था। वरदा ने चाय की प्याली को मेज़ पर रखकर उसे जगाया। अनाम ने अपनी अलसाई आंखों से वरदा को देखा। हमेशा की अपेक्षा आज वरदा कुछ अधिक अच्छी लग रही थी। उसके गालों में उल्लास की परछाइयां नाच रही थीं। उसकी आंखों में प्यार की गहराइयां तैर रही थीं। उसका शरीर उसे इतना काला और भद्दा नहीं लगा जैसा उसे सदा लगता था। आज उसे उसमें भी सौन्दर्य की ज्योत्स्ना विकीर्ण होती हुई लगी। उसके बाल खुले और नीचे कमर तक छितराए हुए थे। अनाम उन सबको एकटक देखता रहा। उसने क्षण भर के लिए सोचा, 'वरदा इतनी बदसूरत नहीं है जितनी मैं समझता हूं।'

'चाय!'

अनाम चाय पीता हुआ खामोशी से वरदा के बारे में सोचता रहा। वरदा संगमरमर के बुत की भांति निश्चल और अटल खड़ी थी। चाय समाप्त करके अनाम ने प्याले को मेज़ पर रख दिया और अपने आपको बहलाने की चेष्टा की ताकि वरदा यह समझे जैसे वह उसमें तनिक भी दिलचस्पी नहीं ले रहा है। लेकिन वरदा पूर्ववत् खड़ी रही। उसकी आंखों में एक उपेक्षित नारी की अतृप्त चाह और प्यास थी जो तृप्ति की मांग कर रही थी। एक करुण असहायता थी जिसको अनाम पूरी तरह देख भी नहीं सकता था।

'क्या बात है वरदा ?' उसने अपने हृदय के आन्दोलन को दबाते हुए सहज स्वर में पूछा, 'तुम मुझे इस तरह क्यों देख रही हो ?'

'मैं ··!' वह अस्पष्ट रूप से इतना कहकर कुर्सी पर बैठ गई जैसे कोई भयभीत प्राणी हो जो टूटकर गिर पड़ा हो। उसकी सांसें तेज थीं और उसके सारे बदन में कंपकंपी थी। अनाम के मन में कई प्रश्न एकसाथ उठे और बैठ गए। उसने अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली

'अनाम बाबू !' उसने कहा।

'कहो।'

'मैं चाहती हूं।' उसने बड़ी कठिनता से कहना प्रारम्भ किया, 'मैं··· आपको···चाहती···हूं। मैं···आपको···प्यार···करती हूं।' इतना कह-कर वह चुप हो गई। हर शब्द उसके गले में अटक रहा था।

अनाम ने चीखना चाहा पर न मालूम उसका गला क्यों रुक गया। उसने इतना ही कहा, 'वरदा !'

वरदा ने सम्पूर्ण समर्पण भरी दृष्टि से अनाम की ओर देखा। वह प्रेम भरी दृष्टि, एक औरत की प्यार भरी नज़र अनाम के लिए असह्य हो उठी। उसने अपनी अंगुलियों से खेलना शुरू कर दिया।

वह आगे बढ़ी। उसने अपने कांपते हाथ से अनाम के हाथ का स्पर्श किया। एक आन्दोलन, एक कम्पन उसकी रग-रग में उत्पन्न हो गया। उसे लगा, वह कांपता स्पर्श और गर्म आहें उसके तन और मन में एक ऐसे आकर्षण को जन्म दे रही हैं जिसे वह सहन नहीं कर सकता। उसने साहस करके वरदा के चेहरे को देखा। चेहरा बदल गया था। उसकी आंखों में नारीत्व का ओज और समर्पण का आलोक दीप्त था। अनाम के हाथ स्वतः ही बढ़ गए। वरदा ने अपना मस्तक उसकी गोद में रख दिया।

मेज़ हिल उठी। उसके हिलने के साथ बैसाखी गिर पड़ी। बैसाखी के साथ अनाम के मस्तिष्क में अपनी झूलती हुई टांग घूम गई। उसे लगा कि

वह इस उत्तेजना को नहीं संभाल सकेगा। उसके हाथ ढीले पड़ गए। सहसा उस दिन वाली स्मृति उसके मानस-पटल पर घूम गई। वह बस पर चढ़ रहा था और वरदा की व्यंग्य भरी दृष्टि उसकी टूटी टांग का उपहास कर रही थी। फिर उसके मन में घृणा की लहरें दौड़ पड़ीं। उसने वरदा को अपने से अलग करना चाहा। वरदा नेत्रों में आंसू भरकर कह उठी, 'अनाम बाबू, मैं आपसे प्यार करती हूं, प्यार करती हूं, मुझे अपनी बांहों में भर लीजिए, मैं केवल आपकी हूं।' वह अस्फुट स्वर! अनाम विचलित हो गया। तुरन्त अपनी बैसाखी को पकड़कर खड़ा हो गया। संभलकर बोला, 'शायद तुम भूल गई हो कि मैं एक शरीफ आदमी हूं। तुम्हें अत्यन्त निम्न स्तर की स्त्रियों की तरह इतने आवेश में नहीं आना चाहिए और न ही तुम्हें इस तरह प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए, यह एक अच्छे घराने की लड़की के लिए शोभा नहीं देता!'

अनाम ने जैसे ही वाक्यों को समाप्त किया वैसे ही वरदा संभलकर खड़ी हो गई। थोड़े क्षण पूर्व उसके मुख पर जो करुणा और ओज था, वह लुप्त हो गया और वह तनिक कर्कश स्वर में बोली, 'तुम निर्दय हो, हृदय-हीन हो, तुम मेरे प्यार को ठुकरा रहे हो, ईश्वर तुम्हारे प्यार को ठुकराएगा।'

'किन्तु मैं तुम्हें प्यार नहीं करता, इस तरह भावुकता में बहना अच्छा नहीं है। मुझे समझने की कोशिश करो।'

वरदा फुफकारती हुई बोली, 'मैं तुम्हें समझ गई। तुम्हें एक सौंदर्य-देवी की आवश्यकता है। लेकिन वह तुम्हें नहीं मिलेगी, इन्दु तुम्हें प्यार नहीं करेगी, वह एक लंगड़े को अपना पति क्यों बनाएगी? वह मेरी तरह काली और भद्दी नहीं है। वह मेरी तरह अनपढ़ थोड़े ही है।'

वह कमरे से बाहर चली गई।

अनाम के मन में हाहाकार मच गया। उसने क्षण भर के लिए खिड़की

के चौखटे पर अपनी कुहनियों को टेककर दूर तक फैली हुई सड़क पर अपनी दृष्टि दौड़ाई। उसे लगा कि उसकी टांग अच्छी हो गई है और वह हवा की तरह तेज़ और बहुत तेज़ भाग रहा है और वरदा उसे भागते हुए देखकर मन ही मन जल रही है।

तत्पश्चात् वह दिन भर कहीं नहीं गया। वह दिन भर बीमार-सा पड़ा रहा जैसे उसमें शक्ति ही नहीं है।

रात्रि की गहरी निद्रा ने उसको काफी स्वस्थ किया। उसका आवेश और बेचैनी जाती रही। वह स्वस्थ दृष्टि से कल की घटना पर विचारने लगा। उसे लगा कि वरदा में सिर्फ एक कुरूप लड़की का आवेश और उत्तेजना है। प्रेम में प्रोत्साहन का अभाव पाकर वह घृणा से भर गई और उसने उस हालत में उसको लंगड़ा तक कह दिया। अनाम ने एक आलोचक की भांति अपनी आलोचना करके अपने आपको धैर्य दिया कि इसका उसे भी बुरा नहीं मानना चाहिए तथा उसे वरदा को एक नादान लड़की समझकर क्षमा कर देना चाहिए।

उसने ऐसा ही किया तथा बैसाखी लेकर वह नीचे चाय पीने चला गया। रास्ते में वरदा की मां मिली। उसने साधारण तरीके से कहा, 'वरदा आपसे नाराज़ है, अनाम बाबू!'

अनाम ने हंसने का प्रयास करते हुए कहा, 'वह पगली है।'

कामों से निवृत्त होकर वह इन्दु के घर की ओर चल पड़ा। आज मौसम अच्छा था। सवेरे-सवेरे बादल निकल आए थे जिनसे आकाश में मृगछौने दौड़ रहे थे।

जब वह इन्दु के घर पर पहुंचा तब इन्दु उसे नहीं मिली। इन्दु की मां ने बताया कि वह भंवर बाबू के यहां खाना खाने गई है। अनाम का मन डाह से भर गया। उसने सोचा कि वह उसे छोड़कर कैसे अकेली भंवर बाबू के यहां चली गई? हठात् उसके मुंह पर दुःख की परछाइयां नाच उठीं।

इन्दु की मां ने उसके चेहरे के भावों को समझने का प्रयास नहीं किया। वह अपने आंचल को ठीक करती हुई बोली, 'कल इन्दु की वर्षगांठ है, शायद भंवर बाबू इस उपलक्ष्य में उसे अपनी मनपसंद का तोहफा खरीद कर देंगे। वह उनके साथ बाज़ार भी जाएगी और दोपहर तक लौटेगी ?'

अनाम ने खामोशी से मुस्कराने की चेष्टा की। वह उखड़े हुए स्वर में बोला, 'वह आए तो उसे खबर कर देना और कह देना कि आज रात वह मेरे साथ खाना खाएगी।'

७

वह तत्काल लौट आया।

घर में घुसते ही उसने देखा कि वरदा ने अपने कमरे के आगे कायले से उसकी बैसाखी का भौंडा चित्र बनाया है। मन में रोष के होते हुए भी उसने उसके प्रति लापरवाही दिखाई। वह खट्-खट् करके ऊपर चढ़ा। अप्रत्याशित उसने अपने पांवों के नीचे लंगड़ा लिखा हुआ देखा। उसने अपने एक पांव से उस शब्द को कुचल दिया। वह जान गया कि यह हरकत वरदा के अतिरिक्त किसीकी नहीं हो सकती।

वह पलंग पर कपड़े खोलकर पड़ गया। तभी डाकिए ने पुकारकर एक चिट्ठी दी। घर की चिट्ठी थी। अनाम को घर की चिट्ठी पढ़ने का तनिक भी शौक नहीं है। वह जानता था कि अभावग्रस्त ज़िन्दगी की एक ही भाषा है। कुछ इने-गिने शब्द हैं। एक ही मांग है कि रुपया भेजो।

एक बार उसने वह चिट्ठी रख दी लेकिन फिर उसने पढ़नी आरम्भ की। छोटी बहिन ने लिखा था—भैया ! हम बड़े कष्ट में हैं। तुम दो-दो महीनों पर भी सौ-पचास रुपया नहीं भेजते ? ऐसी भी क्या 'चित्रकारी' हुई ? तुम कहीं सरकारी नौकरी क्यों नहीं कर लेते ? ज़रा सोचो, मैं बड़ी हो गई हूं, छोटी बहिन बस बड़ी होने वाली है। मां रात-दिन हमारे विवाह

की चिंता में सूखकर कांटा हो रही है। हमसे उनकी दुर्दशा नहीं देखी जाती। और एक तुम हो कि घोड़े बेचकर परदेस में बैठे हो। यह कला-सेवा किस परम्परा की श्रेष्ठ सेवा है? घर का एक-एक सदस्य एक-एक पैसे के लिए तरसे और तुम वहां पर शाही जीवन गुज़ारो, यह कहां का इन्साफ है? अभी तुम्हारा एक मित्र आया था, उसने जो कुछ तुम्हारे बारे में कहा, उससे हमें लगा कि तुम सम्मान और निजी सुख के पीछे अपने परिवार वालों का भी बलिदान कर सकते हो। इतने अभावों में भी मां तुम्हें आशीष लिखती है और शेष तीन बहिनें प्रणाम!

पैसा न भेजो तो न भेजो पर अपनी कुशलता का समाचार ज़रूर दे दिया करो।

तुम्हारी बहिन
सरोज

पैसा! पैसा!! पैसा!!!

वह बड़बड़ाया, 'यह पागल समझते हैं कि मैं यहां पर ऐश कर रहा हूं। मैं ही जानता हूं कि मैं कैसे जी रहा हूं? मैं बेटा हूं इसलिए मैं अपने जीवन की आकांक्षा और उद्देश्य को छोड़कर परिवार की चक्की में पिसकर अपना अस्तित्व मिटा दूं। नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे एक महान् चित्रकार बनना है, और मैं अवश्य बनूंगा।'''और यह मित्र?' जलता प्रश्न अनाम के आगे नाचा। उसने घृणा से मुंह बिचका दिया, 'ये मित्र शत्रु का काम करते हैं। उन्हें मेरा सुखी जीवन पसन्द नहीं। खुद सरकारी नौकरियां कर-करके अपने को बेचते हैं और परिवार की सेवा करके दकियानूसी विचार वाले बड़े-बूढ़ों की सहानुभूति ग्रहण कर लेते हैं। छिः, गिरगिट कहीं के!'''किन्तु मैं भी अपने मित्रों के हक में अच्छा नहीं।' और उसने कुछ घटनाओं का विश्लेषण करके जाना कि उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण अपने प्रत्येक मित्र को हानि पहुंचाई है। उसने किसी भी मित्र पर

कार्टून बनाना नहीं छोड़ा। उनके वास्तविक रूप को विकृत करके उसने उनकी मनचाही खिल्ली उड़ाई। फिर वह अपने दोस्तों से अच्छाई की कैसे उम्मीद रख सकता है ?

नीचे से वरदा की मां चिल्लाई, 'बारह बज रहे हैं और तू अभी तक सोई हुई है वरदा ! ओ री वरदा उठ ! उठ न !'

'बारह !' अनाम चौंका। उसने पत्र को फाड़कर फेंक दिया। 'इन्दु की कल वर्षगांठ है।' उसने सोचा, 'भंवर बाबू उसे मनपसन्द तोहफा देंगे। और वह···?'

उसके पास पैसा ही नहीं है। फिर इन्दु उसके बारे में क्या समझेगी ? भेंट के अभाव में वह उसके प्यार का गलत मूल्यांकन कर लेगी। सोचेगी कि जो भेंट नहीं दे सकता, वह हृदय क्या देगा ? यह पूंजीवादी युग है। आदान-प्रदान पर सम्बन्धों का चिर रहना अवलम्बित है। फिर मनुष्य का अहम् सार्वजनिक स्थानों पर अधिक सम्मान की चाह रखता है। फिर पैसा···? ···पैसा ?

अप्रत्याशित उसके मस्तिष्क में दयाल की घिनौनी और कठोर मूर्ति नाच उठी। एक ऐसे नरपिशाच का हृदयहीन विकृत चेहरा नाच उठा जिस-पर मानवीय संवेदना की हल्की रेखाएं भी नहीं थीं। वह कुछ क्षण तक उस कठोर कंजूस को गालियां देता रहा। फिर वह कपड़े पहनकर वहां से चला।

सीढ़ियों पर वरदा उन्मन-सी बैठी थी। इस बार उसने कोई हरकत नहीं की। वह उसे एक दुर्दमनीय भावना से देखती रही। जब उसने देखा कि अनाम घर से बाहर निकल रहा है तब उसने अपने भाई श्रीश को आवाज़ लगाई कि भीतर आ जाओ।

अनाम ने देखा कि वरदा का छोटा भाई एक लकड़ी को बगल में दबाए उसी तरह हिचकोले खाता हुआ चल रहा है। अनाम देखकर खोखली हंसी हंस पड़ा ताकि उसके अन्तस् का रोष प्रकट न हो।

उसे वरदा की दुष्टता अच्छी नहीं लगी। यह बिलकुल अशिष्टता है किन्तु वह कर ही क्या सकता है! कुछ दुष्टताएं ऐसी होती है जिनके बारे में आदमी चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता। वह तांगे में बैठा हुआ वरदा का विश्लेषण करने लगा। वरदा की आयु अपरिपक्व है और अपरिपक्व का प्यार या तो सब कुछ सहकर देखता है और एक जिज्ञासा भरा स्वयं से प्रश्न करता रहता है कि ऐसा क्यों होता है? अथवा उसमें असमता का विरोध उत्पन्न हो जाता है जिसके द्वारा उसका हृदय घृणा का प्रदर्शन करता रहता है, किन्तु वह घृणा एक उपहास अथवा हल्की दुष्टता बनकर रह जाती है जैसी वरदा की रह गई है।

वह काली और भद्दी लड़की?

अचानक सड़क पर कोहराम मचा। मालूम हुआ कि एक सज्जन एक दुकानदार से दृढ़ता से कह रहे हैं कि वे उसे पैसा दे चुके हैं किन्तु दूकानदार नहीं मान रहा है। तब उक्त सज्जन एक उन्मादी की तरह अपने देश में चल रही धांधलेबाज़ी, नौकरशाही, भ्रष्टाचार और अनाचार की बातें करने लगे। उन्होंने दूध के धोए इन्सान की तरह वर्तमान के सभी लोगों को लुटेरा और ठग कहा पर दूकानदार अपने हठ पर अड़ा ही रहा और उक्त सज्जन को पैसे देने पड़े। इस घटना ने अनाम की विचार-धारा को भंग कर दिया। उसके सामने इन्दु का उल्लास भरा चेहरा नाच उठा। उसके कर-स्पर्श का संवेदन अब भी अनाम के हृदय में हल्का मधुर संगीत उत्पन्न कर रहा था। आज इन्दु भंवर बाबू के साथ अकेली क्यों चली गई? फिर उसने अपने मन को ढाढ़स दिया कि भंवर बाबू के कथन को टालने की उसकी हिम्मत नहीं हुई होगी। उसने सोचा होगा कि इस अस्वीकृति से नाराज़ होकर भंवर बाबू प्रकाशन का कार्य स्थगित न कर दे। ···कुछ ये बनिए होते ही ऐसे हैं। चाहे तो बेटा भी दे दें, नहीं तो बेटी भी छीन ले।

दयाल का मकान आ गया था।

किवाड़ों के समीप पहुंचते ही अनाम को सड़े हुए अन्न की बास आई। उसने नाक के आगे रूमाल देकर दरवाज़ा खटखटाया। अनामिका ने द्वार खोला। उसे देखते ही उसने विस्मय से पूछा, 'तुम यहां ? तुम्हारी तो तबियत खराब है न ?'

'हां, पर दयाल बाबू छुट्टी नहीं देते।'

'ओह ! कितना नीच आदमी है, भगवान उसे कड़ा दंड देगा।'

अनामिका ने संकेत से समझाया कि वे धीरे बोलें। दयाल बाबू के कान बड़े तेज़ हैं।

'क्या कर रहे हैं दयाल बाबू ?'

'सो रहे हैं।'

'उन्हें जगा दो।'

'नहीं।'

'डरती हो ?'

'हां।'

'ठीक कहती हो, कर्जदार को अपनी आसामी से डरना ही चाहिए। अनामिका ! आज में दयाल बाबू को तुम्हारे बारे में कुछ कहूंगा। उनका यह व्यवहार मुझे कतई पसन्द नहीं। तुम दिन-ब-दिन कमज़ोर होती जा रही हो।'

'नहीं, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। ये मेरे लिए देवता समान हैं। इधर मैं इनका ब्याज न दे सकी, इन्होंने मांगा तक नहीं। कल इन्होंने दस रुपये और उधार दिए कि दवा-दारू अच्छी तरह करो। अब आप ही कहिए, ऐसे आदमी की आज्ञा न मानूं तो क्या करूं ?··· दयाल बाबू हृदयहीन और कठोर हैं। उनका कोई भी अपना-पराया नहीं है। वे केवल रुपया चाहते हैं लेकिन मेरे प्रति वे अत्यन्त दयालु और सहृदय हैं।···मैं नहीं चाहती

कि आप कुछ कहकर उनके मन को बदल दें।'

'यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं कहूंगा।' अनाम 'खट्-खट्' करता दयाल के कमरे की ओर बढ़ा। 'खट्-खट्' जैसे ही कमरे के समीप पहुंची वैसे ही दयाल फटे स्वर में चिल्लाया, 'ओह अनाम बाबू, कलाकार, आइए···आइए···!'

अनाम ने बैठते हुए कोमल स्वर में कहा, 'आपको जगाकर बड़ा कष्ट दिया।'

'नहीं अनाम बाबू, एक सूदखोर के लिए इससे अधिक प्रसन्नता और क्या हो सकती है कि कोई उससे उधार मांगने आए।'

अनाम ने सलज्ज नेत्रों से दयाल की ओर देखा। उसने अपने मुख पर अवसाद की छायाएं दौड़ाईं। उसने दास्यभाव दर्शाते हुए कहा, 'एक जरूरत ही ऐसी पड़ गई। मैं आपका पिछला नहीं चुका सका, इसके लिए शर्मिन्दा हूं।'

दयाल ने क्रूरता से अनाम की ओर देखा। उसकी दस रोज़ की बढ़ी हुई दाढ़ी से उसका चेहरा और भी भयानक लगता था। रूखे बाल और मैले वस्त्र उसकी भयानकता में वृद्धि कर रहे थे। वह बोला, 'तुम मेरे स्वभाव को जानकर भी ऐसी गलती क्यों करने आ जाते हो? पहला रुपया दिया नहीं और फिर लेने आ गए।'

अनाम का स्वाभिमान आहत हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर चला जाए किन्तु कल के आयोजन के स्मरण मात्र से उसका अंग-अंग शिथिल हो गया। भंवर बाबू व अन्य लोगों की उपस्थिति में यदि वह श्रेष्ठ चित्रकार की प्रतिष्ठा के अनुकूल भेंट नहीं देता है तो इन्दु उससे ज़रूर नाराज़ हो जाएगी। उसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष तुच्छ होना पड़ेगा तथा बेवकूफों की भांति उनके कहकहों का निशाना बनना होगा। क्या उसमें उस अपमान को सहने की शक्ति है?···नहीं···नहीं! वह उस मर्मान्तक

अपमानजनित पीड़ा को नहीं सह सकता। उसका चेहरा तमतमा उठा। वह ऐसी स्थिति में भी नितान्त शान्त बैठा रहा ताकि दयाल उसके अन्तराल के हाहाकार को न समझे।

'मैं बहुत शर्मिन्दा हूं और वायदा करता हूं कि भंवर बाबू से रुपया लेकर मैं आपको दे दूंगा।' उसका स्वर विनती में डूबा हुआ था तथा उसकी आंखों में करुणा तैर रही थी।

'मैं वायदा-कायदा कुछ नहीं मानता। सच तो यह है कि मैं तुम्हें रुपये नहीं दे सकूंगा।'

'ऐसा न कहिए दयाल बाबू, मेरे घर से पत्र आया है, मेरी मां की तबीयत खराब है, घर पर एक पैसा नहीं है। जरा सोचिए ऐसी स्थिति में आप मेरी मदद नहीं करेंगे तो मेरा क्या होगा।'

'होगा क्या ? मां बीमारी में तड़पती रहेगी और बहिनें अभाव में प्यासे हृदय लिए हर उस सजी-संवरी युवती को देखती रहेंगी जो अपने अन्तस् में सुन्दर भविष्य की मधुर कल्पनाएं और आकांक्षाए लिए मचलती हुई उनके आगे से गुजर रही होगी।'

'दयाल बाबू ! किसीके घाव पर नमक छिड़कने में आपको क्या मिलता है ?'

'यह मैं स्वयं नहीं जानता।'

उसने दुःख से उत्तेजित होकर दयाल की ओर देखा। उसकी दृष्टि में तीव्र घृणा थी। उसके शरीर में जड़ता आ गई थी।

दयाल अपने कन्धों को सिकोड़कर बोला, 'तुम्हें मेरे कथन पर आश्चर्य होता होगा। यह स्वाभाविक भी है। अनाम ! जो व्यक्ति जीवन के धर्म से पलायन करके केवल अपने स्व को सम्मानित-प्रतिष्ठित करने की भूख से व्याकुल हो, उसको पीड़ा देने में ही मुझे आनन्द आता है। फिर मेरे जैसे हृदयहीन व्यक्ति के लिए किसीकी गरीबी और मजबूरी से पिघल

जाना भी ठीक नहीं। यदि मैं दूसरों की विवशता या कष्ट से द्रवित होता हूं तो मेरा व्यापार चौपट हो जाएगा। मैं एक रुपये के बदले सवा रुपया चाहता हूं।'

'दयाल बाबू!' उसने बड़ी कठिनता से कहा, 'बस, एक बार मुझपर और दया कर दीजिए।'

दयाल ने रूखे स्वर में कहा, 'दया का व्यापार से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि कसाई निरीह बकरे या मुर्गे को दया की दृष्टि से देखे तो उस बेचारे का क्या होगा? दया एक अलग भावना है जिसका प्रयोग कहानियों के आदर्शवादी लेखक अपने नायकों में करते हैं या वे महन्त और दाता उस भावना का उन पर प्रदर्शन करते हैं, जिनका दान उनके पास महादान के रूप में आता है। मैं इसको अपने हृदय में भी नहीं रखता। मैं भूखे को, जरूरत-मन्द को, किसीकी इज्जत जाती हुई को बचाने के हेतु, रुपया देता हूं और आवश्यकता पर देता हूं और समय पर अपनी रकम उससे लेकर उसका सोना या मकान वापस कर देता हूं।···लेकिन तुम्हारे पास क्या है? तुम्हारे हैंड-नोटों की कीमत क्या है? बाजार में वे आधे दाम पर भी नहीं बिक सकते। ऐसे आदमी पर बार-बार कैसे विश्वास किया जा सकता है और उसे कैसे कर्ज दिया जा सकता है।' दयाल ने ग्लानिपूर्वक कन्धा हिलाकर गहरा मौन धारण कर लिया। उसका चेहरा बिलकुल भावशून्य था।

अनाम का मुख दयाल के उत्तर से पीला प्रतीत होने लगा। यदि अभी वह अपना चेहरा शीशे में देखता तो मिर्गी में तड़पते व्यक्ति जैसा लगता।

दयाल अब अपने घुटनों को बजा रहा था और ऐसे भावों का प्रदर्शन कर रहा था जैसे उसके मन में उसकी इस करुणाभरी अस्वीकृति का कोई प्रभाव नहीं है।

अनाम ने बैसाखी संभाली। उठने का प्रयास किया। उसे लगा कि उसमें तनिक भी शक्ति नहीं है। चलने के पूर्व उसने दयाल को नमस्कार

किया। दयाल ने इसका उत्तर बड़ी लापरवाही से दिया।

कमरे के बाहर अनामिका खड़ी थी। उसका जर्जर चेहरा अनाम के उदास मुख को देखकर शंकाओं की रेखाओं से भर आया। वह समझ गई कि दयाल बाबू ने अनाम बाबू को कोरा उत्तर दे दिया है।

'क्या हुआ!' प्रश्नसूचक दृष्टि फेंककर अनामिका ने पूछा। क्षण भर के लिए अनाम रुका और फिर अत्यन्त धीमे से जलते हुए स्वर में वह बोला, 'यह धन को छाती पर रखकर जलेगा।'

'आपको रुपयों की ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी?'

'घर से चिट्ठी आई है वे बड़ी तंगी में हैं।' वह चुप हो गया पर अनामिका को उसका मन बड़ा उद्विग्न लगा। अनामिका ने तुरन्त उसे रुकने के लिए कहा और स्वयं दयाल के कमरे में गई। दयाल अपनी तिजोरी में से नोटों को निकालकर गिन रहा था। पांवों की आहट पाकर उसने तुरन्त नोटों को तिजोरी में रखकर उसे बन्द कर दिया। अनामिका को देखकर वह खिसियानी हंसी के साथ बोला, 'तुम!'

'मैं आपसे एक विनती करने आई हूं।'

'समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो। कहोगी कि कुछ रुपया और उधार दे दो। लेकिन मैं फिलहाल ऐसा नहीं कर सकूंगा। मैं तुम्हें परसों पन्द्रह रुपये देकर पचीस का हैंडनोट लिखाऊंगा। पचीस क्यों? इसलिए कि दस पहले वाले और पन्द्रह तब के। इन रुपयों का तुम्हें ब्याज नहीं देना होगा।'

अनामिका शांत दृष्टि से दयाल को देखती रही।

दयाल कुछ परेशान-सा बोला, 'मैंने कहा, उसे तुमने सुना नहीं?' दयाल फिर घुटने बजाने लगा।

अनामिका उसके समीप बैठ गई। बोली, 'अनाम बाबू को इस बार रुपया दे दीजिए। मैं आपसे हाथ जोड़ती हूं।'

दयाल ने अनामिका को अभिप्राय भरी पैनी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में एक जिज्ञासा थी जो यह समझना चाहती थी कि इस वाक्य के पीछे कौन-सी भावना काम कर रही है।

'तुम उनकी सिफारिश क्यों कर रही हो ? क्या तुम नहीं जानतीं कि यह मेरा पहले से ही कर्जदार है।'

'जानती हूं।'

'फिर इसे कर्ज देना कहां की बुद्धिमानी है।'

'बुद्धि की बात मैं नहीं करती लेकिन उन्हें सख्त जरूरत है दयाल बाबू, आप इन्हें गरीब भले ही कह लें पर बेईमान नहीं कह सकते। इनके पास रुपये आते ही ये आपका सबसे पहले चुकता कर देंगे ?'

'खाक चुकता कर देंगे। ये चित्रकार हैं। ये कला का उत्थान, उद्धार और उसे एक नया मोड़ देने में लगे हुए हैं। देखती नहीं, ये सभी बड़ी-बड़ी फिलासफी और नैतिकता की बातें करते हैं।—धर्म एक ढकोसला है और भगवान एक बकवास। समाज में क्रांति आनी चाहिए और नारियों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।···लेकिन ये सब बातें उस समय हवा हो जाती है जब पास में रुपया नहीं होता है। देखा नहीं अनाम का चेहरा, लगता है वर्षों से बेचारा बीमार है, बीमार।'

'कुछ भी हो, आपको···।' अनामिका ने भरपूर स्नेह भरी दृष्टि से दयाल को देखा। दयाल कांप-सा गया। तनिक उखड़े-उखड़े स्वर में बोला, 'नहीं, नहीं, मैं इसे नहीं दूंगा, फिर अंग-भंग व्यक्ति से वास्ता जहां तक हो सके कम ही रखना चाहिए।'

अनामिका ने दयाल को हाथ जोड़ दिए। विगलित स्वर में उसने कहा, 'इस बार आपको मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। यदि अनाम बाबू ने यह रकम नहीं दी तो मैं दे दूंगी।'

'तुम्हें अनाम से इतनी हमदर्दी क्यों है ?'

अनामिका गंम्भीर स्वर में बोली, 'किसी परिवार में पैसा न होने से उस परिवार को कितनी भयंकर यंत्रणाएं उठानी पड़ती हैं इसका अनुभव मुझे है। ऐसा संभव है कि अभाव मनुष्य को पतन में डाल दें।'

'लेकिन···!'

अनामिका ने दयाल के पांव पकड़ लिए। दयाल अपने पांवों को छुड़ाकर बोला, 'मुझे छुओ मत, छुओ मत।···अनाम को भीतर भेज दो।'

कुछ क्षण पश्चात् अनाम पुनः दयाल के कमरे में आया। हैंडनोट लिखकर उसने ढाई सौ रुपये अनाम का दे दिए और अनाम अनामिका को धन्यवाद देकर चल पड़ा।

रास्ते में जाते हुए वह सोच रहा था, 'यह कठोर प्राणी अनामिका की बात क्यों मानता है? क्या वह अनामिका से प्यार करता है? क्या इतना स्वार्थी और लोलुप इन्सान के मन में मानवीय संवेदनाओं की लहरें दौड़ती हैं? क्या वह किसीसे प्यार कर सकता है?'

८

अगले दिन संध्या समय इन्दु के यहां पार्टी थी। आंगन में कुछ मेजों को आपस में मिलाकर एक बड़ी मेज बनाई गई, जिसपर सफेद चादर बिछा दी गई। मेहमानों के लिए रसगुल्ले, बरफी और समोसे के साथ-साथ चाय का प्रबंध भी किया गया।

ठीक समय मेहमानों का आगमन शुरू हो गया। इन्दु एक मिस्ट्रेस थी, लेखिका थी और थी मिलनसार युवती। उसके मित्रों की संख्या, विशेषतः युवतियों की अधिक थी। अनाम के कहने पर, इन्दु ने चाहते हुए भी, स्थानीय लेखकों को खुलकर निमन्त्रित नहीं किया। अनाम का ऐसा विश्वास था कि वे हमारे स्टैन्डर्ड के नहीं हैं और वे केवल हमें उपहास के पात्र ही बना सकते हैं।···हां, उस पार्टी में कुछ बुजुर्ग लेखक जो सेठिया-साहित्यकारों एवं

मिनिस्टरों द्वारा संचालित पत्रों के सम्पादक थे आज दूल्हे बने हुए उपस्थित हुए थे।

भंवर बाबू की शान निराली थी। वे परमसुख धोती और बढ़िया सिल्क का कुर्ता पहने हुए थे और उपस्थिति से घुल-घुलकर बातचीत कर रहे थे। उनके हाव-भाव से लगता था कि हर महिला और हर पुरुष उनसे मिलने के लिए आतुर है। अनाम एक मेज के कोने में बैठा हुआ कुढ़ रहा था। नाइलोन की साड़ी में सज्जित इन्दु भवंर बाबू से कितनी घुल-घुल-कर बातें कर रही है और अपनी सहेलियों से उनको किस तरह हंस-हंसकर मिला रही है, यही सब उसको अत्यन्त कष्टप्रद लग रहे थे।

तब अनाम के मस्तिष्क में कल की घटना साकार हो उठी। दयाल से रुपये उधार लेकर वह सीधा इन्दु के यहां गया। इन्दु अपने कमरे में बैठी हुई कल की पार्टी के आयोजन का हिसाब लगा रही थी। अनाम को देखते ही वह बोली, 'मैं बड़ी शर्मिदा हूं कि पहले तुमसे नहीं मिल पाई। भंवर बाबू स्वयं आ गए थे इसलिए उनके साथ जाना पड़ा।'

'कोई बात नहीं।'

'बैठो तो सही।' इन्दु ने कुर्सी की ओर संकेत किया।

'मैं बैठने नहीं आया, तुम्हें अपने संग ले जाने आया हूं।'

'क्यों?'

'पहले यह बताओ, भंवर बाबू ने तुम्हें क्या तोहफा दिया?'

'उन्होंने?'··· इन्दु कहती-कहती रुक गई, 'नहीं बताऊंगी, तोहफे की अहमियत मारी जाएगी।'

'फिर मैं भी तुम्हें बाद में ही बताऊंगा। हालांकि मेरे पास 'कार' नहीं है, इसलिए मेरे साथ तुम्हें तांगे में ही चलना पड़ेगा।'

'पर कहां?'

'चौड़े रास्ते तक?'

'यदि शाम को चलें तो तुम्हें कोई एतराज होगा ?'

'नहीं !' उसकी आकृति एकदम बदल गई और वह तुरन्त दरवाज़े की ओर घूम गया।

इन्दु अनाम की नाराजगी भांप गई। उसने तुरन्त जाकर उसे रोका और तुरत चलने का आश्वासन दिया। अनाम कुछ नहीं बोला, वह इन्दु को जलती निगाहों से देखता रहा। इन्दु ने तुरन्त कपड़े बदले और वह अनाम के साथ चल पड़ी।

गंतव्य स्थान पर पहुंचकर अनाम ने इन्दु से कहा, 'तुम अपने मनपसंद तोहफा खरीद सकती हो। मैं भंवर बाबू की भांति तुम्हें सोने का ताज-महल नहीं दे सकता, फिर भी तुम्हारी इच्छा को पूर्ण करने की चेष्टा करूंगा।···बोलो, क्या चाहती हो ?'

अप्रत्याशित इन्दु गंभीर हो गई। सड़क का नया घुमाव आ गया था। वह एक ओर अनाम को लेकर बोली, 'तुम बार-बार भंवर बाबू का नाम क्यों लिया करते हो ? उनके प्रति तुम्हारी जलन अच्छी नहीं है। उन्होंने हमारा भला ही किया है।'

'मैंने कब कहा कि उन्होंने हमारा बुरा किया है ? लेकिन किसी कलाकार को इन पूंजीपतियों का पिछलग्गू बनना भी तो शोभा नहीं देता। जरूरत से अधिक महत्व भी ठीक नहीं।'

'ऐसी तो कोई बात नहीं है।'

'फिर अकेली उनके साथ क्यों गई थी ? जानती हो, तुम्हारा उनके साथ इस तरह घूमना किस वातावरण को जन्म दे सकता है ?'

'ओह ! अब समझी, तुम यह कहना चाहते हो कि उनके साथ घूमने पर लोग तरह-तरह की बातें करेंगे, तो उन्होंने हमारी और तुम्हारी मित्रता पर भी कम कीचड़ नहीं उछाला है !···अनाम ! हमें इनसे नहीं डरना चाहिए, हमें इस तरह सोचना भी नहीं चाहिए। हम दोनों अच्छे दोस्त हैं,

हमें जीवन के नये मानदंडों के साथ चलना चाहिए, जीना चाहिए।'

तभी एक एंग्लो इंडियन जोड़ा जोर से बहस करता हुआ उनके पास से गुजरा।

इन्दु सावधान होती हुई बोली, 'ओह! हम भावावेश में स्थान की अनुकूलता को भी भूल बैठे।'

बात का प्रसंग बदल गया। अनाम ने तुरन्त पूछा, 'तुम्हें कौन-सी वस्तु पसंद है।''

'जो तुम्हारी पसन्द वह मेरी पसन्द।'

'फिर चलो।' उन दोनों ने छोटी चौपड़ की ओर प्रस्थान किया। तब वे एक घड़ीवाले की दूकान पर पहुंचे और अनाम ने एक सौ पन्द्रह रुपये में इन्दु के लिए एक घड़ी खरीदी।

इसके बाद वे रामबाग के एक छोर पर बैठकर प्रेम का वार्तालाप करने लगे। अनाम ने जाना कि इन्दु वस्तुतः उसे ही प्यार करती है। इस दिन उसने एक नारी के श्वासों की उष्णता और धड़कनें सुनीं। वह लंगड़ा इन्सान, जिसे युवतियां या तो स्वार्थवश ही प्रेम किया करती थीं अथवा दया से द्रवित होकर उसपर करुणा की जगह प्रेम के भाव प्रकट किया करती थीं, एक जवान युवती के स्वाभाविक प्रेम का स्पर्श पाकर बेचारा धन्य-धन्य हो गया। उसे लगा यह पावन प्रेम एक चिरन्तन आलोक बनकर संसृति में बिखर जाए और उसके जीवन में आनन्द का वर्षण कर दे और एक ऐसे मीठे दर्द की अमिट अनुभूति की सर्जना कर दे जो उसकी नस-नस में समा जाए।

वे क्षण! जीवन के परम सुख और विनम्र भावनाओं से भरे क्षण! आत्मा की प्रशांत कोमलताओं को लिए क्षण! वे क्षण अक्षुण्ण हो, अमर हो!

अनाम के स्मृति-पटल पर उन क्षणों की चिरन्तनता के लिए सहस्रों स्वर गूंज पड़े। वह टेबल पर इस तरह निस्पंद पड़ा था जैसे उसमें प्राण ही

न हो। मधुर कल्पना में वह भूल गया था कि वह कहां बैठा है।

अकस्मात भंवर बाबू ने उसके विचारों के सागर में कंकड़ फेंका।

'किस विचार में खो गए अनाम जी?'

'ओह! किसीमें नहीं।' अनाम ने मुस्कराने की चेष्टा की।

'मेरा विचार है कि पार्टी की कार्यवाही शुरू की जाए।'''केक का सिस्टम हालांकि विदेशी है पर है मज़ेदार, अतः इसका आयोजन रख ही लिया गया है। अब मैं अपना तोहफा भेंट करूंगा, अनाम बाबू?'

भंवर बाबू ने हिन्दी का टाइपराइटर उठाकर इन्दु को दिया। इन्दु ने मुस्कराकर उनका अभिवादन किया। भंवर बाबू ने भीड़को सम्बन्धित करके कहा, 'अब इनके लिए सबसे महत्व की चीज़ यही है और मैं आशा करूंगा कि आप विश्व की एक महान लेखिका बनें।' तब उन्होंने गर्व से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि में एक पूंजीपति का अहम् नग्न होकर नाच रहा था। अनाम उसे नहीं सह सका। उस गर्वभरी दृष्टि ने, जो उसे भंवर बाबू की ओर से चुनौती दे रही थी, उसे तनिक आवेश में भर दिया। वह तुरन्त अपनी बैसाखी लेकर उठा। इन्दु की ओर बढ़ा और अपनी जेब से घड़ी निकालकर उसने इन्दु को दी। देकर उसने भंवर बाबू की ओर देखा और फिर इन्दु के न चाहते हुए भी उसने अपने हाथ से उस घड़ी को उसे पहना दिया।

एक दुर्घटना हो गई—केवल अनाम के लिए।

अकस्मात वकील दयाल ने प्रवेश किया। उसके हाथ में एक छोटी-सी पुस्तिका थी—चार-छह आने की। नाम था—पैसा बचाइए और अपव्यय न कीजिए।—लेकिन उसने ज्योंही अनाम को हीरो की तरह घड़ी पहनाते देखा तो एक तरस भरी हंसी हंस पड़ा। अनाम का शरीर पानी-पानी हो गया। वह तुरन्त अपनी कुर्सी की ओर बढ़ा लेकिन जल्दबाजी में उसका पांव अटक गया और वह गिर गया।

समीप खड़े भंवर बाबू और इन्दु ने उसे सहारा दिया। दो एंग्लो इंडियन लड़कियों ने एक लंबी आह छोड़कर दुखी भाव दर्शाए, 'बेचारा ! ···'

भंवर बाबू ने कहा, 'जब आपको मालूम है कि आप तेज़ी से नहीं चल सकते, फिर आप ऐसी गलती क्यों करते हैं ?'

अनाम ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। वह अपनी कुर्सी पर नीची गर्दन करके बैठ गया। थोड़ी दूर पर एक महिला दूसरी महिला से कह रही थी, 'आदमी सुन्दर है पर है लंगड़ा।'

लेकिन अनाम स्थिर होकर बैठा था।

एक संभ्रात महिला ने प्रवेश किया। इन्दु ने उसका आगे बढ़कर सम्मान किया। यह महिला किसी जमींदार की स्त्री थी और अपनी आदत के अनुसार वह सबको हेय दृष्टि से देख रही थी जैसे उसकी दृष्टि में यहां की उपस्थिति अत्यन्त साधारण है और ये सभी लोग उसकी श्रेष्ठता से बहुत नीचे हैं।

अनाम ने साहस करके दयाल की ओर देखा। दयाल अपनी पुस्तक इन्दु को भेंट करते हुए कह रहा था, 'इस पुस्तक का हमें अपने जीवन के मूल सुखों को चिर बनाए रखने के लिए महाग्रंथ गीता की भांति चिन्तन-मनन करना चाहिए। मैं समझता हूं कि इन सब तोहफों में यह तोहफा श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें न तो बड़प्पन का प्रदर्शन है और न ही विवशता का।'

तब उसने तीखी दृष्टि से अनाम की ओर देखा। उस दृष्टि में प्रताड़ना लहरें मार रही थी।

केक काट दी गई। सभी ने इन्दु के चिरायु होने की कामना की।

कुछ संगीत का आयोजन हुआ। हंसी-मजाक के वातावरण में दो ही नीरस व्यक्ति लग रहे थे। एक दयाल जी, जो कभी-कभी आग्रह पर हंस दिया करता था और दूसरा अनाम, जिसकी हंसी गहरी चिंता में विलीन हो गई थी।

उस पार्टी में आकर्षण के केन्द्रबिन्दु ये ही तीन जने थे—लखपति साहित्य-प्रेमी भंवर बाबू, इन्दु और वह जमींदार की पत्नी जो निरन्तर प्रत्येक को हेय दृष्टि से देख रही थी।

९

वह सम्पूर्ण रात्रि अनाम ने खिड़की की राह गहरे अन्धेरे में जीवन के कई प्रश्नों को ढूंढ़ने में गुजारी। वह निराशा के गहन आवरण में आशा की ज्योति के दर्शन करता हुआ सोचने लगा कि उसकी टांग ठीक हो सकती है या नहीं। आज जब वह पार्टी में गिरा था तब कितने लोगों की दया भरी आंखें उसकी ओर उठी थीं और स्त्रियों ने उसपर कितना दर्द भरा रहम खाया था। क्या एक दिन प्रतिमा की मां की तरह इन्दु की मां भी कह देगी कि उसे अपनी बेटी के लिए लंगड़ा पति नहीं चाहिए? यदि इन्दु की मां राजी भी हो गई तो वह अपनी बेटी के संग रहेगी। उसके जीवन का आधार इन्दु ही है।···इन्दु! अन्धेरे में इन्दु का चेहरा अंगारा-सा दीप्त हो उठा। इन्दु उसे कभी भी इन्कार नहीं करेगी। उन दोनों का एक पथ है, उस पथ के लिए प्रत्येक एक दूसरे के लिए सच्चा साथी बन सकेगा। लेकिन उसकी चार बहिनें! सूखे-सूखे मुख और धंसी-धंसी आंखें। जर्जर खंडहर की भांति जिनके शरीर हो गए हैं। उसकी वे बहिनें कंकालों की भांति उसके सम्मुख खड़ी हो गईं। वे मुस्कराने का प्रयत्न कर रही हैं लेकिन मुस्कानें उनके पीले अधरों से बहुत दूर जा चुकी हैं। उनके कदम इतने दुर्बल हो गए हैं कि वे हिरणियों की भांति सरपट दौड़ नहीं सकतीं। वे हथिनियों की मतवाली चाल से औरों का मन भी नहीं मोह सकतीं। घुटा-घुटा सा जीवन! नीरस और निस्पन्द!

प्रीत की वे अनुभूति भी नहीं कर सकतीं। इस उम्र में जब हर युवती पति या प्रेमी की मनोकामना रखती है, तब उसकी बहिनें अभावों में

चिड़चिड़ी और अन्तर्मुख हो रही हैं अथवा उनका भूखा शरीर चाय की प्याली और स्वादिष्ट भोजन पर विश्वास की सीमा का उल्लंघन करके अपने आपको छला लेगा। उनका जीवन बरबाद हो जाएगा। वे कलंकित होकर मुंह छुपाती फिरेंगी और आसरा न पाकर आत्महत्याएं कर लेंगी।

'यह सम्भव है।' उसने मन ही मन जोर देकर कहा, 'उसने ऐसी अभाव-ग्रस्त गरीब युवतियों की कई कहानियां पढ़ी हैं। तब क्या उन कहानियों की नायिकाओं की पुनरावृत्ति उसके अपने घर में होगी?···नहीं। वह ऐसा नहीं होने देगा पर ऐसा होगा ही! परिस्थिति से संघर्ष निर्बल नहीं कर सकता। वह सोच रहा था कि उसका अहम् और उसके विचार एक नई प्रेरणा और क्रान्ति के प्रतीक हैं!···क्यों भला, एक व्यक्ति अपने जीवन के उद्देश्यों और लक्ष्य को छोड़कर परिवार के घिनौने वातावरण में अपने आपको खत्म करे? उसने पलंग पर लेटकर गम्भीरता से विचरना शुरू किया, 'मैं एक चित्रकार हूं। कला में नई स्थापनाओं और पुरानी परम्पराओं को खत्म करने वाला। मेरी बहिनें क्यों नहीं नौकरी करतीं? क्यों नहीं कमातीं? उन्हें भी भगवान ने दो हाथ-पांव दिए हैं, खोपड़ी दी है, आंखें दी हैं, फिर क्यों वे अपने भाई पर आश्रित रहती हैं जबकि उसका भाई स्वयं लंगड़ा है?···मां का कहना है कि यह उसके कुटुम्ब की मर्यादा के प्रतिकूल है। मैं कौटम्बिक गौरव को लड़कियों को नौकरी करवाके नहीं खोना चाहती।···अनाम की आंखों के आगे रात के अंधेरे के अतिरिक्त एक तिमिर आवरण और छा गया। उसने अपने आपको धिक्कारा तब उसके आगे एक छोटा-सा पृष्ठ स्वयं खुल पड़ा। उसकी मां का खत आया था। अभाव का रोना रोते-रोते उसने लिखा था, 'तुम बड़े शहर में क्यों चले गए, इसको मैं अब समझी हूं। यहां कम से कम तुम मेरी रोटियों का प्रबन्ध तो कर देते थे लेकिन वहां तुम इससे भी छुट्टी पा गए। आंखों के आगे तड़पते नंगे इन्सान को देखकर सबको लज्जा आ जाती है।

वह उनके लिए कुछ करता है।'''तुमने लिखा कि अभी मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। साल में आपको दो सौ भेज चुका हूं।'''लेकिन तुम्हारे मित्र कहते हैं कि तुम एक महीने का तीन सौ खर्च करते हो।'''तुमने लिखा कि मैं अधिक नहीं कर सकता, मेरा भी जीवन के प्रति एक ध्येय और एक लक्ष्य है कि मैं बहुत बड़ा चित्रकार बनूं तथा हर कलाकार को कुछ बनने के लिए 'त्याग' करना पड़ता है।'''यह त्याग शब्द मुझे जंचा नहीं मेरे बेटे, वस्तुतः त्याग एक बहुत-बड़ी चीज़ है जो दूसरे के सुखों से सम्बन्धित होती है। तनिक सोचो, यदि तुम्हारा बाप क्लर्की में अपना जीवन खोकर तुम्हें इतना नहीं पढ़ाता तो तुम कहीं पर साधारण नौकर नहीं होते ? और तुम्हारे महान बनने के सपने सपने ही न बने रहते ?' इस बात को पढ़कर अनाम को गुस्सा आया। यह कटु सत्य असह्य-सा उसके मन में ध्वनित-प्रतिध्वनित होता रहा। लेकिन अनाम दो-तीन दिन तक गम्भीर और चिन्तित रहा, बाद में वह महत्वाकांक्षी इन्सान आकाश का स्पर्श करने के प्रयास में पुनः संलग्न हो गया।

और आज एक भिखारी की भांति वह दयाल से रुपये उधार लेकर आया। बहिनों और परिवार की भूख की दुहाई दी। ऐसा कुशल अभिनय किया जैसे उसके जीवन का सर्वोपरि सुख उसके अपने परिवार का सुख है। लेकिन उन्मत्त प्यासे प्राणी की भांति उन रुपयों को प्यार की बलिवेदी पर लुटा आया।'''यदि वह नहीं लुटाता तो इन्दु बुरा महसूस करती और उसे सभी हेय दृष्टि से देखते, विशेषकर भंवर बाबू !

उसने ईर्ष्यालु व्यक्ति की तरह भंवर बाबू पर थूका। उसे प्रतीत हुआ कि भंवर बाबू उसके प्रतिद्वन्द्वी रूप में आ खड़े हुए हैं।

यकायक वह विद्रूप की हंसी हंसा। समीप कोई होता तो वह अनाम की इस हरकत को पागल की हरकत के सिवाय कोई संज्ञा नहीं देता।

उस हंसी में उसका अहम् झलक रहा था जैसे वह कह रहा हो कि

भंवर बाबू, इन्दु आपकी नहीं हो सकती, नहीं हो सकती ! वह एक लेखिका है, जिसके हृदय में मानवीयता अधिक है। जो एक कलाकार पर ही मोहित हो सकती है, जो उपकार का बदला प्रत्युपकार से ही दे सकती है।

फिर उसे लगा कि वह बहुत थक गया है। उसने जम्हाई ली और सवेरे ही भंवर बाबू से मिलने की सोचकर सोने का प्रयास किया। उसे यह भी मालूम नहीं हुआ कि कब गहरी नींद आई।

अनामिका ने उसे ठीक आठ बजे उठाया। आंखें मलते हुए उसने अनामिका से कहा, 'मुझे सात बजे भंवर बाबू के यहां जाना था, तुमने मुझे क्यों नहीं उठाया ?'

'आप गहरी नींद में सोए हुए थे।'

'गहरी नींद !'

उसने चाय रखते हुए कहा, 'ऐसी गहरी नींद जिसमें, बड़े विचित्र सपने आते हैं। आप नींद में कभी हंस रहे थे और कभी रो रहे थे। ये सपने भी कितने विचित्र होते हैं ?'

अनाम ने अनामिका की बातों पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। वह तुरन्त तैयार होकर भंवर बाबू के घर की ओर चल पड़ा।

१०

जब अनाम ने भंवर बाबू के ड्राइंगरूम में प्रवेश किया तब वहां गहरा सन्नाटा था। उस सन्नाटे में अत्याचारी के नालेदार जूतों की तरह अनाम की बैसाखी की 'खट्-खट्' गूंज रही थी। वरदा ने आज सीढ़ियों पर लिखा था, 'लंगड़े से जो प्यार करेगा, वह बहुत दुःख पाएगा।' इसे पढ़कर अनाम का मूड खराब हो गया था। वह पगली लड़की उसे क्यों तंग करती है, यह उसकी समझ में नहीं आया। वह रास्ते भर इसी कारण उलझन में पड़ा रहा।

यहां गहरा सन्नाटा था। भंवर बाबू तथा इन्दु को गंभीर मुद्रा में देखा तो उसे अकस्मात् उन युवक और युवती का ख्याल आ गया जो एकांत पाकर मुक्त चुहलबाजियां करते हैं और किसी बुजुर्ग को आता देखकर ऐसे सयाने बन जाते हैं जैसे वे कभी उद्दंड नहीं हो सकते।

अनाम ने अर्थभरी दृष्टि उन दोनों पर डाली और फिर प्रश्नवाचक स्वर में बोला, 'आप दोनों बड़े गंभीर हैं ?'

इन्दु ने केवल मुस्कराने की चेष्टा की और भंवर बाबू ने कहा, 'हम सोच रहे थे कि आपकी टांग ठीक हो सकती है कि नहीं ? क्या आपने कभी किसी डाक्टर से सलाह ली थी ?'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'मैं जननता हूं, इसके लिए हजारों रुपयों की जरूरत है ?'

'मनुष्य चाहे तो रुपयों का प्रबन्ध कर सकता है।'

'आप बड़े आदमियों की बातें करते हैं। जिनके चुटकी बजाते रुपया आता है।'

इन्दु ने बात को समाप्त करते हुए कहा, 'व्यर्थ की बातों को छोड़िए, चलिए अपनी बात पर आइए।'

भंवर बाबू ने तुरन्त कहा, 'इन्दुजी का कहानी-संग्रह 'द्रोपदी का करुण विलाप' तैयार है। आपका एलबम कल प्रेस में चला जाएगा। इन्दु जी का कहना है कि मैं आपको पांच सौ रुपये एडवांस दे दूं।'

'केवल पांच सौ ?'

'उससे अधिक मैं नहीं दे सकता। हिन्दी में ईमानदारी से इतना भी कोई नहीं देता है। मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आपका यह एलबम कोई भी छापने को तैयार नहीं हुआ था।'

'फिर आप क्यों छाप रहे हैं ?' उसने नाराज़गी के साथ कहा। वह इस

अपमान को नहीं सह सका।

इन्दु ने उसे शांत करते हुए कहा, 'अनाम! बात-बात में उत्तेजित होना अच्छा नहीं। यह व्यापार है, इसमें धैर्य और समझदारी की ज़रूरत है।'

अनाम को यह उपदेश सूइयों के चुभोने जैसा लगा। उसने इन्दु की ओर घूरा। इन्दु के नेत्रों में शिकायत थी। ऐसी शिकायत जिसमें उनका प्यार भी होता है।

'मैं इसे छापूंगा। मेरे सामने लौटाने का प्रश्न ही नहीं है। मुझे आपकी और इन्दु जी की ही पुस्तकें छापनी हैं। मैं आपकी नई कला को चमकाना चाहता हूं।'

'फिर इन्दु जी जो कह देंगी, वह मुझे मंजूर होगा।'

'हुई न बात!' भंवर बाबू मुस्कराए।

इसी बीच एक मोटी स्त्री ने जिसकी कमर ढोल की तरह गोल-मटोल थी, ड्राइंग रूप में प्रवेश किया और उसी समय वह वापस भी चली गई।

इन्दु की आंख फट गई। लेकिन भंवर बाबू ने बेहयाई की हंसी के साथ कहा, 'आप इन्हें नहीं जानतीं, ये मेरी धर्म-पत्नी हैं। मैं अभी आया।'

उनके जाते ही अनाम ने घृणा से मुंह बिचकाकर कहा, 'ये इनकी धर्म पत्नी हैं या भैंस।'

इन्दु ने चुप रहने का संकेत किया।

भंवर बाबू तुरन्त आ गए और बोले, 'एक ज़रूरी काम आ गया था।··· हां, फिर मैं आपको पांच सौ रुपये दूंगा पर अभी नहीं, एक माह बाद। क्यों अनाम जी, आपको बिना रुपयों के कष्ट तो नहीं होगा?'

अनाम कुछ कहता, इसके पहले ही इन्दु बोल पड़ी, 'नहीं भंवर बाबू, अनाम जी को रुपये-पैसों की क्या कमी है? इतने प्रसिद्ध चित्रकार और कार्टूनिस्ट हैं कि जहां भी जाएंगे, रुपया बटोर लाएंगे।'

अनाम अब क्या कहता? गर्वित स्वर में बोला, 'आप अपनी मर्जी से

दे दीजिएगा। चिंता की कोई बात नहीं।'

'फिर यह तय रहा कि मैं आपका यह एलबम कल प्रेस में दे दूं। छपाई और सजावट का सारा काम आपके जिम्मे रहा।'

'कोई बात नहीं।'

इसके बाद चाय पीकर वे दोनों—इन्दु और अनाम—वहां से चल पड़े। गली के पार पहुंचते ही अनाम ने इन्दु से शिकायत भरे स्वर में कहा, 'तुम्हें उस सेठ के बच्चे की हां में हां नहीं मिलानी चाहिए, तुम्हें उसे डांटना चाहिए था, वह कला के बारे में क्या जानता है?'

'भंवर बाबू निरे बुद्धू नहीं हैं।' इन्दु ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा, 'उन्हें साहित्य और कला का अच्छा ज्ञान है। वे भी तुम्हारी तरह विदेशी साहित्य का अध्ययन करते हैं।'

अनाम चिढ़ गया, 'तुम भी कभी-कभी बहक जाती हो। मैं भंवर बाबू को बहुत पहले से जानता हूं। वे केवल उपन्यासों के नाम और उनके लेखकों को ही बता सकते हैं। चित्रकारी में उनका ज्ञान शून्य के बराबर है। कदाचित वे दो-चार चित्रकारों का नाम भी नहीं बता सकते हैं। ये खोखले बुद्धिजीवी हैं जिनका अपना कोई ठोस आधार नहीं।'

इन्दु ने रुखाई से कहा, 'हो सकता है।'

बात कुछ देर के लिए रुक गई।

दोनों ने अलग-अलग रिक्शे में बैठते हुए एक दूसरे से विदा मांगी। इन्दु को अपने स्कूल जाना था।

रास्ते भर अनाम यही सोचता रहा कि इन्दु बदल रही है। घर तक पहुंचते-पहुंचते यह विचार काफी दृढ़ हो गया।

सीढ़ियों में वरदा बैठी हुई कुछ लिख रही थी। बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर वह चौंक पड़ी। अनाम के समक्ष वह अकड़कर खड़ी हो गई।

अनाम ने उसके सामने खड़े होकर पूछा, 'तुम बाज नहीं आओगी?

देखो, मैं मां को तुम्हारी शिकायत कर दूंगा।'

'कर दीजिए, मैं किसीसे नहीं डरती।'

वरदा का स्पष्ट उत्तर सुनकर वह विस्मित रह गया। वरदा की निर्भीकता उसे नई जान पड़ी। उसकी आंखों में विद्रोह की चिनगारियां जल रही थीं। अनाम ने उसे परामर्श देने के स्वर में कहा, 'तुम्हें अब अपना बचपना छोड़ देना चाहिए, अब तुम बड़ी हो गई हो।'

'मैं अपनी इच्छा के अनुसार करूंगी। भले-बुरे को मैं खूब समझती हूं।'

'तुम्हारी मां को बुलाऊं?'

'बुला लीजिए।'

अनाम 'बच्ची है' सोचकर ऊपर की ओर चढ़ा। अभी वह दो सीढ़ियां नहीं चढ़ पाया था कि वरदा खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसकी हंसी में तीव्र व्यंग्य था। अनाम उसे नहीं सह सका। उसने पलटकर देखा। बैसाखी का संतुलन बिगड़ गया। वह गिरता-गिरता बचा। उसकी कुहनी पर खरौंच आ गई।

तभी वरदा रुक-रुककर बोली, 'अधिक चोट तो नहीं आई अनाम बाबू, सहारा दूं?'

और वह हंसती हुई उसकी आंखों से ओझल हो गई।

भीतर पहुंचते-पहुंचते अनाम का हृदय भर आया और उसके मन में आया कि वह दूर निर्जनता में जाकर बस जाए, जहां उसपर दया करने वाला और व्यंग्य कसने वाला कोई भी न हो।

११

अनाम चार दिन तक किसीसे नहीं मिला। अनामिका उसे उसकी उदासी के बारे में बार-बार पूछती थी लेकिन अनाम 'मन ठीक नहीं' कहकर खामोश हो जाता था। उदासी और एकान्त के जीवन में उसका सोया

कवि फिर से जाग उठा। उसने दो-तीन कविताएं लिखीं जिनके शीर्षक बड़े विचित्र थे। 'कीचड़ में कमल और मैं', 'रात का हृदय, चांद का तीर',··· 'तारों भरा आंचल, टूटा चांद।'··· उन कविताओं में उसके मन की हीन-भावनाएं प्रयोगवादी नये प्रतीकों और उपमाओं के साथ प्रकट हुई थीं। इन सभी के बीच इन्दु की स्मृति उसके मन पर छाती रही। चार दिन बीत गए। इन्दु उसके यहां नहीं आई। उसकी खोज-खबर नहीं ली। उसका अन्तर घृणा से भर उठा, उसे अब भंवर बाबू मिल गए हैं न ? वह उनके साथ मोटर में सैर करने जाएगी। वह इस गरीब लेखक को क्यों संभालेगी ? उसने इन्दु का एक विचित्र चित्र बना दिया जिसके पहनावे पर सिक्के ही सिक्के दीख रहे थे।

सवेरा हो गया था। आसमान साफ था, इसलिए धूप बड़ी तेज होकर चमक रही थी।

अनामिका ने खाना तैयार कर लिया था। वह खाना परोस कर लाई। अनाम ने पहला कौर लिया कि सीढ़ियों पर किसीके आने की आहट मिली।

अनामिका ने देखा, दयाल बाबू थे।

दयाल धीरे-धीरे ऊपर चढ़ा। उसकी टूटी हुई चप्पल और मैला काला कोट और मैली पैंट, जो घुटने के नज़दीक तनिक फट भी गई थी, यह अनुमान भी करने नहीं देती थी कि यह व्यक्ति लखपति हो सकता है।

दयाल के नाम को सुनते ही अनाम घबरा गया। फिर भी उसने उस घबराहट को गहरी आत्मीयता में परिवर्तित करते हुए दयाल का सम्मानित शब्दों में स्वागत किया। दयाल उसके मनोभावों को समझता हुआ बोला, 'कुछ व्यक्तियों को अपनी और अपने परिवार वालों की बलि देने में ही आनंद आता है।'

अनामिका को दयाल की बात रहस्य भरी लगी। वह जिज्ञासा भरी

दृष्टि से दयाल की ओर देखने लगी। अनाम का कौर हाथ का हाथ में रह गया। उसका खून जम-सा गया।

'तुम पीले पड़ गए ? क्यों अनाम बाबू ! कदाचित तुम इस अपमान को सह नहीं सकोगे ! तुम्हारा अहम् बौखला भी सकता है। लेकिन मैं एक सूदखोर हूं। दया और प्रेम से रहित। हृदयहीन और कठोर। चतुर और हवा के रुख को पहचानने वाला। ऐसे व्यक्ति को कोई कुशल अभिनय द्वारा ठगकर ले जाए तो उसे कितना दुःख होगा। कितना गुस्सा आएगा।'

अनाम के मन में पीड़ाओं के बादल छा गए। हर क्षण उसे लगा कि बादल फटकर बरस पड़ेगा और उसके अन्तराल को पीड़ाओं के सर्पों से भर देगा। उसने घबराहट से अनामिका की ओर देखा। अनामिका पूर्ववत् निस्पंद-सी खड़ी थी। दयाल की आंखों में क्रूरता थी। फिर भी अनाम ने अस्फुट स्वर में बड़बड़ाने की कोशिश की, 'दयाल बाबू, आप थोड़ी देर शांत रहिए, मैं खाना खा लेता हूं।'

'तुम्हें भूख लगती है ?'

क्षण भर के लिए गहरी निस्तब्धता छा गई।

'मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम्हें भूख लगती है या तुम भूख के अस्तित्व को स्वीकार करते हो। तुम्हारे लिए सेक्स देवता है। प्रेरणा है। जीवन है। लेकिन तुम उसका कला के माध्यम या उसके नाम से आनन्द लेना चाहते हो।'

अनामिका ने बीच में अवरोध उत्पन्न करना चाहा। दयाल ने उसे रोक दिया।

'तुम चुप रहो अनो, यह भोजन के समय जरा भी प्रतिकूल परिस्थिति नहीं चाहता। असीम शांति चाहता है। लेकिन इससे पूछो कि जिनके घर में रोटी नहीं है, हजार परेशानियां हैं, वे रोटी कैसे खाते हैं ?···यह कलाकार जरूर है लेकिन इसमें इन्सानियत नहीं। यह मुझे और तुम्हें धोखा

देकर रुपये ले गया। मैं अपने आपको इन्सान नहीं मानता, मैं सूदखोर हूं पर यह इन्सानियत के पुतले इन्सानियत को खूब पनपाते हैं? शायद मैं शैतान भी इससे अच्छा हूं।'

'दयाल बाबू!' अनाम चीख पड़ा।

'चीखते क्यों हो? अनो, यह मुझसे रुपया मां-बहिन की भूख के नाम पर ले गया और खरीद लाया अपनी प्रेमिका के लिए घड़ी।'

अनामिका स्तब्ध-सी रह गई।

'तुमने मुझे विवश किया, तुमने अनाम के बहिनों की दुहाई दी। पता नहीं, मेरे जैसा पत्थर दिल इन्सान तुम्हारा कहना क्यों मान बैठा? अनो, तुम सच बोलती हो, बात स्पष्ट करती हो, इसलिए मुझे तुम अपने प्रण से डिगा सकती हो। लेकिन इस चित्रकार ने मुझे धोखा देकर लूट लिया।'

'मैंने आपको लूटा नहीं, हैंडनोट लिखकर रुपया लिया है।' अनाम ने कांपते स्वर में कहा।

'तुम्हरा हैंडनोट का पांच रुपया भी कोई नहीं देगा। तुम्हारे पास है भी क्या? तुम कलाकार हो, भूखे और गरीब!'

'देखिए दयाल बाबू, आपको सभ्यता के बाहर नहीं होना, चाहिए, मैं आपकी पाई-पाई दे दूंगा। आप दो-चार दिन और धैर्य रखिए।'

दयाल ने इधर-उधर देखा और फिर कहा, 'स्त्री के रूप और यौवन की दीप्ति में चकाचौंध होने वाले आदमी फिर नहीं संभलते। तुम्हें घर की जगह उस अध्यापिका की चिंता है। फिर भला तुम मेरा कर्ज क्या चुकाओगे? तुम्हें इन्दु चाहिए, उसको राजी करने के लिए तुम अपना खून भी गिरवी रख सकते हो। छिः!'

अनाम को गुस्सा आ गया, 'दयाल बाबू, सीमा से बाहर न जाइए, मैंने कह दिया कि मैं कल ही आपके रुपये चुका दूंगा।'

'तब तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। लेकिन एक बात इस वकील की

भी मानो मेरे मुव्वकिल, आज की कोई भी चतुर-चालू और शिक्षित युवती तुमसे प्यार नहीं कर सकती, एक लंगड़े को जान-बूझकर अपना पति कौन बनाएगी ? यहां कला और कलाकारों पर मिटने वाले हृदय नहीं है।'

अनाम को बहुत गुस्सा आया। उसने चाहा कि वह बैसाखी से दयाल का सिर फोड़ दे। इस विचार से वह कांप भी उठा। उसने जाते हुए कहा, 'अब आप यहां मत आइएगा, मैं अपने आप आपका रुपया पहुंचा दूंगा।'

दयाल ने घूमकर कहा, 'मैं वकील हूं, मैं अपना रुपया वसूल करना भी जानता हूं।'

दयाल चला गया। अनाम खाने की थाली को फेंकते हुए पागलों की तरह चिल्लाया, 'जंगली, नीच, कमीना, बदतमीज़ खाने को ज़हर बना गया।'

अनामिका उसे चित्रलिखित-सी देखती रही।

'यह आदमी नहीं शैतान है। इसकी सारी दौलत को चुराकर लुटा देनी चाहिए।' वह फिर चिल्लाया।

अनामिका ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बिखरे हुए खाने को एकत्रित करने लगी। वह इतनी शांत और दुखी थी जैसे वह अब रो पड़ने को आतुर है।

जब अनाम बहुत देर तक बड़बड़ाता रहा और अनामिका ने कोई प्रोत्साहन नहीं दिया तब अनाम उसपर झल्ला पड़ा, 'तुम बोलतीं क्यों नहीं, क्या तुम गूंगी हो ?'

'गूंगे बनने में ही लाभ है अनाम बाबू।'

'ओह ! तुम भी अब सूक्तियों में बोलोगी। साफ क्यों नहीं कहतीं ? उसने अपना सिर पकड़ लिया।

अनामिका ने थाली हाथ में लेकर कहा, 'मैं इतनी देर से यही सोच रही थी कि आपने मिथ्या भाषण क्यों किया ? क्या आप कुछ और बहाना नहीं बना सकते थे ? क्या आप मुझे सच्ची बात नहीं कह सकते थे ?'

'मैंने कोई बहाना नहीं बनाया, मैंने जो कहा, सच कहा। मेरे घर पर अभी एक पैसा भी नहीं है। वहां से चिट्ठी भी आई थी।'

'फिर आपने अपने परिवार के प्रति यह अन्याय क्यों किया?'

'तुम नहीं जानतीं कि प्यार में आदमी को क्या-क्या करना पड़ता है? यहां प्यार की होड़ लगती है। इस होड़ में मुझे भी कुछ दांव पर लगाना होता है। ''तुम्हें कैसे पता लगे कि प्यार में आदमी कितना लाचार और विवश होता है।'''मैं इन्दु को प्यार करता हूं, उस पार्टी में मैं कुछ न देकर उसका और अपना अपमान कैसे करवा सकता था। आखिर मैं अपने आपको उसका निकटतम मित्र मानता हूं। चित्रकार हूं! तुम नहीं जानतीं कि यह सब क्यों होता है।'

वह उत्तेजित हो गया था। उसकी आंखें नम हो गई थीं। अनामिका ने ठंडी आह लेकर कहा, 'मैं कलंकिनी मां को भूखा और नंगा नहीं देख सकती चाहे मुझे आजीवन कुंवारी रहना पड़े। चाहे मुझे जीवन भर प्यार की प्यास में तड़पना पड़े।'

१२

थोड़ी ही देर में अनाम ज़रूरत से अधिक शांत और गंभीर हो गया। उसे कुछ सोचना और न सोचना, दोनों अजब-से लगे। उसको दयाल के लौट जाने के बाद मन ही मन एक घुटन और अपमान महसूस हो रहा था। धीरे-धीरे उसे लगा कि उसके सिर में दर्द हो रहा है। वह पलंग पर लेट गया पर अधिक देर तक नहीं सो सका। दयाल ने उसे लंगड़ा कहा, इस बात ने उसपर गहरा असर किया और वह विचलित-सा इधर-उधर कर-वटें लेता रहा।

अनामिका चली गई थी।

उस एकांत में वह खिड़की की राह कुहनियों का सम्बल लेकर खड़ा

हो गया। दो सुखी जोड़े हंसते हुए गुज़र रहे थे। उसने क्षण भर के लिए कल्पना की कि वह इसी तरह इन्दु के साथ जा रहा है। इन्दु मुस्का-मुस्का-कर उससे बातें कर रही है।

'पर लंगड़े के साथ कौन शादी करेगा?' दयाल के ये शब्द उसके अन्तस् में घृणा के सागर को जन्म दे रहे थे। अनाम उसकी किंचित भी परवाह नहीं करता। यह बकवास है।···इन्दु उसे सच्चे हृदय से चाहती है। वह स्वयं इन्दु को हृदय से चाहता है।···लेकिन वह चार दिन से आई क्यों नहीं? उसने अपने कपड़ों की ओर देखा जैसे वह जाने का विचार कर रहा है।

उसने कपड़े बदले। बैसाखी ली। घर से बाहर चल पड़ा। बाड़ी की बाईं ओर एक छोटी बन्द गली पड़ती थी। उस बन्द गली के सिरे पर वरदा एक काले युवक से हंस-हंसकर बातें कर रही थी। वह काला लड़का दृष्टि को अप्रिय लगने वाला था। उसके गालों की हड्डियां उभरी हुई थीं। उसने एक मोटी धोती और कुर्ता पहन रखा था। उसके बाल घुंघराले और घने थे जैसे हब्शियों के होते हैं।

वरदा पर जैसे ही अनाम की दृष्टि पड़ी वैसे ही वह तनिक उच्च स्वर में बोली, 'देखो शंकर, आज संध्या वेला तुम मुझे अवश्य बाग में मिलना, उसी जगह जहां हम कल मिले थे।' फिर उसने नाक-भौं सिकोड़ा। उसकी हर हरकत में एक उच्छृङ्खलता थी।

अनाम ने आगे बढ़ते हुए सोचा, 'यह करती रहे अपनी बला से।' वह तेज़ी से कदम बढ़ाने लगा।

कोई रिक्शा उसे नहीं दीखा। वह फुटपाथ के छोर पर खड़ा रहा। वहां खड़े-खड़े उसने सोचा कि दयाल बाबू इस भेद को सभी के सामने खोलेंगे। क्यों नहीं, वह भंवर बाबू से रुपये लेकर दयाल को दे आए। इस विचार ने उसे सांत्वना दी। वह भंवर बाबू से भी परिवार की एक

आवश्यकता बताएगा। वह ऐसा सोचकर तनिक चिंता से मुक्त हुआ।

रिक्शा आता हुआ दिखाई पड़ा। उसने अपनी बैसाखी को संभाला। रिक्शा तय किया और उसमें बैठ गया।

जब वह भंवर बाबू के घर पर पहुंचा तब नौकर ने उसे बताया कि वे दफ्तर में हैं। आप वहीं पर चले जाएं।

वह उसी समय दफ्तर पहुंचा।

भंवर बाबू किसी काम में व्यस्त थे, अतः उसे थोड़ी देर प्रतीक्षा-गृह में प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह वहां बैठा हुआ प्रभावशाली शब्दावली ढूंढ़ने लगा ताकि भंवर बाबू उसे टाल नहीं सकें।

आखिर वह समय आ गया जिसकी अनाम को प्रतीक्षा थी। वह भंवर बाबू की सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। भंवर बाबू उसे प्रश्न भरी दृष्टि से देखते रहे। उनका यह मौन अनाम को रुचिकर नहीं लगा।

'बात यह है···!' वह कहता-कहता चुप हो गया।

'हां-हां, कहिए, घबराइए नहीं।'

अनाम झेंप गया। उसके लाख चाहने पर भी भंवर बाबू उसके मन की घबराहट को भांप गए। तब उसका चेहरा पीला-पीला-सा लगा और उसकी वाणी में अस्थिरता आ गई, 'बात यह है···कि मेरे घर·· से···पत्र··· आया है,···मेरी बहिन की शादी होने वाली है, मुझे एक हज़ार रुपयों की ज़रूरत है।'

'आप घबराते क्यों हैं? इसमें घबराने की बात ही क्या है? आपकी बहिन की शादी हो रही है, आप निर्भीक होकर स्थिति बतलाइए, घबराइए नहीं।' भंवर बाबू के स्वर में बड़प्पन था और वे इस तरह कह रहे थे जैसे अनाम एक अनुभवहीन युवक हो।

'घबराता कहां हूं, घर से चिट्ठी आई है। सरोज का विवाह है। पांच सौ रुपये आप मुझे रायल्टी के हिसाब में अग्रिम दे रहे हैं और पांच सौ और

दे दीजिए।'

'मैं आपको पांच सौ इसके अतिरिक्त भी दूंगा।'

'मैं आपका मतलब नहीं समझा।'

'मेरे पास अभी दयाल बाबू आए थे। आपके हैंड नोट लेकर कह रहे थे कल अदालत में दावा करूंगा।'

अनाम का चेहरा सफेद हो गया। उसकी वाणी अवरुद्ध हो गई। उसका रक्त जम गया।

'वे आपसे सख्त नाराज़ हैं। ऐसे प्रेम में सिवाय हानि के और कुछ भी नहीं मिलेगा। घर वाले रोटी-रोटी चिल्लाते रहें और आप यहां तोहफे में रुपया उड़ाते रहें, ऐसी झूठी शान से क्या लाभ?'

अनाम अपराधी की भांति सिर झुकाकर बैठा रहा।

'मैंने दयाल को पांच सौ रुपये दे दिए हैं, आप इस रसीद पर दस्तखत कर दीजिए।' भंवर बाबू ने एक रसीद निकाली और अनाम ने बिना देखे ही उसपर हस्ताक्षर कर दिए।

'मैं जा रहा हूं!' अनाम ने उठते हुए कहा।

'क्यों, चाय नहीं पिएंगे।'

'नहीं।'

'हां सुनिए, आज इन्दु 'जल महल' में आएगी, आप ज़रूर आइएगा।'

'हां, हां!' कहकर अनाम वहां से चल पड़ा।

वहां से सीधा वह बाग के एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। शाम तक बैठा रहा। गुमशुम और व्यथित!

शाम के समय वह अपने आपको भुलाने के लिए नीरोज आ गया जहां साहित्यिक, कलाकार और पत्रकार एकत्रित होते थे।

उसको देखते ही आशुतोष बोला, 'यार! तुम बड़े कमीने हो, दोस्तों की खिल्ली उड़ाने में तुझे क्या मज़ा मिलता है?'

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठ गया।

नवरंग, जो प्रयोगवादी कवि था, गंभीर होकर कहने लगा, 'यह इसकी हमेशा की आदत रही है। जिन मित्रों का साथ करेगा, उन्हींको यह अपने चित्रों व कार्टूनों का विषय बनाएगा, उनकी महानताओं को स्वीकार नहीं करेगा बल्कि उनके सत्य को विकृत करके पेश करेगा। ऐसी भी क्या कला है?'

शशिमित्र सिगरेट का कस खींचकर बोला, 'लेकिन यह तैमूरलंग है, हुशियार! कुछ आलोचकों को इसने खूब पटा रखा है।'

नवरंग हंसकर बोला, 'पूंजावादी मनोवृत्ति को समझता है। जिससे अपनी प्रशंसा करवानी होती है, उसकी यह पहले से ही तारीफ करने लगता है। उसका चित्र वह अपनी विचित्र कला में नहीं बनाता।'

'पक्का व्यापारी कलाकार है।'

अनाम ने अब मौन तोड़ा, 'मैं अब भी आपकी बात नहीं समझा। आज आप किस बात पर बाल की खाल निकाल रहे हैं?'

'लीजिए, आपको जैसे कुछ पता नहीं।' चलचित्र के कौमिक अभिनेता की भांति शशिमित्र बोला, 'तुम फिल्म में काम कर लो।'

'पता हो भी कैसे? भाई इनकी वह इन्दुजी है न, आजकल एक उपन्यास लिख रही है। आप उसी उपन्यास के संशोधन में व्यस्त हैं।' नवरंग गर्दन हिलाकर बोला, वह मेज पर अंगुलियां भी नचा रहा था। तभी 'शोला' साहब ने प्रवेश किया। उर्दू के प्रगतिशील शायर। शराबी। मुंहफट।

'इन्दु जी हमसे नाता जोड़ने वाली है, उसे लंगड़ा खाविंद पसन्द नहीं। जानते हो, वह क्या जिन्दगी का असली मजा ले सकता है, जो वह इश्के-हकीकी को मानने वाला हो?'

सब खिलखिला कर हंस पड़े।

अनाम को गुस्सा आ गया। वह अपनी बैसाखी लेकर उठ खड़ा हुआ।

'तुम साहित्यकार नहीं, जंगली हो, तुम्हारे बीच बैठना भी गुनाह है। अपने आपका अपमान करवाना है।'

वह उठ खड़ा हुआ।

सड़क पर विचारों में खोया हुआ वह चला जा रहा था। समीप से कौन आ रहा है और कौन जा रहा है, इसका उसे पता ही नहीं था।

अकस्मात् किसीने उसकी पीछे से बांह पकड़ी। उसने रुककर देखा—मनोज था।

एक सेठ का बेटा जिसकी भी कई कहानियां अनाम ने पहलेपहल संशोधित की थी किन्तु आजकल वह अच्छी कहानियां लिख लिया करता है।

'मुझे छोड़ दो, मैं एकांत चाहता हूं।

'क्यों?'

'तुम नहीं जानते कि आज का दिन मेरे लिए कितना भयानक है! तूफान पर तूफान आ रहे हैं। परेशानी पर परेशानी आ रही है। मेरा मन मेरे सभी परिचितों को लेकर क्षोभ से भर गया है। मैं चाहता हूं कि यहां से दूर बहुत दूर, क्षितिज के पार चला जाऊं! बच्चन की इस कविता—इस पार प्रिये तुम हो, मधु है, उस पार न जाने क्या होगा? के विपरीत अब मैं सोचता हूं—मुझे लगता है—यहां दुःख, कटुताएं और अपमान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है मधु और प्रिय सब बकवास। सब झूठ।'

मनोज उसकी ओर धीरे-धीरे झुकता हुआ, अपनी भौंहों को उठाकर बोला, 'मैं तुम्हें ऐसी ही जगह ले चलता हूं जहां बच्चन जी की कविता साकार नजर आएगी।'

'कहां।'

'मेरे साथ आओ।'

उसने शब्दों पर ज़ोर देकर कहा, 'लेकिन तुम जाओगे कहां?'

उसने बिलकुल सच कहा, 'मेरी एक प्रेमिका है, उसके पास तुम्हें ले

चलता हूं।'

'तुम्हारी प्रेमिका ?'

'वह एक सुन्दर और स्वस्थ युवती है। तुम उससे मिलकर बड़े प्रसन्न होओगे। वह बड़ी शिक्षिता और समझदार है लेकिन है एक वेश्या। यदि वहां वह तुम्हें अन्य व्यक्ति से प्रेम करती हुई मिल जाए तो बुरा न मानना। उनके प्यार का आधार हृदय नहीं, पैसा है। भावना नहीं, व्यापार है। फिर भी वह अपने आपको मेरी प्रेमिका समझती है। बोलो चलोगे ?'

अनाम कुछ देर गंभीरता से मनोज के चेहरे का निरीक्षण करता रहा। मनोज एक चुस्त सैनिक की भांति गर्दन की नसों को तानकर खड़ा हो गया। इस बीच कई आदमी आए और गुज़र गए।

'कहीं इन्दु तुम्हारा इन्तज़ार तो नहीं कर रही है ?'

'कर ज़रूर रही है, पर आज मैं वहां नहीं जाऊंगा। आज मैं तुम्हारे साथ ही चलूंगा।' उसने उदासीनता से कहा।

'वे दोनों एक चांद पोल के घर में घुसे। पूरा फ्लेट सोनी ने ले रखा था। मनोज ने उसका चुम्बन लेकर उसका स्वागत किया और फिर कमरे में लगे कृष्ण प्रभु के चित्र से क्षमा-याचना की।

अनाम अपनी बैसाखी को कुर्सी के नीचे खिसकाकर बैठ गया। मनोज ने सोनी को उसका परिचय देते हुए कहा, 'ये प्रसिद्ध चित्रकार हैं। चित्र बनाते हैं। यह तुमसे यानि मेरी मायली (प्रेमिका) से मिलने आए हैं।'''और मैंने तुम्हारे बारे में इन्हें सब कुछ समझा दिया है।' सोनी ने एक शरारत भरी दृष्टि अनाम पर फेंकी। इसके बाद मनोज सोनी से हंसी-मजाक करता रहा। अनाम नासमझ बच्चे की तरह उनकी बातों को सुनता रहा। तब मनोज सोनी को लेकर भीतर के कमरे में चला गया।

अनाम को 'शोला' की बात सुई-सी चुभ गई थी। उसके कई मित्रों का भी ऐसा ही ख्याल था कि उसमें पुरुषत्व नहीं है। क्यों नहीं, वह अपनी

परीक्षा कर ले। इस प्रेमिका के प्रेम का आधार हृदय नहीं, पैसा है, भावना नहीं, व्यापार है। तब ···?

मनोज गीत गुनगुनाता हुआ वापस आ गया था।

अनाम के मुख पर पसीना देखकर बोला, 'तुम पानी-पानी क्यों हो रहे हो?'

'नहीं तो?'

'छुपा रहे हो।'

'बात यह है कि मैं···!'

'शौक से।'

और मनोज ने तुरन्त उसे बैसाखी पकड़वाई और उसकी एक भी न सुनकर उसे भीतर के कमरे में ढकेल दिया।

उस आलीशान कमरे में कामोत्तेजक चित्र टंगे हुए थे। अनाम ने सोनी की नजर बचा के उन चित्रों पर एक दृष्टि डाली।

'आइए।'

वह उसके समीप लजीले किशोर की तरह गर्दन नीची कर बैठ गया।

मनोज ने बीच में अवरोध उत्पन्न किया। उसने संकेत करके सोनी को बुलाया और कानों ही कानों में कुछ कहा। सोनी उसी स्वर में कुछ कहकर मुस्करा भर दी।

सोनी ने अनाम के हाथों को अपने हाथ में ले लिया। बोली, 'आपकी टांग के क्या हुआ?'

'वह जन्म से ही ऐसी है।'

'ओह!'

'खिड़कियां बन्द कर लूं?'

अनाम ने कहा, 'हां!'

खिड़कियां बन्द हो गई।

पांच ही मिनट के बाद अनाम कांपता हुआ कमरे के बाहर निकला। वह पीड़ित मनुष्य की तरह था, पर उसके नेत्रों में एक अदृश्य शांति विराज रही थी।

सोनी ने उसका जोर से हाथ पकड़ लिया।

'आप लंगड़े हैं तो क्या हुआ ? क्या लंगड़ों के बाल-बच्चे नहीं होते ? आप इतनी हीनता का अनुभव न करें। आप बहुत अच्छे पति बन सकते हैं।'

अनाम ने सोनी का हाथ प्यार से पकड़कर कहा, 'अभी मुझे जाने दो, जाने दो, मेरा दिमाग ठीक नहीं है। मैं जीवन में सफल हो जाऊंगा। मैं पुरुष हूं, संम्पूर्ण रूप से पुरुष !'

आध घंटे के बाद अनाम मनोज को कह रहा था, 'मैं एक क्षण के लिए भी नहीं भूला कि मैं लंगड़ा नहीं हूं। मेरी टांग सोनी के सुन्दर मुख के आगे मुझे भूलती हुई-सी लगी और मैं 'नरवस' हो गया। मुझे लगा कि मैं संसार का सबसे अभागा और दुखी प्राणी हूं। लेकिन सोनी के असीम स्नेह ने मुझे बचा लिया। मैं भूल गया कि मैं क्या हूं ? मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं लंगड़ा हूं।'

'यह व्यर्थ की बातें हैं। ईश्वर की दी हुई सज़ा को हमें वरदान की तरह ग्रहण करनी चाहिए।'

'वरदान की भांति मैं अभिशाप को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं एक महत्वाकांक्षी प्राणी हूं। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी से अपना सम्मान करवाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे सभी केवल प्रेम की दृष्टि से देखें, दया की दृष्टि से नहीं। किंतु इस टांग की वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ता है। इस टांग का क्षणिक अपमान मुझे वर्षों के सम्मान से अधिक पीड़ा जनक लगता है।'

मनोज ने अनाम के दुखी भावों को स्नेह से दुलारते हुए कहा, 'इस टांग को लेकर सभी तुम्हारा अपमान कर सकते हैं पर इन्दु नहीं। इन्दु ने आज तक जो प्रतिष्ठा पाई है, वह तुम्हारे कारण। सुना है कि उसके कहानी-संग्रह के प्रकाशन पर यहां की 'महिला जागृति परिषद्' एक समारोह कर रही है जिसका सभापतित्व यहां के कोई बड़े सेठ दमड़ीलाल मालपाणी कर रहे हैं।'

'इन्दु ही मेरी भावनाओं की कद्र करती है। मैं उसके उपन्यास पर इतनी मेहनत करूंगा कि वह निश्चय ही एक श्रेष्ठ कलाकृति होगी।'

'तुम इन्दु से विवाह क्यों नहीं कर लेते ?'

'मैं उसे कहना चाहता हूं पर मेरी हिम्मत ही नहीं पड़ती। संभावित उत्तर को लेकर मेरे मन में भय-सा लगा रहता है।'

'तुम्हें शीघ्र कहना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। वह समाज में अपनी बहुत प्रतिष्ठा चाहती है। केवल एक भावना में ही तुम दोनों में समानता है।'

'मेरी भी ऐसी ही इच्छा है मनोज, मैं इतना बड़ा और लोकप्रिय चित्र-कार बनना चाहता हूं, जिससे लोग मेरी टांग को भूलकर मेरी कृतियों पर केन्द्रीभूत हो जाएं। और इन्दु स्वयं विवाह की इच्छा प्रकट करे।'

'ऐसा संभव है। क्योंकि तुम एक प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार हो।'

रात का गहरा आंचल फैल चला था।

उठते हुए मनोज ने कहा, 'घर जाकर आराम करो। अपने मन की हीनता को ग्रंथियों में मत बदलने दो। बहुत-से व्यक्ति लंगड़े-बहरे होते हैं। वे तुम्हारी तरह पीड़ित-चिंतित रहकर जीवन को पीड़ादायक थोड़े ही बनाते हैं ? और सोनी को तो तुम बहुत पसंद हो।'

'हां, उसने मुझे सचमुच नया आलोक दिया है। मैं उसका हृदय से आभारी हूं।'

१३

तीन दिन बीत गए। अनाम रात के सन्नाटे के संगीत को बड़ी बेचैनी से सुन रहा था। वह दो दिन से निराश-विकृत मस्तिष्क वाले प्राणी की तरह जीवन की नश्वरता और व्यर्थता पर विलाप कर रहा था। वह अनामिका को कहता रहा, जीवन वृथा है। इन्दु उससे मिलने नहीं आ सकती, तब उसके अपने प्राण तुच्छ हैं, अर्थ और सम्मान तुच्छ हैं, विश्व-ब्रह्मांड तुच्छ हैं।··· तब वह किसीको नहीं मानेगा, इस सम्मान को, इस सर्जन को।

यह नारी बड़ी विचित्र है, दुर्निवार है।

प्रेम करती है, द्वेष करती है और उन दोनों का सामंजस्य लेकर पुरुष को छलती रहती है।

अनाम को एक पत्र मिला था। इन्दु ने कार्य-व्यस्तता के कारण न आने की क्षमा मांगी थी। क्षमा के साथ उसने अनाम को एक ताड़ना भी दी थी, 'वह प्रेम महत्वहीन है जो प्रेयसि के सम्मान को घटा दे। तुम्हारे घर वाले जब मेरे और मेरे तोहफे के बारे में सुनेंगे तब वे क्या विचारेंगे? वे सोचेंगे कि वह युवती उनके लड़के को पथ-विमुख कर रही है।···और तुम भी कैसे मनुष्य हो। मानवीय और आत्मीय नाते-रिश्तों को भूलकर तुम एक लड़की के पीछे पागल हो रहे हो। प्रेम का ऐसा रूप हमारे परिवारों में शोभनीय नहीं होता।···मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम मुझे समझने का प्रयास करोगे।'

वह उसे समझने का प्रयास करेगा, इस विचार ने उसपर हल्का वज्राघात किया। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि इन्दु उसे इस तरह का उपदेश देगी। स्वयं न मिलकर इस पत्र द्वारा ही उसके गहरे सम्बन्धों में अवरोध करने का प्रयास करेगी।

अनाम ऐसा नहीं होने देगा।

रात के ढलते तिमिर के साथ वह इन्दु के पास जाएगा। उसे सारी स्थिति के बारे में कहेगा। उसे समझाएगा, आज के युग में एक प्रेमी किस प्रकार ऐसे कार्यों से बच सकता है? आज हमारे सम्बन्धों के प्रतीकों के रूप में ये तोहफे, भेंटें और पार्टियां बन गई हैं।

एक तारा टूटकर गिरा।

अनाम को लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर आघात हो गया है। उसका मुख पीला, गमगीन और उदास हो गया। उसे रह-रहकर दयाल पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बख्त ने इस बात का प्रचार-प्रसार करके क्या पाया?···दुष्ट है न, कष्ट देने में ही उसको आनन्द आता है।

इस तरह बेचैनी और आशंकाओं में रात व्यतीत होने लगी। उसने लाख चाहा पर उस रात उसे एक पल के लिए नींद नहीं आई। रह-रह कर उसे ख्याल आता था कि वह इन्दु के बिना सुख से नहीं रह सकता।

१४

क्षितिज के काले भाल पर कोहनूर हीरे के सदृश सूरज रूपी बिन्दी दीप्त हुई।

अनाम तुरन्त दैनिक कार्यवाही से निवृत्त होकर इन्दु के घर की ओर चला। इतने सवेरे-सवेरे अनाम को देखकर इन्दु को विस्मय हुआ। वह उसे चाय का एक प्याला देती हुई बोली, 'तुम्हारी आंखों से लगता है कि तुम रात भर सोए नहीं।'

'तुम्हारा अनुमान ठीक है।'

'फिर तुम्हें काफी पीनी चाहिए।'

'नहीं, मुझे काफी की ज़रूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूं। केवल मुझे एक बात के बारे में तुमसे पूछना है।'

'कहो।'

'तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में कई प्रश्न एक साथ उठा सकता है। मुझे पीड़ित कर सकता है, मुझे ईर्ष्यालु बना सकता है, मेरे भाव-जगत में तूफान उठा सकता है।'

इन्दु ने यंत्रवत् अपनी दृष्टि घुमाई, 'तुम्हें आवेश में आकर कुछ नहीं कहना चाहिए। हमारे भाव-लोक से भी विशेष एक लोक है, वह है हमारा कर्तव्य-लोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुतले बने रहते हैं, यदि हम स्वयं उनको व्यवहार में नहीं लाएंगे तब हमारा हर कार्य एक धोखा बन जाएगा।'

'लेकिन मैंने अपने कर्तव्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के उत्तेजित क्षणों में मेरे जैसा आदमी अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपनी चाहने-वाली को उसकी पसन्द की चीज़ लाकर देगा। यह बिलकुल स्वाभाविक है।'

'भंवर बाबू ने जो कहा, उसमें ऐसी कोई बात नहीं झलकती थी। तुममें एक प्रेमी की ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि भंवर बाबू मुझे मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं, तुमने दयाल से अपनी मां-बहिन की दुहाई देकर रुपये लिए। यह बिलकुल गलत बात है। मुझे कतई पसन्द नहीं।'

अनाम हतप्रभ-सा इन्दु के कठोर शब्दों को सुनता रहा।

वह अपनी दृष्टि घुमाकर बोली, 'भंवर बाबू ने तुम्हारे हैंडनोट दयाल बाबू से लेकर मुझे दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार ज़रा पसन्द नहीं। यदि मेरी इज्जत का सवाल पैदा न होता तो वे दयाल को एक पैसा भी नहीं देते। उन्होंने मुझसे कहा, दयाल कह रहा था कि अनाम की सारी कमाई इन्दु के घर जाती है। अनाम के घर वाले भूखों मरते हैं और यह इश्क मिजाजी में बरबाद हो रहा है।'''अब तुम्हीं बताओ कि एक लड़की यह सब कैसे सह सकती है? जो कोई इस बात को सुनेगा, वह मेरे बारे में क्या सोचेगा? तुम्हारे घर वाले मुझ मास्टरनी को एक कुलटा और छिनाल

के अतिरिक्त कुछ समझेंगे ही नहीं।'

'तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा निराधार है।'

'मैं ऐसा कहां सोचती हूं ? ऐसा तो दूसरे सोचते हैं और मैं सुनती हूं। ···अनाम !' उसने थूक निगलकर दुःख से धीरे-धीरे कहा, 'मैंने तुम्हारे घर सौ रुपये भेज दिए हैं। भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोगे। इन्दु ऐसी लड़की नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व विसर्जन कर दो।'

अनाम को यह बात टूटते सम्बन्धों की शुरुआत लगी।

'इन्दु मुझे समझने की कोशिश करो।'

'मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। मैं तुम्हें एक अच्छे आदमी और श्रेष्ठ कलाकार के रूप में देखना चाहती हूं।'

इन्दु के इस वाक्य ने बात के सिलसिले को समाप्त कर दिया।

अनाम उठने लगा। इन्दु ने तुरन्त उससे कहा, 'तुम्हें मेरी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इन बातों से हमारे सम्बन्धों में अन्तर नहीं आएगा।···और सुनो, परसों मेरा स्वागत होने वाला है। तुम्हें वहां ज़रूर आना है।'

जब अनाम वहां से चला तब उसका मन सुन्न हो गया था। उसके मन में भयमिश्रित व्यथा छा गई जो उसको उन्मादित-सा करने लगी। वह व्यर्थ ही इधर-उधर की गलियों में घूमता रहा। उसके सारे वस्त्र भीगकर गीले हो गए। चलने में उसे तकलीफ होती थी। लेकिन आज उसे आनन्द-सा आ रहा था। कभी-कभी उसे भयंकर गुस्सा भी आता था कि वह क्यों जिन्दा है इस संसार में ? इस संसार में उस जैसे अंग-भंग मनुष्य को जीने का हक नहीं। वह श्रेष्ठ कलाकार है, लेकिन यहां कलाकार का कौन सम्मान करता है ? यहां कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते हैं जो अपने महत्वपूर्ण जीवन को कला की साधना में खराब किया करता है।'

वह इसी प्रकार सोचता-विचारता मनोज के घर पहुंच गया। मनोज

लारेंस का 'चटर्लीज लवर' पढ़ रहा था। उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर वह बिना देखे ही बोला, 'आओ अनाम, आज बेवक्त कैसे आ गए ?'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुंह उतरा हुआ था तथा उसकी आंखों में व्यथा की चिनगारियां स्पष्टतया लक्षित हो रही थीं।

'बात क्या है ?' उसने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन औरतों के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

प्रश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह अनाम के चेहरे पर अपनी दृष्टि गाड़कर बोला, 'यह आते ही तुमने 'एटम' का प्रयोग कर लिया।'

'और आदमी यदि लंगड़ा और गरीब हो ? उसके बड़ा परिवार हो तो उसे क्या करना चाहिए ?' वह उत्तेजित होकर बोला।

'एटम के बाद हाइड्रोजन का विस्फोट ! बंधुवर, मैं ज़रा अभी मस्ती के मूड में हूं। इस चक्कर में पड़ना नहीं चाहता।'

'तुम पैसे वाले हो न, दूसरों के दर्द में तुम क्यों पड़ोगे ?'

मनोज की मुद्रा गंभीर हो गई। उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने अनाम की आकृति के अवसाद और करुणा को समझ लिया। वह प्यार से बोला, 'औरत सिर्फ औरत है। वह प्यार करती है लैला की तरह, वह घृणा करती है तिष्यरक्षिता की तरह। वह स्नेह देती है यशोदा की तरह और उपेक्षा करती है तुम्हारी इन्दु की तरह। वह मेनका की तरह मजबूर और शरद की 'कमल' की तरह स्वतंत्र है। कहने का तात्पर्य यही है कि औरत सिर्फ औरत है।'

उसकी बोली बन्द होते ही अनाम ने पूछा, 'इन्दु की तरह उपेक्षा ?'

'इन्दु तुम्हें प्यार करती है, मेरा यह अनुमान गलत निकला। वह एक महत्वाकांक्षिणी युवती है। उसका लक्ष्य जीवन में श्रेष्ठ पद पाने का है। वह बड़ी स्वार्थी और चतुर है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि तुमसे सम्पर्क होने से उसकी रचनाएं संशोधित हो-होकर अच्छे से अच्छे पत्रों में छप सकती

हैं। इसलिए तुम्हें अपना मीत बनाया। लेकिन वह एक लंगड़े को अपना जीवन-साथी नहीं बना सकती।'

'यह तुम्हारे मन की घृणा बोल रही है। वह तुमसे बातचीत नहीं करती है, इससे तुम उसके बारे में ऐसी बात बकते हो।'

'मैं बकता नहीं हूं, ठीक कहता हूं। आजकल वह भंवर बाबू के साथ मोटर में घूमती है। उसका सम्मान होने वाला है, उसमें बड़े-बड़े आदमी आएंगे। तब मैं देखूंगा कि इन्दु तुम्हें हाथ पकड़कर अपने पास बिठाती है या नहीं?'

'वह मुझे प्यार करती है।' यह वाक्य उसने जब बड़े आत्मविश्वास से कहा तब उसके हृदय पर मुक्का-सा लगा। जैसे उसने अपने आपको जबर-दस्ती यह विश्वास दिलाया हो।

१५

सौ रुपयों की पहुंच की चिट्ठी आई थी। मां ने अति स्नेहपूरित शब्दों में उसको आशीष लिखी थी। उसकी चिट्ठी में उसकी आन्तरिक मार्मिकता फूट-फूट पड़ रही थी। उसने मातृत्व की सौगन्ध दिलाकर लिखा था, 'तुम्हारी छोटी बहिन कई दिनों से बिस्तर पर पड़ी हुई है। उसे डबल निमोनिया हो गया था। वह इतनी दुर्बल और कुरूप हो गई है, जैसी प्रेत छायाएं। शरीर सूखकर कांटा हो गया। उसकी दीप्तिमयी आंखें केवल गड्ढों के रूप में रह गई हैं।'''अनाम! तुम्हारे द्वारा रुपये मिलने पर मैं उसके प्राणों को बचाने में समर्थ हो गई हूं। तुम्हारे रुपये पाकर मुझे लगा कि तुम्हारा हृदय अत्यन्त निर्मल और पवित्र है। तब तुम्हारा मुख नवजात शिशु की पवित्रतम भावनाएं लेकर मेरे सम्मुख नाच उठा।'''मुझे तुम इतने रुपये हर माह भेजते रहो तो मैं इन्हें पर्याप्त समझकर एक स्वाभिमानिनी का जीवनबिता सकूंगी और तकाज़ों द्वारा उत्पन्न मार्मिक यंत्रणाओं से बच

सकूंगी।

'एक बात मैंने और सुनी है। वह बात तुम्हें अप्रिय लग सकती है पर यह बाद में अधिक यातनामय लगेगी। मित्र का नाम नहीं बताऊंगी लेकिन वह कभी झूठ नहीं बोलता। उसने लिखा है कि तुमने एक मास्टरनी को अपनी जीवन-साथी के रूप में चुना है। कदाचित तुम्हें इन मास्टरनियों के जीवन-चरित्र का ज्ञान नहीं है। ये चरित्र की भ्रष्ट और स्वभाव की उच्छृंखल होती हैं। अभिनय में कुशल और प्रकृति की क्रूर होती हैं। यदि ऐसा न होता तो वह तुम्हारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा आमोद-प्रमोद में तथा सैर-सपाटे में खर्च नहीं करवाती। मैं उसे कठोर स्वाभाव वाली और निर्दयी भी कहूंगी क्योंकि वह तुम्हारे घर की दशा से परिचित होकर भी तुम्हें अपने कुटुम्ब के प्रति उत्तरदायी बनने को नहीं कहती। ऐसी युवती को तुम गृह-लक्ष्मी बनाकर सुख से नहीं रह सकोगे। बहू एक संभ्रात कुल की होनी चाहिए। उसके मुख पर गरिमामय सुकुमारता और उज्ज्वलता होनी चाहिए ताकि भूख और प्यास में भी उसके होठों पर जीवन भरी शाश्वत मुस्कान नाचती रहे।'

मां का यह पत्र उसे उत्तेजित करने के लिए पर्याप्त था। इन्दु के बारे में मां के जो विचार थे, वे बहुत निम्न और ओछी प्रकृति के द्योतक थे। इन्दु एक संभ्रात और श्रेष्ठ-मृदुल-मधुर स्वभाव वाली है। उसने स्वयं मुझे बिना पूछे ही मेरी मां को रुपये भेजे। यह उसकी श्रेष्ठता का प्रमाण है।

फिर उसके मस्तिष्क के मंच पर एक भोली किंतु उदास आकृति खड़ी हो गई। जिसका चेहरा दारुण दुःख के कारण विकृत हो गया था। जो एक अपमानित-कलंकिनी-सी उसके सम्मुख खड़ी होकर कह रही थी कि लोग उसके सम्बन्धों पर केवल एक दृष्टि से विचार करेंगे कि वह अनाम की कमाई पर ऐश कर रही है। अनाम अपनी मां और बहिनों को भूखा मारता है और इन्दु के लिए सुख के प्रसाधन एकत्रित करता है।'''वह निरन्तर

विचित्र कल्पनाएं करके अपने आपको पीड़ित और उत्तेजित कर रहा था।

चार बज गए थे।

धूप अधिक तेज होकर चमक रही थी। सड़क पर यात्रियों का आवागमन मंद पड़ गया था। तांगे, रिक्शे और बसें उसी रफ्तार से आ-जा रही थीं।

अकस्मात वरदा की मां ने उसके कमरे में प्रवेश किया। उसके चेहरे पर व्यग्रता झलक रही थी। उसका स्वर घबराया हुआ था। उसने धीरे से उसके निकट बैठकर कहा, 'अनाम बाबू, इस वरदा को क्या हो गया है? आप ही अब इसे समझाइए न?'

'क्यों, क्या हुआ?' आश्चर्यचकित होकर अनाम ने पूछा।

'हुआ क्या? एक लड़के से वह प्यार कर बैठी। उसके साथ घूमती-फिरती रहती है। भला बताइए, क्या यह उम्र प्यार करने की है? अभी तो वह बच्ची है।'

'उसको समझा दीजिए।'

'वह समझती नहीं। कल रात मैंने उसे लकड़ी से पीटा भी, उसे जान से मारने की धमकी भी दी पर परिणाम कुछ नहीं निकला।...आज सवेरे-सवेरे वह फिर उस लड़के से मिलने चली गई।'

अनाम ने वरदा की मां की आंखों में अग्नि-परीक्षा के समय एक नारी के नेत्रों में जो आकुलता और चिन्ता विद्यमान होती है, वह देखी। उसका चेहरा सफेद-सफेद-सा लगा।

अनाम ने धैर्य देते हुए कहा, 'आप उसे शांति से समझाइए, यह मारना-पीटना काम को और बिगाड़ देगा।...क्या आप उसकी तुरन्त शादी की व्यवस्था नहीं कर सकते?'

'कैसे कर सकते हैं? परिवार की दरिद्रता और लड़की की कुरूपता दोनों ही बाधक हैं। देखिए, वह आपका बहुत कहना मानती है, मुझे

विश्वास है कि आप उसे समझा देंगे और वह आपका कहना मान लेगी।··· अच्छा मैं चली, उन्होंने इस बात को किसीको न कहने के लिए कहा था। लेकिन मैं विवश थी, आपको कहना ही पड़ा। मान-मर्यादा का प्रश्न जो ठहरा।'

वह अनाम का उत्तर सुने बिना ही चली गई।

१६

आयोजन में जैसे ही पुस्तक अनाम के हाथ में आई वैसे ही उसका मुंह उतर गया। ऐसे आघात की उसे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी। उसकी चेतना विक्षुब्ध हो उठी और उसने तीखी और घृणा भरी दृष्टि से इन्दु को देखा जो सेठ बिसनलाल से शिष्टाचारपूर्ण ढंग से मुस्कराकर वार्तालाप कर रही थी। प्रधान अतिथि कोई मिनिस्टर थे, वे अभी तक नहीं आए थे। सभापति पगड़ी पहने हुए दो-चार व्यक्तियों से व्यापार की बातचीत कर रहे थे। उपस्थिति बार-बार इन्दु की ओर देखकर उसकी कहानियों की प्रशंसा कर रही थी।

'इन्दु ने उसके साथ कितना बड़ा छल किया!' यह विचारकर अनाम की आत्मा दुःख से भर आई। उसकी आंखें विस्मय भरे दुःख से चमक उठीं।

अनाम ने इन्दु की साहित्यिक प्रवृत्ति को बल और प्रोत्साहन दिया। अपने चित्र न बनाकर उसने इन्दु की कहानियों को पूरा-पूरा दुबारा लिखा। उन्हें प्रकाशित कराया। उनका पारिश्रमिक दिलाया। अपने आलोचक मित्रों से कहकर उसकी कहानियों की जगह-जगह चर्चा कराई, इसका फल उसने उसे इस अपमान के साथ दिया। उसकी इच्छा हुई कि वह रो पड़े।

उसने टूटे दिल से एक बार पुस्तक को फिर खोला और समर्पणवाला पृष्ठ पढ़ा—आदरणीय श्री भंवरलाल जी को, जो साहित्य के प्रेमी और पोषक हैं।

और जब अनाम ने बहुत दिन पहले उसे पूछा था, तब उसने कितने आदरपूर्ण स्वर में कहा था कि वह अपनी पहली कृति उसे ही प्यार के साथ भेंट करेगी। फिर इन्दु ने ऐसा क्यों किया ? उसके सामने ऐसी मजबूरी क्या आ गई ?

तभी एक सज्जन ने कहा, 'मिनिस्टर साहब आ गए हैं। भीड़ में क्षण भर के लिए हल्का कोलाहल उठा जो बाद में गहरी शांति में बदल गया। सभापति और प्रधान अतिथि ने अपने आसन करतल ध्वनि के बीच ग्रहण किए। स्वागत मंत्रिणी विद्यादेवी के भाषण के बाद स्थानीय साहित्यकारों के भाषण हुए। अपने भाषण में अनाम ने इन्दु की बहुत प्रशंसा की। हालांकि आज वह इन्दु से सख्त नाराज़ था लेकिन वह इन्दु की सार्वजनिक आलोचना करना नहीं चाहता था, ऐसा करने से उसे डर था कि इन्दु उससे सदा के लिए बिगड़ सकती है। उसने अत्यन्त विनम्र शब्दों में इन्दु की प्रशंसा करते हुए कहा, 'श्रीमती होमवती देवी, उषा मित्रा, विमला लूथरा, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा तथा मालती पटुलकर के बाद कुमारी इन्दु (वह क्षण भर रुका और उसने मन ही मन उसे 'मेरी प्रिय इन्दु' कहा) ने अपनी सशक्त लेखनी द्वारा जो साहित्य सर्जन करना प्रारंभ किया है, उसमें नारी-मनोभूमि की यथार्थ अनुभूति चित्रण हुआ है। उनकी कला नारी-जीवन का एक अछूता पहलू लिए हुए है।'''शैली की दृष्टि से मैं इन्हें सभी लेखिकाओं में अग्रणी मानता हूं। मैं शुभकामना करता हूं कि वे इसी भांति निरन्तर साहित्य-रचना करती रहेंगी।

मिनिस्टर ने साहित्य पर एक आम भाषण दे दिया। उसने अन्त में इतना ही कहा 'इन्दु जी अभी उदीयमान लेखिका हैं, साहित्य-सर्जन में वे शीघ्र ही श्रेष्ठता प्राप्त करेंगी, ऐसी आशा है।'

तालियां !

आयोजन समाप्त होने के बाद भंवर बाबू ने इन्दु से 'सांस्कृतिक संगम'

के मंत्री के यहां भोजन करने को जाने के लिए कहा। अनाम एक कोने में खड़ा हुआ साहित्यिक मित्रों की फब्तियां सुन रहा था। एक तरुण कवि कह रहा था, 'बेचारे नवरंग के तीन कविता-संग्रह निकले पर उसके लिए कोई भी आयोजन नहीं हुआ।'

एक व्यापारी ने भद्दी हंसी हंसते हुए कहा, 'इन्दु जी के गुरू अनाम जी ने इतनी ख्याति अर्जित कर ली है पर उनके सम्मान में आयोजन तो क्या साधारण गोष्ठी भी नहीं हुई।'

हंसी।

अनाम के मन में तिलमिलाहट।

भंवर बाबू अनाम को उस भोज में सम्मिलित न करने के प्रयत्न में थे। उनकी विचारधारा एक प्रतिद्वन्दी की होकर भी काफी संयत थी अतः उन्होंने कभी भी इन्दु के समक्ष अपनी गंभीरता को नहीं तोड़ा। प्रायः वे इन्दु के समक्ष अपनी मोटी-भद्दी पत्नी की प्रशंसा ही करते रहते थे। उन्हें बस एक ही बात का दुःख था कि उनकी पत्नी साहित्य-रुचि की नहीं है।

इन्दु की सहेलियां उसे घेरे हुई थीं। भंवर बाबू बार-बार आग्रह कर रहे थे पर इन्दु उनके आग्रह पर विशेष ध्यान नहीं दे रही थी। केवल वह हर बार इतना ही कहती थी। 'मैं चलती हूं' और वापस बातचीत में मग्न हो जाती थी। उसे अपनी प्रशंसा सुनने में अत्यन्त आनन्द आ रहा था। उसके चेहरे पर गर्व की दीप्ति और श्री थी।

अन्त में भंवर बाबू को अपना स्वर बदलना पड़ा।

इन्दु ने अपनी सहेलियों से विदा मांगी। उसे इस व्यस्तता में अनाम का ख्याल तक नहीं आया। अनाम उसी कोने में खड़ा हुआ इन्दु के आग्रह की प्रतीक्षा कर रहा था और मन ही मन वह प्रशंसा से इन्दु में उत्पन्न स्त्रियोचित दर्प के बारे में एक मनोवैज्ञानिक की तरह विवेचन कर रहा था।

वह चली। उसने अनाम को नहीं देखा। अनाम घृणा से फुत्कार कर

मोन स्वर में चीखा, जी तो चाहता है कि इस घमण्डी को यहीं पर फटकारूं और उसे याद दिलाऊं कि तू आज जो है वह मेरे बूते से है।'''पर उसने आवेश में अपने विवेक को नहीं छोड़ा। उसे ख्याल आया कि उसका तनिक भी आपे से बाहर हो जाना, उसके और उसके प्रेम के लिए सर्वथा घातक हो सकता है। उसने अपने आंखों के भावों को छुपाने के लिए अपनी जेब से काला चश्मा निकालकर लगा लिया। अपनी बैसाखी को बगल में दबाकर वह चला। महिला जागृति परिषद् की कुछ सदस्याएं अभी तक सामान समेट रही थीं। बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनकर वह दया भरी दृष्टि से अनाम को देखने लगी। अनाम उसके नेत्रों की भाषा पढ़ गया। और उसने इतनी जल्दी कदम उठाए जितना एक साधारण आदमी सहजता से नहीं उठा सकता।

सीढ़ियों के बीच में ही उसे इन्दु मिल गई। वह प्रेमपूर्वक हल्की ताड़ना से बोली, 'कहां रुक गए थे ? मैं तुम्हारा इन्तज़ार करती-करती थक गई ?'

'क्यों ?' उसने बिलकुल अनिच्छा से कहा।

'वाह ! सांस्कृतिक संगम के मंत्री के घर खाना खाने नहीं चलना है ? भंवर बाबू नीचे खड़े हुए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

'मुझे माफ करो।'

'क्यों ?'

'मुझे मेरे मित्र के घर जाना है। पूर्व सूचना के अभाव में मैंने उसके यहां 'हां' भर ली थी।'

'ऐसा नहीं हो सकता।'

'देखो, मुझे मजबूर न करो।'

'पहले तुम अपना चश्मा हटाओ।' कहकर इन्दु ने अनाम का चश्मा अपने हाथ में ले लिया, 'अब कहो, मैं नहीं चलूंगा।'

अनाम ने अपनी दृष्टि को दीवार पर जमाकर कहा, 'मैं नहीं जाऊंगा।'

'पर क्यों? क्या मुझसे कोई गलती हुई?'

'नहीं।'

'फिर तुम मेरा अपमान क्यों करा रहे हो? चलो न अनाम?' उसका स्वर अति कोमल और मधुर हो गया। अनाम ने उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में देखा प्यार भरा आग्रह। अनाम गहरी सांस लेकर बोला, 'चलो।'

१७

अनामिका के मन में अनाम के प्रति पूर्ववत् आदर और सम्मान नहीं रहा। वह अब पूर्णतया संयत होकर यंत्रवत् अपने कार्य करती थी और उसी बात का उत्तर दिया करती थी जो उससे पूछी जाती थी। अनाम की अपने परिवार के प्रति उपेक्षा अनामिका को पसन्द नहीं आई। वह प्रायः अनाम को देखकर स्पन्दनहीन-सी हो जाती थी और उसके नारी-सुलभ हृदय पर त्रास की रेखाएं छा जाती थीं।

अनाम का प्रेम उसे प्रेम न लगकर एक वासना लगी, एक उद्दाम आवेश लगा जो यौवन में प्रत्येक तरुण हृदय में आ जाता है। वह सोचा करती थी निस्सन्देह यह पुरुष-प्रकृति का एक आवेश ही हो सकता है वर्ना स्नेह, प्यार और मानवीय भावनाओं को अन्तस् में छुपाए यह कलाकार अपने परिवार वालों के प्रति इतना क्रूर क्यों हो गया! जो हर माह होटलों में चाय-काफी के दस-बीस रुपये खर्च कर सकता है, वह अपनी बहिन की बीमारी में पत्थर कैसे बन सकता है?

अनामिका को यह सब पसन्द नहीं। वह अपनी मां को क्षण भर के लिए भी नाराज नहीं कर सकती। जब कि उसकी मां एक पापात्मा है, कलंकिनी है, अपराधिनी है। मां के हृदय को परखने वाली अनामिका की अभ्यस्त आंखें अब यह भी समझने लगी हैं कि मां को यह प्रश्न पूछना कि मेरा बाप कौन है, बड़ा कष्टदायक लगता है, इसलिए आजकल उसने मौन धारण कर

रखा है। इसपर भी वह मां को क्षण भर के लिए दुखी नहीं देख सकती। वह स्वयं मिट सकती है—मां की एक आह पर।

अनाम उसकी प्रकृति के नितान्त विपरीत है अतः उसे वह पसन्द नहीं। कई बार उसने काम छोड़ना चाहा पर दयाल बाबू ने ऐसा नहीं करने दिया।

आज कार्य समाप्त करके वह जैसे ही जाने लगी कि अनाम ने लिखे हुए खत देकर कहा, 'इन्हें लैटर-बाक्स में डालती जाना और यदि नीचे वरदा हो तो, ऊपर भेज देना।'

अनामिका 'हां' कहकर चली गई।

वरदा की मां से बात किए आज तीन दिन हुए थे। उस आयोजन में इन्दु के प्रति उसके मन में कुछ ऐसे भाव उत्पन्न हुए जिन्होंने उसे चाहकर भी इन्दु के पास नहीं जाने दिया। इन्दु ने एक बार कहलवाया भी था लेकिन उसने व्यस्तता का बहाना बना लिया।

आज उसे अपना मन खाली-खाली लगा। कई रोज़ से उसने खतों के जवाब नहीं लिखे थे, इसलिए उसने एकसाथ कई पत्र लिखे और फिर वरदा से बातचीत करने की सोची।

वरदा उस अपराधी की तरह कमरे में आई जिसे अपराध एक गौरव का कार्य लगता है। उसकी गर्दन अकड़ी हुई थी और उसने अपनी साड़ी का छोर कमर के चारों ओर लपेटकर बांध रखा था। वह चुपचाप आकर अनाम के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और हिन्दी न जानते हुए भी वह हिन्दी की पुस्तक के पृष्ठ पलटने लगी।

अनाम ने व्यंग्यमिश्रित स्वर में कहा, 'हिन्दी पढ़ना जानती हो?'

'हां!'

'सुनूं, क्या लिखा है?'

'मैं आपकी नौकरानी नहीं, जो आपकी आज्ञा का पालन करती रहूं।' उसने अनाम की ओर बिना देखे ही कहा।

'शांति से नहीं बोल सकतीं ?'

'नहीं।'

'न सही, पर मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर तुम्हें देना ही होगा। तुम्हारी मां मेरे पास आई थी।'

'मैं इस सम्बन्ध में कुछ भी सुनना नहीं चाहती।''' मैं उस युवक को चाहती हूं।'

'एक दिन तुम मुझसे भी प्यार करती थीं। तुमने कहा था कि मैं केवल 'आपकी' हूं।'

'लेकिन अब मैं आपसे घृणा करती हूं।'

वह उपदेशक की तरह बोला, 'सुनो वरदा, तुम्हें ज़रा सोचना चाहिए। मां-बाप का हमपर बड़ा अहसान होता है, ऋण होता है, उपकार होता है। हमें उनकी बात को समझना चाहिए।'

'मैं हर बात को समझती हूं। मां हठ क्यों करती है। वह मेरा विवाह 'परितोष' से क्यों नहीं कर देती ?'

'वह एक अपरिचित के साथ अपनी बेटी का हाथ कैसे दे सकती है ! फिर उसका घर-बाहर भी देखना होता है !'

'वह एक कारखाने में मज़दूर है। साठ रुपया लाता है।'

'केवल साठ रुपया ?'

'हां, साठ रुपया वाला प्राणी ही मुझे प्यार कर सकता है। हज़ार रुपये कमाने वाले को मैं क्यों पसन्द आऊंगी ? वह अप्सरा नहीं ढूंढ़ेंगे ? एक सुन्दर-स्वस्थ क्या, मुझे तो आप भी प्यार नहीं कर सकते।'

'तुम मेरी बात के मर्म को नहीं समझतीं ?' उसका स्वर ठंडा पड़ गया। वह परामर्श देता हुआ कहने लगा, 'तुम्हारे बाबा (पिता) श्रेष्ठ वर की तलाश में हैं। लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। परितोष आज तुम्हारे साथ प्रेम का ढोंग भी रच सकता है।'

'नहीं, वह मुझे सच्चे हृदय से चाहता है।'

अनाम दार्शनिकों की तरह अपनी दृष्टि को खिड़की के बाहर उड़ाता हुआ बोला, 'यौवन अत्यन्त निर्दय होता है। वह किसीकी चिंता और पक्ष नहीं लेता। वह मनुष्य के विवेक को एक ऐसे प्रकाश से चकाचौंध कर देता है जो वस्तुतः अन्धकार होता है।'

'मुझे वह अन्धकार बहुत प्यारा है।' वरदा उठ गई। उसने नथुने फुला-कर कहा, 'मुझे आपके उपदेश की जरूरत नहीं। कल मैं भी इन्दु दीदी के बारे में ऐसा ही कहूंगी तब? क्या आप इन्दु दीदी को मां के कहने पर छोड़ देंगे? नहीं, नहीं, नहीं!' उसका गला भर आया। उसका स्वर विनम्र हो गया, 'अनाम बाबू! आपने ठीक कहा कि यह यौवन बड़ा निर्दय है। यदि यह मुझे आपकी दुत्कार नहीं दिलाता तो मैं वस्तुस्थिति को नहीं समझती और न मैं जानती कि मैं क्या हूं?···मेरे भाग्य में परितोष ही लिखा है, मैं उसके साथ ही विवाह करूंगी।'

वह अपनी आंखों को पोंछती हुई चली गई।

अनाम ने हठात् सोचा, 'ओह! जीवन केवल निर्दय नहीं, निश्शंक भी होता है।'

१८

उसके दूसरे दिन ही 'साहित्य-सदन' की गोष्ठी में अनाम की इन्दु से भेंट हो गई। साहित्य-सदन एक साधारण सभा थी जहां कोई भी बड़ा सेठ नहीं आता था लेकिन उस दिन इन्दु के आगमन पर भंवर बाबू आए और भंवर बाबू के आगमन पर चाय-पार्टी का आयोजन भी रखा गया। सभा में कई साहित्यकारों ने अपनी-अपनी रचनाएं सुनाईं। इन्दु ने अपनी नई कहानी 'सम्मान की भूख' सुनाई जिसका विषय प्रच्छन्न रूप से अनाम पर व्यंग्य करना ही था। अनाम को बहुत बुरा लगा और उसने उसी समय मन

ही मन निश्चय किया कि वह शीघ्र ही उस चित्र को छपाकर उसकी मनोदशा का सही चित्रण प्रस्तुत करेगा।

सभा की समाप्ति के बाद अनाम ने इन्दु से कुछ बातचीत करने के लिए समय मांगा। भंवर बाबू ने बीच में अवरोध उत्पन्न करके कहा, 'नहीं, अभी आप मेरे घर खाना खाने चलेंगी।'

अनाम को इस उत्तर से आघात लगा। इन्दु उसको समझाती हुई बोली, 'मैं अभी खाना खाकर आती हूं। तुम मिष्टान्न-भंडार में मेरी प्रतीक्षा करना।'

इन्दु लपककर चली गई।

मनोज ने समीप आकर कहा, 'बंधु, चिड़िया हाथ से गई। अब क्यों हाथ मल रहे हो?'

अनाम ने जलती दृष्टि से उसे देखा और बिना प्रत्युत्तर दिए वहां से चल पड़ा। एकान्त में आकर वह बैठ गया। सोचने लगा, इन्दु क्यों बदल गई है! मैंने उसका कौन-सा अपराध किया है! वह नहीं जानती कि मैं उसे कितना प्यार करता हूं। उसके स्मृति-पटल पर ज़िवग की 'बीवेयर ऑफ पिटी' की नायिका घूम गई। वह उस सैनिक के प्रेम में उन्मत्त थी और वह कायर सैनिक कभी उससे दूर-दूर भागता था और कभी नज़दीक आता था। केवल करुणाजनित बन्धन! नहीं, इन्दु मुझे प्यार करती है। उसने समाज में जो प्रतिष्ठा और मान पाया है, वह मेरी वजह से। उसकी सभी सुन्दर कहानियां एक तरह से मेरी लिखी हुई हैं। विशेष रूप से उसके संग्रह की जिन कहानियों की चर्चा हो रही हैं, वे सभी मेरी हैं, मेरी! और आज वही मुझे छोड़कर अकेली भंवर बाबू, मोहनदास, राधाकृष्ण, माधोदास जैसे तथाकथित साहित्य-सेवकों और साहित्य-प्रेमियों के साथ बड़े-बड़े होटलों में भोज का सम्मान प्राप्त करती है?

वह कटु स्मृतियों से उद्विग्न हो उठा।

तब उसे दयाल पर गुस्सा आया। अपनी मां और परिवार वालों पर रोष आया और रोष आया अपने आप पर।

क्यों उसने इन्दु को भंवर बाबू से मिलाया ? यदि वह उससे मिलाता ही नहीं तो आज इन्दु के पंख नहीं लगते। वह एक साधारण अध्यापिका होकर इतना सरस, सम्मानप्रिय और घटनामय जीवन नहीं गुज़ारती।

अकस्मात् उसे अपनी एक भूल और याद आई। यदि वह इन्दु को धीरे-धीरे साहित्य-क्षेत्र में लाता और उसकी प्रतिष्ठा में क्रमशः वृद्धि कराता तो वह उसके काबू से बाहर नहीं जाती। और उसे इस तरह दुखी नहीं होना पड़ता, लेकिन आज वह इन्दु से स्पष्ट शब्दों में स्थिति के बारे में सुनना चाहेगा। वह चाहेगा कि इन्दु उसे साफ-साफ बताए कि वह उसे प्यार करती है या नहीं !

इस प्रकार अन्तर्द्वन्द्व को अपने मन में लिए वह मिष्टान्न-भंडार में आया, भंडार में प्रवेश करते ही सबकी दृष्टि उसकी बैसाखी पर पड़ी। कुछ व्यक्तियों ने आपस में बातचीत की। अनाम को उनकी भंगिमा से यही लगा जैसे वे उसके बारे में ही चर्चा कर रहे हैं। अनाम ने घृणा से उन व्यक्तियों को देखकर मन ही मन कहा, 'यांत्रिक सभ्यता की दोगली सन्तान !'

वह एक मेज़ पर बैठ गया। कन्धे पर उसके जो थैला लटक रहा था, उसमें से उसने अपना छपा नया चित्र निकालकर रखा ताकि समीप बैठे आदमियों का ध्यान उसकी ओर जाए और उन्हें पता लगे कि यह आदमी लंगड़ा ज़रूर है, पर है कलाकार। ताकि कुछ काल पूर्व उनकी आंखों ने जिस करुणा से उसे देखा था, उन्हीं आंखों में सम्मान की छायाएं तैरने लगीं।

बैरा पानी का गिलास रखकर चला गया था।

अनाम पानी पीकर समीप के पड़ोसी को देखने लगा जो एक दफ्तर का युवक जान पड़ रहा था। उस अप्रत्याशित युवक ने अपनी बात समाप्त

करके उससे पूछा, 'क्या मैं आपका यह चित्र देख सकता हूं ?'

'ज़रूर !'

चित्र के एक कोने में अनाम ने लिखा था, 'पर्सनल।' उसे देखकर उस युवक ने आदरपूर्वक पूछा, 'क्या यह चित्र आपका बनाया हुआ है ?'

'हां, यह मेरा ही बनाया हुआ चित्र है।' उसका स्वर इतना तेज़ था कि कई व्यक्तियों का ध्यान न चाहते हुए भी उसकी ओर चला गया, 'वैसे मेरे कई चित्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बराबर छपते रहते हैं।'

'हां, हां, मैंने आपके कई चित्र देखे भी हैं।' उसने यह कहकर अनाम को चाय पीने का आग्रह किया। अनाम ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी।

इन्दु आ गई।

गहरी सांस लेकर वह अनाम के समीप बैठी। उस युवक की दृष्टि इन्दु के सलोने चेहरे पर जम गई। अनाम ने दो कप चाय का आर्डर दिया।

'बहुत देर कर दी।'

'क्या हम उस कोने वाली मेज़ पर नहीं बैठ सकते ?'

'क्यों नहीं।'

वे दोनों दूसरी मेज़ पर चले गए जिसकी आसपास की मेजें खाली थीं। इन्दु ने बैठते हुए कहा, 'भंवर बाबू मुझे आने ही नहीं दे रहे थे, वे सिनेमा चलने के लिए आग्रह कर रहे थे।'

'तुम्हें सभी आग्रह करेंगे। इन्दु ! मैं आज तुमसे एक बात का सही उत्तर चाहता हूं !'

'क्या ?'

'तुम यह भली भांति जानती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। तुम्हारे तनिक रूखे व्यवहार तथा उपेक्षा के पश्चात् मेरे हृदय पर कष्टदायक आघात लगते हैं। तुम मेरा अपमान करती हो, उसे मैं परिष्कृत अत्याचार समझकर सह लेता हूं।'' 'तुम पहले मेरी सुन लो। जब तुम मुझे सर्वप्रथम

मिली थीं और जिस श्रद्धा का तुमने प्रदर्शन किया था तब मैंने तुम्हें यौवन, सौन्दर्य गुण से सम्पन्न नारी समझकर अपना हृदय पहली ही भेंट में दे दिया था। धीरे-धीरे तुम मेरे सम्पर्क में आईं। मैंने तुम्हें अपने भावों के अनुकूल पाया। मेरे मन-मन्दिर में प्रतिष्ठापित 'भैरवी' का प्रतिरूप मैंने तुममें देखा और मैंने तुम्हारे भीतर के जौहर को पहचानकर उसे प्रोत्साहन दिया और तुम्हारी रुचियों को अपने अनुरूप ढाला। हमारा प्रेम निरभ्र आकाश में पूनम के चांद की तरह पूर्ण दीप्त हुआ। अचानक भंवर बाबू से भेंट हो जाने के बाद तुममें परिवर्तन आने लगे। दुष्ट दयाल द्वारा प्रचारित उस भेंट-कांड के बाद तुम मुझसे दूर-दूर भागने लगीं।···क्यों? जब मैंने तुम्हें साफ-साफ बता दिया कि उस उपस्थिति के समक्ष मैं तुमसे अपना अपनत्व सबसे अधिक करके दिखाना चाहता था।···लेकिन तुमने मेरी भावनाओं को नहीं समझा और मुझे पीड़ा पहुंचाने लगी। तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं, सच्चे मन और तन से।'

'हम सभी एक दूसरे को प्यार करते हैं। शायद मैं भी तुम्हें प्यार करती हूं। तुमने मुझे लोकप्रिय बनाया और सम्मान दिलाया, इसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूं। तुम चाहो तो मैं इन सभी अहसानों का बदला भी चुका सकती हूं।'

'फिर तुम मुझसे शादी कर लो।'

'इसके बारे में मैं अभी अगले चार वर्ष तक नहीं सोच सकती। फिर मेरी मां का जीवन मुझपर निर्भर है, ऐसी हालत में मैं यह विचार ही नहीं कर सकती।'

'फिर हम गहरे मित्र बनकर तो रह सकते?'

'नहीं! अब मैं तुमसे साधारण सम्बन्ध रखना चाहूंगी। वस्तुतः हमने इतनी गहरी मित्रता करके एक दूसरे के प्रति अन्याय किया। मुझे यह मालूम होता कि तुम इतने महत्त्वाकांक्षी और सम्मान के भूखे हो, तो कदा-

चित् में तुम्हें प्रोत्साहन नहीं देती। कल मनोज ने तुम्हारी मां की चिट्ठी पढ़ाई थी। उस चिट्ठी को पढ़कर कोई भी युवती तुमसे अपने सम्बन्ध समाप्त कर सकती है। वह कलंकपूर्ण शब्दावली कदाचित् एक छिनाल के लिए भी प्रयोग नहीं की जाती होगी।'' 'तुम्हारी मां मुझे एक वेश्या समझती है, तुम्हारी सारी कमाई में और मेरी मां खा जाती हैं। उसने मुझे नागिन, हृदयहीन और न जाने किन-किन विशेषणों से विभूषित किया, मैं तुम्हें नहीं बता सकती। इसलिए मैं चाहती हूं कि अब हमें परस्पर केवल व्यवहारिक सम्बन्ध रखने चाहिएं।'

'चिट्ठी!' वह आश्चर्य-चकित रह गया।

'तुम अनजान बन रहे हो। तुम्हारे घर की हालत का पता मुझे लग चुका है। मनुष्य का अतिव्यक्तिवाद भी प्रयोजनहीन होता है। अपनी जिम्मेवारियों के प्रति उदासीन होकर केवल अहम् के पोषण में तन्मय हो जाना भी एक मानसिक ग्रन्थि है, एक अमानवीय कृत्य है। मैं तुमसे विनती करूंगी कि तुम अपनी जिम्मेवारी को समझो।'

अनाम के विचार की गहन वीथिका में आन्दोलन मच गया। एक साथ उसके मस्तिष्क में इतने विचार उठे कि उसे केवल मौन रहना पड़ा। उसकी बुझी-बुझी दृष्टि में व्यथा और विस्मय के मिश्रित भाव तैर उठे।

अपने क्षोभपूर्ण भावों को छुपाती हुई इन्दु पुनः बोली, 'मुझे तुमसे हमदर्दी है। तुम्हें अब अपने मन से इस 'प्रेयसी' और 'विवाह' शब्द को निकाल देना चाहिए।···मेरा पथ दूसरा है। मुझे अपनी स्कूल की हेडमिस्ट्रेस होना है, संसार और समाज में नाम कमाना है। और अपनी असहाय मां का भरण-पोषण करना है।'

अनाम के कुछ कहने के पूर्व ही इन्दु पुनः बोली, 'मुझे साहित्य से हार्दिक लगाव नहीं है। वह मेरी एक हॉबी है। तुम्हारी संगति से वह मेरे जीवन का लक्ष्य बनने लगा है, जिसे मैं आज फिर उसी हद में लाकर छोड़ रही हूं।'

इसके बाद वे दोनों चुपचाप बैठे रहे।

अनाम आवेश भरे स्वर में बोला, 'तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया! पहले क्यों नहीं कहा कि तुम 'वह' नहीं हो, जो मैं समझ रहा हूं। तुममें स्वार्थ की इतनी घृणित मनोवृत्ति होगी, इसका मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था।···क्या तुम जीवन भर विवाह नहीं करोगी?'

'यह मैं अभी कैसे कह सकती हूं लेकिन मैं तुमसे विवाह नहीं करूंगी, यह मेरा अंतिम निर्णय है।'

'लेकिन क्यों?'

'हर स्त्री अपने परिवार में प्रतिष्ठा की कामना रखती है और तुम्हारे घर वाले तो अभी से मुझे 'वेश्या' कहने लगे हैं।'

जब वे दोनों वहां से चले तब दोनों प्यालों की चाय पंखे की हवा से कांप रही थी। किसीने भी चाय होंठों से नहीं लगाई।

१९

अनाम इन्दु को अपने हृदय-पटल से नहीं मिटा सका। इन्दु ने स्थिति को स्पष्ट कर दिया था किंतु अनाम को उसपर विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा कि यह उसकी मूर्ख मां के पत्र की प्रतिक्रिया है। यह सब आवेश में कहा गया किसी त्रास पाई युवती का प्रलाप है। इसपर अन्तर्मन से विश्वास नहीं करना चाहिए। वह शीघ्र ही इन्दु से पुनः मिलेगा और उससे शांति से सारी बातें दुबारा कहेगा। इतना विचारने के पश्चात् भी उसका साहस एकाएक इन्दु के सामने जाने का नहीं हुआ। जब वरदा का विवाह उसके हठ के अनुसार उस मजदूर परितोष से होने का निश्चय हुआ, वह उसके तीसरे दिन, भंवर बाबू से मिलने के लिए गया। भंवर बाबू ने उसे अपने दफ्तर के बाहर आधा घंटा बिठाए रखा, व्यस्तता की बात कहकर।

जब उसने भंवर बाबू के केबिन में प्रवेश किया तब उन्होंने मधुर मुस्क-

राहट के साथ उसका स्वागत किया और उसे खुशखबरी सुनाई, 'इन्दु अपनी स्कूल की हैडमिस्ट्रेस बन गई है। बताइए, आप हमें कब मिठाई खिला रहे हैं।'

अनाम ने न चाहकर भी कहा, 'जब आप कहें।'

'फिर हम आपको कह देंगे।'

'भंवर बाबू ! मैं आपसे यह पूछने आया हूं कि आप मेरे चित्रों का एलबम कब प्रेस में दे रहे हैं ? आपके वायदे के अनुसार वह अब तक छप जाना चाहिए था।'

'बात यह है कि इधर मैं काफी व्यस्त रहा हूं। फिर इसी सप्ताह मैंने इन्दु जी का उपन्यास प्रेस में दे दिया है।'

'इन्दु का उपन्यास ! वह तो मुझसे उसपर बातचीत करना चाहती थी।'

'बाद में शायद आवश्यकता न महसूस हुई हो। वैसे उनका उपन्यास काफी अच्छा बन पड़ा है।'

अनाम ने टूटते स्वर में कहा, 'फिर भी आपको मुझे दिखा देना चाहिए था। अभी तक हम जितना समझते हैं, उतनी वह नहीं। उसके पीछे मेरी प्रबुद्ध चेतना काम कर रही है।'

'यह इन्दु जी का अपना दृष्टिकोण है।'

'लेकिन आपको मेरा एलबम नहीं रोकना चाहिए। आखिर समय पर उसका प्रकाशन न होना भी मेरे लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।'

'देखिए अनाम जी, मैंने आपको एडवांस रुपये दे दिए हैं। प्रकाशित मैं अपनी सुविधा के अनुसार करूंगा।'

भंवर बाबू ने बात समाप्त कर दी।

अनाम ने बात को बदलते हुए पूछा, 'इन्दु कहां मिल सकती है ?'

'उसने स्कूल से छुट्टी ले रखी है। आजकल वह मेरे मित्र श्री राधाकृष्ण

के साथ नई योजना बना रही है। राधाकृष्ण का विचार है कि वे एक मासिकपत्र निकालेंगे।'

अनाम उठने लगा। भंवर बाबू ने रोककर कहा, 'क्या आपसे इन्दु नाराज़ है? कल वह कहने लगी कि अनाम ने मेरी प्रेस्टीज पर बहुत धक्का लगाया है। सचमुच आपने ऐसा करके अच्छा नहीं किया।'

अनाम एक पल भी वहां नहीं ठहरा। सीधा वहां से इन्दु के घर गया। संयोग से वह वहीं पर मिल गई। उसने उसके कमरे में चढ़ना चाहा। मां ने रोका, 'वह सो रही है।'

'मुझे बहुत जरूरी काम है।'

'फिर उसे ही अपने यहां बुला लेते। तुम आने की बार-बार तकलीफ क्यों करते हो? कहीं कोई दुर्घटना हो गई तो···। राम, राम! तुम्हारा उठना-बैठना कठिन हो जाएगा।'

'मौत से बड़ी कोई सज़ा नहीं है।'

वह इतनी जल्दी कूद-कूदकर ऊपर चढ़ा जैसे वह इन्दु की मां को यह बताना चाह रहा हो कि वह लंगड़ा नहीं है। कभी-कभी बैसाखी के सहारे वह एक-एक सीढ़ी फांद भी जाता था। जिससे उसकी कमर में पीड़ा का झटका लगता था।

कमरे में घुसते-घुसते उसकी सांस फूल गई। ललाट पर श्रम के प्रतीक स्वेदकण उभर आए थे। उसने बैसाखी का सम्बल लेकर रूमाल से अपना मुंह पोंछा और स्निग्ध ज्योत्स्ना-सी सुषुप्त इन्दु को देखने लगा। इस समय इन्दु का मुख स्वप्न में खोया-सा लगता था क्योंकि कभी-कभी उसके रक्तिम अधरों पर पवित्र मुस्कान खेल जाती थी। उसका मुख इतना मनोरम और निर्दोष लगता था जितनी प्रभु की प्रार्थना। वह कुछ क्षण मन्त्रमुग्ध-सा उसे निहारता रहा। फिर आगे बढ़ा और उसके समीप पलंग खींचकर चुपचाप बैठ गया।

उसने इन्दु को नहीं जगाया। वह उस अतुल सौन्दर्य का, जो चिन्ताओं से मुक्त करने वाली निद्रादेवी की अंक में था, अनवरत रसपान करना चाहता था। वह उसे अतृप्त दृष्टि से देखता रहा, देखता रहा।

समीप एक लिफाफा पड़ा था। वह लिफाफा भंवर बाबू का था। उसने इन्दु को लिखा था। कल मैंने आवेश में आपका हाथ चूम लिया था, उसके लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूं। सच तो यह है कि जब तक आप मुझे क्षमा नहीं करेंगी तब तक मैं आपके समक्ष आने का साहस नहीं कर सकूंगा। फिर आपको इस युग में इन स्पर्श-चुम्बन को हमारा नया एटीकेट समझना चाहिए। आप एक स्वतन्त्र प्रकृति की युवती हैं। नये युग में यदि आपको तारों को छूना है तो नये मानदंडों और पाश्चात्य संस्कृति-सभ्यता को अपनाना चाहिए।···कल की पार्टी में आपकी कहानियों और योग्यता की बड़े-बड़े सेठों और पत्रकारों ने प्रशंसा की। लेकिन मेरी धृष्टता के बाद आप इतनी उदास हो गईं कि मुझे सारी रात नींद नहीं आई। तब मैंने अनुमान लगाया कि आपके मन में उस लंगड़े चित्रकार के प्रति सहानुभूति है। उसे लेकर आपके हृदय में अन्तर्द्वन्द्व व संघर्ष होता रहता है। लेकिन मेरा ऐसा ख्याल है कि वह एक साधारण चित्रकार है, तिकड़मबाज़ है, चतुर है। अंग्रेज़ी की चित्रकारों की शैलियों की नकल करता रहता है, भूखा और गैर-ज़िम्मेवार है। उसके पीछे परेशान होकर आप अपने सुन्दर और सुनहरे भविष्य को गहरे अन्धकार में ढकेल रही हैं।

क्षमा के साथ, आपका

भंवरलाल

उस लिफाफे के पास इस पत्र का उत्तर भी लिखा हुआ था। इस उत्तर में इन्दु ने इस बात को थोड़ा भी बुरा नहीं माना था। इस उत्तर में इन्दु ने यह भी लिखा था कि वह अनाम की बुराई सुनना नहीं चाहती। आजकल उससे उसके साधारण सम्बन्ध हैं। वह उसे लेकर तनिक भी चिन्तित और

व्यग्र नहीं होती।···इसके पश्चात् ऐसा लगता था कि वह सो गई थी।

अनाम अब वहां अधिक नहीं ठहरा और सीधा वह वहां से अपने घर चला गया।

जब वह घर आया तब उसकी मां का एक आक्रोश भरा पत्र पड़ा था। उस पत्र में उसने अनाम को बहुत भला-बुरा कहा था और लिखा था कि वह उस छोकरी के पीछे अपने परिवार और बहिनों को संकट के महागर्त में फेंक रहा है। मां ने इन्दु के लिए जो-जो विशेषण प्रयोग किए थे, वे नितान्त बाज़ारू औरतों को दिए जा सकते थे। उसका पत्र पागल के प्रलाप-सा जान पड़ता था और उसने अत्यन्त हृदयहीनता का परिचय देते हुए लिखा था कि वह उसका बेटा नहीं, कसाई है। अब उसे यह भी विश्वास हो गया था कि मनोज ने जो कहा, वह सच ही कहा था।

अनाम ने नेत्र बन्द कर लिए। उसके समक्ष मां की विकृत और भयोत्पादक मुद्रा बड़े अंगारे-सी नाच उठी। उसके स्वर में कठोरता का पूर्ण आभास था। वह अपने बाएं हाथ ज़ोर-ज़ोर से हिला रही थी मानो वह कह रही थी, तुम्हें क्या हो गया है? क्या तुम्हारी प्रकृति इतनी कठोर और कृपण हो गई है कि तुम्हें हमपर किंचित् भी दया नहीं आती। तुम उस युवती के पीछे अपने कुटुम्ब को तबाह कर रहे हो जो तुम्हें केवल छलना जानती है।

उस खत में यह भी लिखा था, 'आजकल सरोज के रंग-ढंग अच्छे नहीं हैं।···तुम तुरन्त आ जाओ।'

अनाम ने पत्र फाड़कर मन ही मन कहा, मैं वहां आ जाऊं और अपने आपको खत्म कर दूं! अपने कलाकार को मार दूं! छिः!

उसने कार्ड लिखा, 'तुम समझ लो कि मैं मर गया।'

२०

इन्दु उसी सन्ध्या अनाम के पास आई। अनाम रुग्ण व्यक्ति की तरह पलंग पर पड़ा हुआ था। उसका मुख सफेद और पीला-पीला लग रहा था।

इन्दु को अपने यहां देखकर उसे तत्क्षण कोई प्रसन्नता नहीं हुई। उसने बेमन इन्दु की ओर देखा।

'तुम घर आए थे और फिर मुझसे बिना मिले क्यों वापस चले आए?'

'तुम सोई हुई थीं, सोए हुए को जगाना अच्छा नहीं समझा।'

'लेकिन तुम वहां बहुत देर तक बैठे थे।'

'मैं तुम्हारे जागने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब थक गया तब वहां से उठकर चला आया।'

अनाम ने बात नहीं बढ़ने दी। अनामिका आ गई थी। इन्दु को देखकर उसके चेहरे पर कोई भी नया भाव नहीं आया। सर्वथा संयत प्रकृति की स्त्री की तरह वह लग रही थी। अनाम ने उसे चाय बनाने के लिए कहा। वह चली गई। अनाम और इन्दु दोनों एक दूसरे को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगे।

चाय का दूध फट गया था। अतः अनामिका दूध लेने चली गई।

इन्दु ने कहा, 'तुम्हें अपने घर चला जाना चाहिए। तुम्हारा परिवार तुम्हारे कारण बड़ा कष्ट झेल रहा है। तुम्हें अपने परिवार की ज़िम्मेवारी को समझना चाहिए।'

'तुम सब कुछ समझते हुए मुझे ऐसा क्यों कहती हो? क्या मेरे हृदय के बन्धन को तुम इतना कमज़ोर समझती हो।'

'इस हृदय और इस मन को संभालकर रखो। जब ये दोनों सीमाहीन होते हैं तब परिणाम शुभ नहीं निकलते।'

'व्यक्ति को कुछ बनने के लिए त्याग करना पड़ता है। कठोर बनना

होता है, स्वजनों-परिजनों के मोह को छोड़ना पड़ता है। व्यक्ति का निर्माण सहज नहीं।'

'तुम जिसे निर्माण कहते हो, उसे मैं पलायन कहती हूं। मेरी भी विधवा मां है, मैं उसका पोषण करती हूं। भला तुम पारिवारिक ज़िम्मेदारियों से क्यों भागते हो, ऐसा करना तुम्हारे परिवार के लिए कष्टप्रद होगा और मुझपर भी कलंक लगेगा।···हालांकि मैंने तुम्हारा कोई अहित नहीं किया। मुझे लेखिका बनाने में तुम्हारा बड़ा सहयोग है। मेरी प्रसिद्धि की नींव तुम्हारी डाली हुई है किन्तु अब मेरी बदनामी की ज़िम्मेवारी भी तुम्हारी है। कल मैंने एक मासिक में कहानी पढ़ी थी, 'तैमूर की प्रेमिका।' उसमें मुझे उसने एक सोशल-गर्ल से अच्छा पेंट नहीं किया। देखो, अनाम! तुम अब यहां से चले जाओ, मैं तुम्हें हाथ जोड़ती हूं।'

'मैं यहां से नहीं जाऊंगा।'

'क्यों?'

'यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। (मन में उसने कहा, तुम्हें लिए बिना नहीं।) मेरा परिवार भूखा-प्यासा है इससे तुम्हें क्या? तुमने तो मेरा एलबम छपने से रुकवा दिया। जानती हो, भंवर बाबू मेरे एलबम की जगह तुम्हारा उपन्यास छाप रहे हैं?'

'मैंने यह सब नहीं किया। यह उनका अपना दृष्टिकोण है।'

'यह दृष्टिकोण नहीं, मुझे जलाने के तरीके हैं।···इन्दु! आखिर तुम्हें क्या हो गया है? तुम इतनी बदल क्यों गई हो? क्या सचमुच तुम मुझसे प्यार नहीं करतीं?'

'प्यार का मतलब यह नहीं है कि मैं तुमसे विवाह ही करूं? विवाह के मामले में मेरे अलग विचार हैं। तुम स्वयं जानते हो कि मैं एक महत्वाकांक्षिणी युवती हूं। मेरे सपने रंगीन और महलों को छूने वाले हैं। तुम्हें अपने दिमाग से यह निकाल देना चाहिए कि मैं तुम्हारे साथ सुखी रह सकती हूं।'

'ऐसा न कहो।' उसने करुण स्वर में कहा, उसकी आंखों में बड़ी दीनता थी। उसका गला रुंध गया, 'मैं नये प्रयत्नों से तुम्हारी जरूरतें पूरी करूंगा। मैं तुम्हें पूर्ण सुखी रखूंगा।'

'यह असंभव है। मैं तुम्हारे साथ एक मित्र के रूप में प्रसन्न रह सकती हूं उम्रभर जीवन-साथी के रूप में हमारा रहना दुर्लभ है। तुम्हारी मां-बहिनें और बूढ़ा बाप मुझे हेय दृष्टि से देखते हैं। फिर तुम्हें 'तैमूर की प्रेमिका' को पढ़ लेना चाहिए। तुम्हारे मित्रों की दृष्टि में भी मेरा चरित्र चांद की तरह है, जो कई दागों से भरा हुआ है।' उसके स्वर में दर्द था। वह ऐसे रुक-रुककर कह रही थी जैसे उसे एक-एक शब्द बोलने में अत्यन्त पीड़ा हो रही है। यदि कोई नेत्रों की भाषा का पंडित होता तो वह तुरन्त समझ जाता कि जो यह बोल रही है, वह विवश होकर बोल रही है।

अनामिका ने आकर बताया कि दूध नहीं मिला।

अनाम ने तुरन्त कहा, 'चलो, हम दोनों कहीं और चलें।'

'मुझे चाय की आवश्यकता नहीं।···बस, मैं अब तुम्हें अन्तिम रूप से यह कहना चाहती हूं कि तुम मुझे समझने का प्रयास करना। मैं उन सम्बन्धों को निरर्थक समझती हूं जिसके कारण मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा घटती है और जो मुझे तकलीफ देते हैं।'

उसने एक ही सांस में कहा, 'तुम्हें यह पता नहीं है कि मैं कितनी विवश हूं।'

इन्दु अनाम को इस तरह देखने लगी जैसे वह एक भयभीत आतंकित हिरणी हो।

'तब मैं विगत को एक खेल समझूं! उसे प्रकृति और मानव-जाति के सुन्दर कोमलतम रूप 'नारी' का एक कठोर अभिनय जानूं!···या यह समझूं कि तुम्हें भंवर बाबू की अतुल सम्पति ने मोह लिया है!' अनाम ने घृणा से कहा।

'मैं तुम्हारे किसी भी लांछन को सहर्ष सह सकती हूं। तुम छिनाल और कुलटा भी कह सकते हो जिनके जीवन और चरित्र अत्यन्त रहस्यपूर्ण होते हैं लेकिन मैं अब तुमसे ऐसा सम्बन्ध रखना नहीं चाहती जो मुझे व्यर्थ की पीड़ाएं दे।'

'यह तुम्हारा अन्तिम फैसला है।'

'हां।' वह उठ गई। अप्रत्याशित उसने कहा, 'तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि तुम्हारा परिवार बहुत दुःख में है।'

वह चली गई।

अनाम वस्त्र पहनकर बाहर चला।

अनामिका ने पूछा, 'खाना?'

'मैं खाना नहीं खाऊंगा।' वह चला गया। उस रात वह सुनसान सड़कों पर घूमता रहा। उसकी खट् खट् सड़क पर हथौड़े की आवाज़-सी लगती थी जिसे किसी लकड़ी के तख्ते पर पटका जा रहा हो। रात को लगभग वह एक बजे लौटा। उसके सारे कपड़े भीग गए थे। उसकी बैसाखी का निचला हिस्सा अपनी शक्ल से फैलकर कुछ बड़ा हो गया था। वह इतना थक गया था कि बिस्तर पर पड़ते ही उसे नींद आ गई। उसके मन के उठते हुए तूफान भी उसकी नींद में बाधक नहीं बन सकें।

२१

इधर जो एक माह बीता, उसमें कई सुखद और दुःखद घटनाएं हुईं। वरदा का विवाह परितोष से हो गया लेकिन विवाह के बाद अनाम ने देखा—उसके मुख पर यौवन-श्री के स्थान पर एक अव्यक्त उन्मनता व्याप्त हो गई है। जब-जब वह अपनी मां के पास आती है तब-तब वह अपने आपको उसे विश्व की सबसे सुखी स्त्री बतलाती है। हर क्षण वह हंसती रहती है लेकिन उसकी हंसी में उसकी आत्मिक वेदना सागर की लहरों में सूरज की

किरणों के प्रतिबिंब-सी दमकती रहती है। वह जिन सपनों को संजो रही थीं उसका रूप वर्तमान स्थिति से सर्वथा भिन्न था।

और जब अनाम उससे बातचीत करने का प्रयास करता है तब वह बड़ी उदासीनता से केवल मुस्करा दिया करती है। कहती है, 'अनाम बाबू! मुझे मेरी पसन्द का स्वामी मिल गया लेकिन आपको अपनी पसन्द की वधू नहीं मिली। अब मुझे लगा कि प्राणी की इच्छा सहजता से पूरी नहीं होती।···देखो न, आपको इन्दु ने भुला दिया है।'

अनाम के मुख की उज्ज्वलता लुप्त हो जाती। वह जलती निगाह से वरदा के अन्तस् में निहित डाह को देखने का प्रयास करता। वरदा उसे पीड़ित करना चाहती है। उसकी भावनाओं पर आघात करना चाहती है। अतः वह प्रसंग को तूल नहीं देता था। बात को बदलने की कोशिश करता। कहता—'वरदा! जीवन के अभाव से वंचित रहना भी एक कलाकार के लिए ठीक नहीं। इन्दु का और मेरा रास्ता अलग-अलग है। फिर भी मैं उससे घृणा नहीं करता।'

'यह विवशता का संतोष है। आपने एक काली लड़की के प्रेम को ठुकराया और इन्दु ने एक लंगड़े के प्रेम को लात मारी। अनाम बाबू! आप अब तुरन्त एक सुन्दर और स्वस्थ लड़की से विवाह कर लीजिए ताकि इन्दु को मालूम हो जाए कि आप अच्छी से अच्छी लड़की के स्वामी बन सकते हैं।

अनाम वरदा की दुष्टता को समझता था लेकिन वह क्या उत्तर देता? जब कि वह यह जानता था कि वरदा उसे सताने के लिए ऐसा करती है। वह दुखी भाव से वरदा की ओर देखता जिसकी आंखों में वेदना अंगारे-सी दीप्त रहती थी।

अनाम इस बीच नगर की किसी भी गोष्ठी और आयोजन में सम्मिलित नहीं हुआ। वह दूर गलता की पहाड़ियों की शान्त-निर्जन और नीरव हरीतिमा पर लगातार घूमा करता था और तालाब की लहरों द्वारा चूमते हुए

कूलों को अपने जीवन के स्वर्णिम क्षणों के बारे में बताया करता था। इन्दु के बारे में भिन्न-भिन्न चर्चाएं चल रही थीं। मनोज यदा-कदा उससे मिलने आ जाया करता था। लेकिन अनाम उसकी बातों में तनिक भी दिलचस्पी नहीं दिखाता था। वह एक निराश और जीवन से चिढ़े हुए युवक की तरह अपने उपदेश देने वाले मित्रों से मिला करता था और कहता था कि वह सबके लिए मर गया।

अनामिका के स्नेह ने पुनः करवट ले ली थी। एक बार दयाल भी आया था। उसकी प्रवृत्ति और आचरण में तनिक भी परिवर्तन नहीं आया। आकर अनाम से कहने लगा, 'मुझे अन्नो ने बताया कि इधर तुम्हारी हालत बड़ी खराब है। कुछ बनाते-बिगाड़ते नहीं। क्यों? ऐसा कैसे चल सकता है?'

वह घृणा और दुःख मिश्रित दृष्टि से दयाल को घूरकर बोला, 'मुझे आपसे सख्त नफरत है। मैं आपकी सूरत भी देखना नहीं चाहता।'

'क्यों?' बिलकुल अनजान बनते हुए दयाल बोला, 'मैंने तो कोई ऐसा कसूर नहीं किया।'

'आपको भंवर बाबू के पास जाने की क्या जरूरत थी?'

'यह भी पूछने की बात है? एक सूदखोर अपने कर्जदार को डूबते देखकर क्या शान्त रह सकता है? उसके लिए बुरे से बुरा तरीका भी श्रेष्ठ धर्म के बराबर होता है।'

'लेकिन उसका परिणाम क्या निकला, इसे भी आप जानते हैं? आखिर आपको क्या मिला, इन सभी बातों से?'

दयाल के अधरों पर एक विकृत हंसी खेल गई। वह बोला, 'मुझे मेरी सबसे प्रिय वस्तु और परमेश्वर मेरा पैसा मिल गया। तुम नहीं जानते कि मुझे पैसा खर्च करता हुआ दूसरा आदमी भी अच्छा नहीं लगता। जब मैं किसीको किसी लड़की के लिए अच्छे रेस्त्रां में पचास-सौ रुपये खर्च करते देखता हूं, तब मुझे बड़ा कष्ट होता है। मेरे हाथ अनायास अपनी दोनों

जेबों पर चले जाते हैं जो प्रायः खाली ही रहती हैं और मुझे ऐसा लगता है कि यह पैसा मेरी ही जेब से खर्च हो रहा है।'

अनाम की इच्छा हुई कि इस निर्लज्ज को अपनी बैसाखी से पीटे। आदमी है या शैतान ? लेकिन वह काफी संयत रहा। वह दयाल से बिगाड़ना नहीं चाहता था। इधर वह बड़े अभाव में था। अन्नो ने उसके लिए अपना बहुत रुपया खर्च कर दिया था। पता नहीं, वह इतने रुपये कहां से लाई थी ? अतः अपने घर आए दयाल से लाभ उठाना चाहा। भावना-जगत से यथार्थ भूमि अधिक कठोर और स्पष्ट परिणामों को लेकर उसके सामने आई। उसने कहा, 'आपके कारण मुझे अत्यन्त मानसिक यंत्रणाएं उठानी पड़ रही हैं।'

'क्यों ? इसलिए कि इन्दु तुमसे नाराज हो गई ? वह आज नहीं कल तुमसे अवश्य रूठती। उसमें और तुममें कोई समता नहीं। वह बहुत बड़ी बनना चाहती है। उसे लखपति पति चाहिए। तुम्हारे जैसे दरिद्र और लंगड़े के साथ विवाह करके वह नगर की सबसे प्रगतिशील श्रेष्ठ महिला नहीं बन सकती।···अनाम ! अभी इन्दु को तुम्हारी नहीं भंवर बाबू और राधाकृष्ण बाबू की जरूरत है। अब भी तुम यहां से चले जाओ, अपने घर को संभालो। ···मैं तुम्हें कुछ रुपया उधार दे सकता हूं। लेकिन एक शर्त पर।'

'कौन-सी ?'

'तीन सौ दूंगा और पांच सौ का हैंडनोट लिखाऊंगा।'

'नीच ! कमीन !' उसने मन ही मन घृणा से दयाल पर थूका और प्रकट में बोला, 'यह कुकर्म द्वारा कमाया हुआ पैसों का उपभोग कौन करेगा ?'

'मैं अपने जीते जी किसीको अपनी 'एक पाई' भी खर्च करने नहीं दूंगा। मरने के बाद भी इस धन पर सांप बनकर बैठूंगा। मुझे अपनी धन से भरी तिजोरी को देखने में कितना संतोष मिलता है, इसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।'

इसके बाद कटु बातों के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ। उठता हुआ दयाल बोला, 'तुम्हें मेरी शर्त मंजूर हो तो किसी समय भी मेरे घर पर आ सकते हो, मैं तुम्हें रुपये दूंगा।' दयाल वहां से चला गया।

दयाल जैसे ही उसके घर से बाहर निकला वैसे ही वह अपने कमरे में ज़ोर से चिल्लाया, 'राक्षस!'

अनाम की मनस्थिति बड़ी चंचल और अस्थिर हो गई। वह बात-बात में बिगड़ पड़ता था और अपनी भाषा में अपशब्दों का भी प्रयोग कर लेता था। इन्दु के बारे में जब वह कुछ भी सुनता तो उसके मन पर हथौड़ा-सा चलने लगता और क्षण भर के लिए वह अपने आपको एक सुन्दर और स्वस्थ युवक मानने लगता, जिसकी टांग टूटी हुई नहीं है और जो काफी सभ्रान्त तथा सम्पन्न घराने का है। जिसके पास अपार धन और कई कारें हैं। जो एक प्रकाशन संस्था चला सकता है, जो एक मासिक पत्र भी निकालने में समर्थ हो सकता है। जो अपने चित्रों की बड़ी प्रदर्शनी कर सकता है, जो उन्हें सुन्दर से सुन्दर ढंग से छाप सकता है।''आजकल उसके मन में राधाकृष्ण और भंवर बाबू दोनों के प्रति तीव्र घृणा थी। लेकिन मित्रों व परिचितों की फब्तियों से बचने के लिए वह उनसे दूर-दूर रहा करता था।

वह अपने मन की वासना को एकांत में अभिव्यक्त भी करता था लेकिन उससे उसकी अशांति और बढ़ती थी। वह अपने मन में एक स्वच्छ और निर्विकार नक्शा बनाने का प्रयत्न करता था किंतु विपरीत इसके, उसके मन में सन्देहजनक और व्यर्थ बातें ही उत्पन्न होती थीं। इन्दु को विस्मृत करने और अपनी हीन भावना को भुलाने के यत्न में वह उसको और भी गहरे रूप में अपने मानस पर चित्रित कर रहा था।

इस अशांति में वह पार्कों के निर्जन कोने में बैठा रहता था जहां उसे प्रत्येक स्त्री की हंसी और आकृति इन्दु जैसी लगती थी और वह अज्ञात प्रेरणा से संचालित-सा अपनी दृष्टि को दूसरी ओर घुमा लेता था। थोड़ी

देर बाद जब वह देखता तब उसे विदित होता कि वह तो कोई औरत है, तो उसे बड़ी निराशा होती थी।

वह आधी-आधी रात को घर आकर ठंडा खाना खाकर सो जाता था।

कल से अनाम अधिक उद्विग्न था। अन्नो ने बताया था कि इन्दु का भंवर बाबू से झगड़ा हो गया है। दयाल बाबू ने उसे बताया था कि भंवर बाबू को उसका राधाकृष्ण व अन्य उच्च वर्ग के युवकों के साथ सम्बन्ध रखना पसंद नहीं है।

भंवर बाबू इस द्वेष के कारण एक अन्य लेखिका को बाज़ार में ला रहे हैं। वह एक पंजाबिन खत्री-कन्या है जिसकी शक्ल सूखी हुई वृद्धा-सी प्रतीत होती है। अनामिका ने उपेक्षा की-सी दबी जबान में यह भी बताया। वह खत्री-कन्या जिसका नाम विमला है, भंवर बाबू की दासता तक स्वीकार कर सकती है। सुना है उसका चरित्र एक पहेली है।

अनाम ने इसमें कोई दिलचस्पी नहीं ली। वह कपड़े पहनकर सीधा भंवर बाबू के पास गया। संयोग से भंवर बाबू दफ्तर न मिलकर घर पर ही मिले। विमला उसके पास बैठी हुई थी। भंवर बाबू ने उन दोनों का परिचय कराके यह बताया, 'विमला देवी का उपन्यास 'अछूता आंचल' नारी जीवन की मार्मिक कहानी है। अब मैं सबसे पहले इन्हींका उपन्यास छापूंगा।'

'और इन्दु के उपन्यास का क्या होगा?'

'क्या बताऊं? आप विश्वास नहीं करेंगे। उपन्यास के पिछले अध्याय इतनी जल्दी में लिखे गए हैं कि उनमें तारतम्य ही नहीं बैठता। मैंने कई बार कहा, पर इन्दु ने ध्यान नहीं दिया। मुझे भी गुस्सा आ गया। आखिर यह भी एक व्यापार है। मेरा रुपया लगता है।...और इन्दु को सेठों के छोकरों तथा संस्थाओं की गोष्ठियों से फुर्सत नहीं। जब मैंने अधिक कड़े शब्दों में कहा तब उसने मुझे कोरा उत्तर दे दिया। मतलब उसने संशोधन

करने से इन्कार कर दिया।''अब आप ही बताइए, मैं क्या करूं ?'

अनाम ने कुछ देर सोचकर कहा, 'कहें तो मैं उसे ठीक कर दूं ?'

'नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता।' उन्होंने डरते हुए कहा, 'अब वह इसे पसन्द नहीं करती।'

'मेरे एलबम का आप क्या कर रहे हैं ?'

'बस, उसे आजकल में प्रेस में दे रहा हूं।'

अनाम समझ गया कि भंवर बाबू के हाथ से इन्दु निकल गई। अपनी पराजय को विजय में बदलने के लिए उन्होंने विमला से अनुबन्ध किया है।

एक मोटी छाया कमरे के आगे से गुजरी। यह भंवर बाबू की बीवी थी। मोटी, बहुत मोटी। भंवर बाबू ने एक नजर अपनी बीवी को देखा और वे तुरन्त विमला को देखने लगे जैसे वे मन ही मन उन दोनों की तुलना कर रहे हों कि कौन अच्छी है।

अभी तक विमला चुप थी। सबको खामोश देखकर वह अनाम से बोली, 'आपकी टांग को क्या हुआ ? क्या वह जन्म से ही खराब है ?'

यह प्रश्न क्या था मानो अनाम के हृदय पर किसीने कील चुभो दी हो। वह कितना प्रयास करता है कि उसके लिए नया वातावरण बने। वह इतना प्रसिद्ध चित्रकार बने, कि लोग केवल उसकी चित्रकला की चर्चा करें परन्तु यहां के बुद्धिजीवी उसकी कला की नहीं बल्कि उसकी टांग की करेंगे। उसे गुस्सा तो आया परन्तु उसने अपने गुस्से को बाहर नहीं निकाला। बड़ी गंभीरता से बोला, 'वह जन्म से खराब है।' और हां, क्या आपने मेरे चित्र देखे हैं ?'

'हां, मुझे वे बहुत पसंद है, विशेषकर आपके नये प्रयोग।'

'अच्छा, मैं अभी चलूं भंवर बाबू !' उसने अपनी बैसाखी संभाली। तभी भंवर बाबू ने कहा कि उन्हें उससे एकांत में दो बातें करनी हैं। वे अनाम के साथ बाहर आए। एक अच्छे मित्र की भांति उसके कन्धे पर हाथ

रखकर कहने लगे, 'मैं इन्दु को ऐसा नहीं समझता था। उसमें तनिक भी इन्सानियत नहीं है। कल मैंने उसे बुलाया तो आई तक नहीं। राधाकृष्ण के चक्कर में जा रही है। यह एक लखपति का कुरूप और भोंडा छोकरा है। अभी पहली बहू मरी है। अपने को साहित्य और कला का प्रेमी बताता है। मेरा ऐसा ख्याल है कि इन्दु उससे प्रेम करने लगी है। वह अपना पति ऐसा ही लखपति चाहती है।'

'आपका ख्याल है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे ?'

'नहीं जी, वह बनिया है। गन्ने की भांति चूसकर अलग कर देगा। वस्तुतः साहित्य की सेवा उसकी एक दूकान है।'

'तो आपको इन्दु को सावधान कर देना चाहिए।'

'नहीं जी, उसने मेरा दो बार अपमान कर दिया। अब मैं उससे बोलना भी अपना अपमान समझूंगा।'

'भंवर बाबू ! इन छोटी-छोटी बातों को लेकर आपको इतना गुस्सा नहीं करना चाहिए। आप उसे धैर्य से समझाइए, वह आपका कहा कभी नहीं टालेगी।'

'आपका विचार गलत है। जब वह उस व्यक्ति को अपने हृदय से निकाल सकती है जिसने उसके लिए बड़े से बड़ा अपमान सहा, तब वह मेरा कहना क्या मानेगी ? अनाम जी, अब उसके पंख निकल आए हैं। वह हमारे बीच की अत्यन्त प्रसिद्ध महिला बन गई है। मैं समझता हूं—अभी वह लोगों के अरमानों से खेलेगी और बाद में लोग उसके अरमानों से खेलेंगे।'

'तब वह जीवन के सत्य और आधुनिक समाज के सच्चे रूप को जान जाएगी।'

अनाम नीचे चला आया।

उसका मन बहुत उदास था अतः वह मनोज के यहां चला गया। मनोज

नई कविता लिखने के मूड में था। अनाम को देखते ही कहा, 'कहां से टपक पड़े? मैंने सुना था कि आपने वैराग्य ले लिया है। गलता के शांत और मौन पहाड़ों में बैठकर आप पेड़-पौधों को अपने हृदय के दुखड़े सुनाया करते हैं।'

'तुम सुखी इन्सान हो न, इसलिए तुम मेरा मजाक भी उड़ा सकते हो।'

'अरे! तुम तो बुरा मान गए!'

'तुम मेरी परेशानी को नहीं समझते हो न? 'तैमूर की प्रेमिका' लिखकर तुम्हें क्या मिला? इन्दु ने बहुत बुरा महसूस किया। मुझे अत्यधिक पीड़ा हुई। तुम जानते हो कि मैं इस टांग को भूल जाना चाहता हूं। लेकिन तुम उसीपर मेरा ध्यान आकर्षित करा-कराकर मुझे तकलीफ दे रहे हो।'

'वह कहानी मेरी नहीं, नवरंग की लिखी हुई है। मेरे प्रति तुम्हें जो सन्देह है, अपने मन से उसे निकाल देना चाहिए।'

मनोज को सचमुच अनाम पर दया आ गई। वास्तव में इन दिनों वह काफी बदल गया था। उसका मुख श्री-हीन हो गया था।

अनाम धीरे से बोला, 'तुम जानते हो कि मैं इन्दु को कितना प्यार करता हूं? उसके बिना मुझे सूना-सूना लगता है। कभी-कभी मैं यहां तक विचार लेता हूं कि मुझे अपने जीवन का लक्ष्य श्रेष्ठ कला-सर्जन नहीं अपितु इन्दु की प्राप्ति बना लेनी चाहिए।'

मनोज ने तुरन्त कहा, 'तुम भावुक हो न, इसलिए तुम यथार्थ को नहीं पहचानते। इन्दु और तुममें काफी अन्तर है। क्या मन और क्या तन; क्या विचार और क्या लक्ष्य; सभी कुछ भिन्न और अलग।'

उसकी बात पर अविश्वास करता हुआ अनाम बोला, 'नहीं, वह मुझे सच्चे हृदय से प्यार करती है। केवल मैं लंगड़ा हूं, इसलिए मुझसे दूर-दूर रह रही है। सभी जानते हैं कि एक स्वस्थ लड़की किसी लंगड़े को अपना जीवन-साथी नहीं बनाएगी।' और उसने एक गहरी सांस ली।

'मैं तुमसे सहमत नहीं हूं।' मनोज ने कहा, 'वह तुम्हें बिलकुल नहीं चाहती, उसका तुम्हारे साथ एक करुणाजनित आन्तरिक सम्बन्ध है, जो मेरे ख्याल से सदा अक्षुण्ण रहेगा। रही पति के रूप में वरण करने की बात, वह उसके लिए कतई तैयार नहीं है। इसका कारण स्पष्ट है कि भंवर बाबू द्वारा अपमानित होने के बाद राधाकृष्ण से सम्बन्धों में वृद्धि करना। एक केवल सांप था और दूसरा अजगर।...'

'भंवर बाबू ने उसका अपमान किया था?'

'हां, यह कुछ दिन पहले की बात है। भंवर बाबू और इन्दु रात को प्रेम प्रकाश से चित्र देखकर लौट रहे थे। भंवर बाबू स्वयं मोटर चला रहे थे। रास्ते में अंधेरा था। भंवर बाबू ने इन्दु के गले में हाथ डालकर उसके कपोल का चुम्बन ले लिया। इन्दु बिगड़ गई। भंवर बाबू बड़ी शांति से बोलने लगे, 'इसमें नाराज होने की क्या बात है? मैं तुम्हें चाहता हूं और तुम मुझे।'

'इन्दु उसे क्रोध भरी दृष्टि से देखकर मौन हो गई।

'भंवर बाबू ने फिर कहा, 'मैं तुम्हें अपनी पत्नी की तरह रखूंगा। तुम्हें अपनी जायदाद का हकदार बनाऊंगा।'

'इन्दु ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'मुझे अपनी पत्नी बिलकुल पसंद नहीं है। वह मोटी भैंस की तरह, भोंडी और बदसूरत है।'

'गाड़ी रोकिए।' इन्दु ने चिल्लाकर कहा।

'क्यों?'

'मैं कहती हूं कि गाड़ी रोकिए।'

'भंवर बाबू ने गाड़ी रोकी और इन्दु नीचे उतर गई। इसके बाद भंवर बाबू ने उसे रोकने की अत्यन्त चेष्टा की लेकिन इन्दु नहीं रुकी। उसने भंवर बाबू से बात करना भी ठीक नहीं समझा।

' इस घटना के बाद इन्दु का राधाकृष्ण की ओर आकर्षित होना स्थिति को साफ करता है कि उसे तुमसे प्यार नहीं है।''लंगड़ा होना बहुत बड़ा अभिशाप नहीं हो सकता। इन्दु के मन में एक समृद्ध पति की कल्पना है और तुम तनिक भी समृद्ध नहीं।' '

'लेकिन वह मुझे प्यार ज़रूर करती है।'

'मैं ऐसा नहीं समझता, वह तुम्हारा आदर कर सकती है, तुम्हारे प्रति अपनापन जाहिर कर सकती है लेकिन वह तुम्हें प्यार नहीं कर सकती।'

अनाम ने मनोज के कथन को सत्य नहीं माना। इन्दु इतनी फारवर्ड और अति आधुनिक नहीं हो सकती। यह सब आन्तरिक डाह है।''जलन है।

उसे मौन देखकर मनोज बोला, 'तुम्हारे घर से मां की चिट्ठी आई थी। वह बड़े कष्ट में है। सरोज के बारे में उसने कुछ गम्भीर बातें लिखी हैं। उसने लिखा है कि आजकल वह कालेज के एक विजातीय लड़के के साथ छुप-छुपकर मुलाकातें करती है। कहीं ऐसा न हो कि खानदान पर कलंक लग जाए। उसने मुझसे प्रार्थना भी की है कि वह अनाम को समझाएं तथा उसे कहें कि एक मां अपने बच्चे को कभी भी मरा नहीं समझ सकती, चाहे बच्चा उसे लाख बार लिख दें।''मैंने मां को सौ रुपये भेज दिए हैं। आशा करूंगा कि तुम भी कुछ रुपये मां को भेज दोगे।'

'मैं उनके लिए कुछ नहीं कर सकता।''मुझे वह मरा हुआ ही समझे।'

'यह सम्भव नहीं है।'

'फिर तड़पते रहे, मरते रहे।' वह गुस्से में बोला जैसे वह अपने आपसे भाग रहा हो। वह जल्दी से घर से बाहर निकला और एक असफल प्रेमी की भांति निर्जन स्थानों और ऐसे रेस्त्रांओं में घूमता रहा, जहां उसे अपने परिचित के मिलने की सम्भावना नहीं थी। वह उन स्थानों में इन्दु के बारे में अनेक दृष्टिकोण से विचारता रहा और उसकी धारणा बन गई थी कि

अगर वह लंगड़ा नहीं होता तो इन्दु उसकी उपेक्षा नहीं करती। हालांकि उसकी अन्तः प्रवृतियां बार-बार इसीपर जोर दे रही थी कि इन्दु और उसके बीच के अंतर का कारण उसकी टूटी टांग नहीं, पैसा है; किन्तु वह अपने आपको टांग का वास्ता देकर ही सन्तोष कर रहा था।

रात को जब वह घर पहुंचा तब अनामिका अपने घर जा चुकी थी। इस एकान्त में कटु स्मृतियां उसे और सताने लगीं। घर आकर वह बिना भोजन किए ही सो गया।

२२

विमला का उपन्यास निकल गया। उसने घर आकर अनाम को एक प्रति भेंट की, साथ ही अपनी सम्मति लिख देने का अनुरोध किया। विमला ने इस बीच प्रकाशित अनाम के एक लेख की बड़ी तारीफ की जिसमें एक लड़की के अनैतिक सम्बन्धों पर बड़ी चतुराई से प्रकाश डाला गया था। वह नायिका अपने मुंह बोले भाई से प्रेम करती थी, उसका उसके साथ अनैतिक सम्बन्ध था किन्तु विवाह के बाद वर्षों तक यह सम्बन्ध इस 'भाई' शब्द के पीछे चलता रहा और लेखक ने बड़े रसात्मक ढंग से इन दोनों चरित्रों का चित्रण किया था।''इस लेख के साथ अनाम के तीन-चार चित्र भी थे जो उसकी शैली के श्रेष्ठ नमूने थे। विमला को भंवर बाबू ने यह भी बताया था कि इसकी नायिका अनाम के एक मित्र की बहिन है जिसके यहां अनाम प्रायः आया-जाया करता था। वह मित्र मुझे मिला था और उसने दुःख प्रकट करते हुए मुझसे कहा था कि यह अनुमान सर्वथा निराधार है, गलत है। तो भी वर्णन के संकेतों से उसकी बहिन का ही अनुमान लगाया जाएगा।''इसका परिणाम उसके दाम्पत्य जीवन के लिए भयंकर भी हो सकता है। अनाम का यह स्वभाव था। इसे वह कदापि नहीं छोड़ सकता। किन्तु विमला ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। अच्छी सम्मति की अपेक्षा में यह आवश्यक भी था।

जब विमला आश्वासन लेकर चली गई तब वह विमला का उपन्यास लेकर इन्दु के घर चला।

इन्दु घर में नहीं थी। उसकी मां ने बड़ी रुखाई से अनाम से बातचीत की। उसे इन्दु के बारे में कुछ भी नहीं बताया। हरएक प्रश्न का उत्तर उसने गोलमोल ढंग से दिया। अनाम को यह बहुत बुरा लगा। वह उसी समय वहां से लौट आया।

अनामिका ने उसे पोस्टकार्ड देते हुए कहा, 'अनाम बाबू! आप घर क्यों नहीं चले जाते?'

वह गुस्से में बिफर पड़ा। उसने कार्ड फाड़कर उत्तेजित स्वर में कांपते हुए कहा, 'भांड़ में जाए ये घर वाले और सुनो अनामिका, यदि तुम्हें काम करना है तो एक नौकरानी की तरह करो। मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।'

वह पलंग पर पड़कर एक मासिक पत्र के पृष्ठ उलटने लगा। अनामिका खाना लेकर आ गई। वह चुपचाप खाना खाने लगा। अनामिका ने शंकित स्वर में पूछा, 'आप बुरा न मानें तो आपको एक बात कहूं।'

'नहीं।' उसने हठात् उत्तर देकर अनामिका की आंखों की ओर देखा। उसमें कौतुकपूर्ण भाव दीखे। उसकी भी जिज्ञासा जगी। दीर्घ स्वर में बोला, 'क्या कहना चाहती हो।'

'आज इन्दु दयाल बाबू के पास आई थी।'

'क्यों?'

बात बिलकुल नई थी।

'कुछ कर्ज़ लेने।'

'उसे कर्ज़ की क्यों ज़रूरत पड़ गई?'

'उसका ऐसा विश्वास है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे। वह इस प्रयास में है कि ये बड़े लोग उसे कम स्तर का न समझें इसलिए वह

अपना जीवन-स्तर ऊंचा करने के चक्कर में है। दयाल बाबू ने सात सौ देकर एक हजार का हैंडनोट लिखाया है। उसके जाने के बाद वे भारी स्वर में बोले, 'नन्हा पक्षी चांद को छूना चाहता है और वे हीः हीः करके हंसने लगे।''

अनाम गम्भीर हो गया।

आज वह जात-बूझकर नीरोज गया। वहां उसकी मित्र-मंडली ने उसकी बहुत बुरी गत बनाई। उन्होंने यह भी बताया कि इन्दु के सम्पादकत्व में एक मासिक पत्र की योजना बन गई है। नवरंग ने यह भी बताया कि उसके पास कविता के लिए पत्र भी आ चुका है।

'इसे कहते हैं लकी लेडी।' विजय बोला, 'प्रसिद्धि और लक्ष्मी दौड़-दौड़कर उसके पास आ रही है।'

'रात को नींद तो आती है?'

'तैमूर को अधिक मत सताओ। एक तो बेचारे के हाथ से प्रेमिका निकल रही है और आपको मजाक सूझ रहा है।'

'यदि यह लंगड़ा नहीं होता तो इन्दु इसे नहीं छोड़ती।'

'मैं नहीं मानता।' नवरंग ने बीच में ही कहा, 'यह गरीब न होता तो इन्दु निश्चय ही इसकी थी।'

अनाम अधिक नहीं सुन सका। वह अपनी बैसाखी दबाकर बाहर निकल गया। पीछे से उसने केवल एक हंसी सुनी।

२३

एक सप्ताह बाद वह सवेरे-सवेरे बैसाखी लेकर आमेर जानेवाली सड़क पर घूम रहा था। वह सप्ताह भर से घर से बाहर नहीं निकला था। इस बीच भंवर बाबू ने उसे बुलाया था लेकिन उसने उस पतित आदमी से बात करना भी ठीक नहीं समझा। वह घर पर बैठा रहा, अपने आपको संसार से पृथक करके। इस सड़क पर हवाखोरों की चहल-पहल में वह

अपने अस्तित्व को पृथक समझकर विचारों में लीन होकर बढ़ रहा था। बैसाखी की 'खट्-खट्' यात्रियों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित कर रही थी।

वह सोच रहा था, यह प्यार बड़ा निर्दयी है और यह युग बड़ा कठोर है। अब प्राणी हृदय की सजीवता से नहीं, यों ही निर्जीवता से प्रभावित होता है, अब नारी-हृदय निश्वासों के ताप से भी नहीं पिघलता। उसे सौन्दर्य और प्रेम के उस अलौकिक आनन्द के रहस्य का ज्ञान ही नहीं रहा। वह पूंजी और यन्त्र के मध्य एक अज्ञेय वस्तु-सा डोल रहा है और पुरुष उससे छला जा रहा है।··· ···मैं छला गया। मैं अब भी किसी दुर्दमनीय प्रेरणा के वशीभूत होकर इन्दु के इर्दगिर्द घूमने की चेष्टाएं करता रहता हूं। वह मुझे निरन्तर मर्मान्तिक वेदनाएं दे रही है और मैं उसके पास से अपनी आत्मा की शान्ति को खोज रहा हूं। मैंने इसके लिए किसीकी चिन्ता नहीं की। घर-बाहर सभी को भुला बैठा। सभी को निराश किया और दुःख दिए और अन्त में मुझे उसका प्रगाढ़ स्पर्श भी नहीं मिला। ओह! मैं कितना पागल हूं।···और उसने इस वाक्य को मुंह ऊंचा करके हवा को सौंप दिया, इससे उसके मन को ढाढ़स मिला।

चलते-चलते वह अत्यन्त थक गया। उसके पांव उसे जवाब देने लगे। पीछे से उसकी सारी कमर भीग गई थी।

अप्रत्याशित उसे नवरंग मिल गया।

व्यंग से उसे घूरकर बोला, 'अच्छा जनाब, आप अपनी लैला को ढूंढ़ने आए हैं। वह यहां से आधा कोस दूर राधाकृष्ण बाबू के पास बैठी हुई गुलछर्रे उड़ा रही है।'

वह इतना कहकर आगे बढ़ गया।

अनाम क्षण भर के लिए रुक गया। उसे उधर जाना अच्छा नहीं लगा। राधाकृष्ण बाबू उसपर व्यंग्य छोड़ेंगे और इन्दु न जाने कैसा बर्ताव करेगी। वह वहीं पर बैठकर विचार-विमर्श करने लगा।

अचानक इन्दु के समक्ष जाने की भावना दुर्दमनीय रूप से उसमें जाग्रत हुई और वह आवेश में जल्दी-जल्दी कदम उठाता हुआ आगे बढ़ चला। वह बार-बार यही सोच रहा था कि वह उस स्थिति में किसी भी अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। वह ईंट का जवाब पत्थर से देगी पर वह वहां जाएगा अवश्य।

आखिर वह उसी जगह पहुंचा जहां राधाकृष्ण और इन्दु थे। राधाकृष्ण लेटा हुआ था और इन्दु रोमांटिक ढंग में किसी नायिका की तरह मुस्करा रही थी।

अनाम ने जान-बूझकर उधर नहीं देखा। वह जल्दी से कदम उठाता हुआ बढ़ा। बैसाखी की आवाज़ इन्दु के कानों में पड़ी। उसने घूमकर देखा और पुकारा, 'अनाम,···अनाम!'

अनाम को लगा कि उसकी बैसाखी और पांव ज़मीन से चिपक गए हैं। वह चाहकर भी आगे नहीं बढ़ सका।

राधाकृष्ण ने पुकारा, 'आइए अनाम जी, आइए, ऐसी भी क्या नाराज़गी है?'

अनाम बिलकुल थक गया। उसके बैसाखी वाले हाथ और एक टांग में अत्यन्त पीड़ा हो रही थी। उसने बैसाखी को उठाना चाहा पर वह नहीं उठी। उसे प्रतीत हुआ कि बस अब वह गिर जाएगा और उसे अपने प्रतिद्वन्द्वी के सामने लज्जित होना पड़ेगा। फिर भी वह साहस करके उधर मुड़ा। चला। शरीर की नस-नस फट रही थी। दूसरी टांग भी टूटकर गिर जाना चाहती थी। बैसाखी वाले हाथ की हथेली की चमड़ी छिल गई थी। सारी पीड़ाएं उसकी आंखों से झांक रही थीं।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसके समीप पहुंचते-पहुंचते अनाम गिर कर पड़ गया। क्षण भर के लिए उसे होश नहीं आया। इन्दु ने मोटर में पड़ी 'झारी' से पानी निकालकर उसके मुंह पर छिड़का। अनाम को होश

आ गया। अपनी अस्पष्ट चेतना में उसने राधाकृष्ण को यह कहते हुए सुना, 'तुमने ऐसे रोगी और दुर्बल से प्रेम करके अच्छा नहीं किया। इसके साथ जीवन गुजरना भी बहुत कठिन होता।'

इन्दु ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

अनाम ने बैठने का प्रयास किया। वह बैठ भी गया। राधाकृष्ण ने सहानुभूति भरे स्वर में कहा, 'आपको पैदल नहीं आना-जाना चाहिए, जान-बूझकर अपनी आत्मा को कष्ट देना सर्वथा अनुचित है। कहीं टांग और खराब हो गई तो ?'

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने जलती हुई दृष्टि से इन्दु को देखा। उसमें अनाम के अभिशप्त जीवन की करुणा सुलग रही थी। इन्दु उस दृष्टि को सह नहीं सकी। वह अपनी दृष्टि कहीं और भटकाने लगी। स्थिति कुछ विचित्र हो रही थी अतः कोई नहीं बोला। गहरा मौन छाया रहा।

'अच्छा चलिए, आप भी आइए अनाम जी, आपको रास्ते में छोड़ता चलूं।'

अनाम ने अस्वीकार कर दिया।

जब इन्दु और राधाकृष्ण चले गए तब अनाम की आंखों में आंसू आ गए। वह कई घंटे वहीं पर पड़ा रहा, निर्जीव और निश्चेष्ट।

दोपहर को घर आया। मां का तार आया था। उसने तुरन्त बुलाया था। वह बीमार थी।

वरदा की मां मुंह फाड़-फाड़कर रो रही थी। अनामिका ने बताया कि वरदा के पति ने वरदा को जोर से पीटा है। उसकी चमड़ी में बेंत के निशान चमक रहे हैं। किंतु वरदा इसे स्वीकार नहीं कर रही है। उसका पति उसे यहां हमेशा के लिए छोड़ गया है पर वरदा अभी पुनः जाने का हठ कर रही है। वह हठ कर रही है कि जहां उसका पति रहेगा, वह वहीं

रहेगी चाहे दुःख में, चाहे सुख में।

अनाम ने वरदा को बुलाया। उसकी दाई आंख का निचला भाग सूज गया था। उसके हाथों पर जमे नीले दाग साफ दीख रहे थे। उसका मुंह उदास और आंखें नम थीं।

'क्या बात है वरदा ? मां रो क्यों रही है ?'

'कुछ नहीं अनाम बाबू !' वह कम्पित-दुखित स्वर में बोली, 'मां मां है न, इसलिए उसका रोना कारणहीन नहीं होता। वह पति के प्रसाद को दंड समझती है। मैंने उससे कह दिया, अपराध मेरा था। मैंने उसके दो चाय के प्याले तोड़ दिए, फिर वह मुझे क्यों नहीं पीटेगा !···मां कहती है, उस दुष्ट के पास न जा, लेकिन प्रेम में क्या कभी ऐसा हुआ है ?···मैं उसके बिना नहीं रह सकती। एक पल भी नहीं रह सकती।' वरदा की आंखों से गंगा-यमुना बह उठीं।

उसके जाने के बाद अनाम के मस्तिष्क में सरोज का चेहरा नाचने लगा। उसे लगा कि कहीं सरोज भी इस पथ का अनुसरण न कर लें।··· उसने तार को उठाया। तार में सरोज की आकृति देखी। उसे मां की बीमारी का विश्वास नहीं हुआ, उसे लगा कि हो न हो, सरोज किसी लड़के से प्यार कर बैठी है और वह विद्रोहिणी बन गई है।

अनाम की आंखों के समक्ष वरदा का चेहरा, उसके आंसू और उसके शरीर पर चमकते दाग नाच उठे।

वह अत्यन्त संतप्त हो उठा, 'कहीं सरोज के साथ ऐसा हुआ तो ?'

अप्रत्याशित इन्दु उसके मस्तिष्क में घूम गई। अब वह उसके व्यवहार को सह नहीं सकेगा। वह उन व्यंग्य बाणों को भी नहीं सह सकेगा जो उसे अब सुनने हैं।

वह बड़ा बदनसीब है। दुर्भाग्य उसके जीवन का साथी है।—एक विरक्ति भरी मुस्कान उसके अधरों पर दौड़ गई। वह प्यार के लिए तड़प

रहा है लेकिन उसे प्यार नहीं मिला। वह सदा प्यासा रहा है और रहेगा। क्योंकि युग के मानदंड बदल गए हैं, अब आदमी नहीं, आदमी की पूंजी देखी जाती है। उसके गुण नहीं, उसकी दौलत देखी जाती है।

वह अवश हो उठा। उसके समक्ष भूखी-प्यासी सरोज की आकृति नाची। उसे बीमार बाप की खांसी सुनाई पड़ी। मां का दुःखों से भरा जर्जर शरीर दिखा। वह कांप उठा, उसे लगा, इन दुःखों का जिम्मेवार वह है, केवल वह!

काफी देर तक वह संघर्ष में पड़ा रहा। तब वह दयाल के पास गया। उससे कुछ रुपये उधार लिए। दयाल ने हंसकर कहा, 'अब तुम पक्के कलाकार बने हो। देखो, मेरे रुपये वायदे के अनुसार लौटा देना अन्यथा मैं भूत की तरह तुम्हारे पास आ पहुंचूंगा।'

अनाम निरुत्तर रहा।

'तुम्हारी इन्दु शीघ्र ही महारानी बनेगी, राधाकृष्ण महाराज की हृदयसम्राज्ञी!' वह एक बेडौल हंसी हंसा।

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'बेचारी अन्नो का हिसाब कर देना, उसे मेरा ब्याज देना है। भूलना मत।' दयाल फिर एक निरर्थक हंसी हंसा।

हैंडनोट पर दस्तखत करके अनाम घर आया और अनामिका को कहा, वह उसका सामान बांध दे, वह घर जा रहा है। जितना फर्नीचर है, उसे वह स्वयं ले जाए और पंखा बेचकर वह अपना रुपया अदा कर ले।

'अपनी मां को इस अभागी का प्रणाम कहना। मैंने कभी-कभी आपको उपदेश दिए थे, इससे आपको हार्दिक कष्ट पहुंचा होगा।' अनामिका ने करुण स्वर में कहा। उसकी आंखें भर आईं।

'नहीं अन्नो, मनुष्य को अपनी ज़िम्मेवारियों से नहीं भागना चाहिए। यह पलायन वस्तुतः एक छल है। मैंने जिसे चाहा, वह मुझे नहीं मिला।'

'और इन्दु ?'

'वह भी मुझे नहीं मिली, मैं उसके योग्य नहीं हूं।'''लंगड़ा हूं। ओह ! इस लंगड़ेपन को भुलाने के लिए मैंने सबको भुला दिया लेकिन यह सत्य निर्मम रूप से प्रकट हुआ।'''अन्नो ! तुमने मुझपर बड़े अहसान किए, कभी बदला चुकाऊंगा।'

अन्नो की आंखें भीग गईं।

अनाम चलने लगा। वरदा आई। वरदा की जगह उसे सरोज का मुख दिखा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह जल्दी-जल्दी नीचे उतर गया। वरदा उसकी बैसाखी की 'खट्-खट्' सुनती रही।

उसके एक घंटा बाद इन्दु अनाम के घर आई। वह अत्यन्त उद्विग्न और चिन्ताग्रस्त थी। उसने आते ही वरदा से पूछा, 'अनाम बाबू कहां है ?'

'वे चले गए।' वरदा ने छोटा-सा उत्तर दिया।

'कहां ?'

'अपने घर। उनकी मां बीमार है।'

'कब लौटेंगे ?'

'शायद कभी नहीं। वे बड़े दुखी थे।'

इन्दु धीरे-धीरे घर से बाहर निकली।

आज राधाकृष्ण ने उसका सर्वस्व लूट स्पष्ट कह दिया था कि उसकी मां एक मास्टरनी को अपने घर की बहू नहीं बना सकती।'''उसे भी उसके चरित्र पर पूर्ण विश्वास नहीं है। उसके पहले अनाम और भंवर बाबू '''! उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि इन्दु को विरोध भी नहीं करना चाहिए। वह उसे सब कुछ देगा। उसे सम्पादिका बनाएगा, उसके उपन्यास छापेगा, पैसा देगा।

तब वह इतनी विकृति मौन हंसी हंसा कि इन्दु की आंखों में आंसू आ गए। उसे लगा कि यह सोसायटी आदमी को आदमी नहीं समझती।

उसने अनाम को छोड़कर राधाकृष्ण को चाहा, पर राधाकृष्ण उसको क्यों चाहेगा ? उसे उससे सुन्दर युवती मिल सकती है।···ओह ! महान् बनने की प्रवंचनामयी होड़ ! घर के बाहर वह लम्बी नागिन-सी बलखाती हुई सड़क पर इस तरह बैठ गई जैसे कोई टूटा हुआ इन्सान हो।

उसकी आंखों के आगे अनाम की मूर्ति थी एक बैसाखी के सहारे चलने वाला युवक ! प्यासा और दुखी।

खट्-खट् खट् की वही चिर परिचित ध्वनि ! !

उसने भाववेश में चाहा कि वह दौड़कर उस ध्वनि को अपने अन्तस् की धड़कनों में आत्मसात करले। इस पवित्र विचार के साथ उसके चरणों में नया जोश भर गया और उसका हृदय नये आलोक से जगमगा उठा। उसे लगा उसके पथ की वंशी बज उठी है और प्रत्येक चरण पर नया जीवन निर्दोष फूल की तरह महक रहा है।